# **इअप्रश्निम्या**

## येतुनिवसम्



अह्यदायाया

স্তান। স্ক্রনান্মর ক্রেমানী ব্রাক্ষান। বর্ষাক্রানা ক্রমান্তানান্ম কর কর বা

श्चेंदेर्नेना
न्दःस्र्धेवन्त्र्याम्बुम्
न्द्रिं क्रिंच द्र्यं व स्वाय स्वाद मी या च ये द्र्या व विष्य क्रिंच स्वाय स्वाद मी या च ये विष्य स्वाद मी या च ये विष्य स्वाद में विष्य स्वाद मी या च ये विष्य स्वाद में विषय स्वाद में विष्य स्वाद में विषय स्वाद
याशुस्य (दिन्नाकी दर्वे दर्भ सः वेदी
धवःवयाःमीः र्नेव।
यहिरामा प्राप्त प्रमामी देव रेपामहिरा
५८.स्. र्वियासाक्षरास्त्रम्भ्यात्र रेता. या.स.च्यीयात्र रा
रहारेशाद्दावाब्दारेशा
८८.सू. वियोगतवीट.मु.सू.यंग.सूय.स.त्याचट.यंग.मूय.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.संप्र.सं
শৃঙ্যুমা5
<b>५८:२७</b> हिन्साश्चरपदे र्ने व नभन् पदे क्षेत्र व का क्षत्र स्वते क्षेत्र यह ते सक्षत्र मिले र्ने का मानु र ना ने न्य
শৃষ্ট্ৰশ্6
न्द्रस्रिं क्रिं स्वर्धि वे स्वर्धि क्रिं ने स्वर्धि क्रिं स्वर्वे स्वर्धि क्रिं स्वर्धि क्रिं स्वर्धि क्रिं स्वर्धि क्रिं स्वर्धि क्रिं स्वर्

५८.सू. विष्युं के दे. के द्वारा श्री श्री	6
८८.सू. १८.५ म्ब.च. १८.५ म्ब.च.	6
५८.सू.च.रूबाबराया रेखा	6
माहेशमा रिवासा विवास श्रम् वर रेवी	
माशुक्ष'म' रिवनकेशन श्वराय रेती	9
महिरामा रिसळ्य मिले रेवी	9
माशुक्षामा र् अळव माने त्या अळव हे दारे शा हो दा रे वि	10
माहेशमा रिसळ्व हेर क्षेत्रका सम् रेही	14
महिरामा रिश्वन संवदः सळ्द हिर्ने न्दर ध्वर संदर वश्वर सं	17
५८:११ हिन्सदे र्ने व प्रति व व व व व व व	17
महिरामा र्	21
५८.सू. विक्राया हुँ शाया दे ते शाया है है।	21
<u> </u>	
महिरामा हिला हिन्या हिना महिरामा हिरामा हिरा	

५८.मू. १ चेश शिक्ष श्राच्यक्ष श्राच्यां स्त्रीया गीया भीया भीया भीया भीया भीया भीया भीया भ	22
न्नःसं र्वायाः रेयः यदियाः स्वायाः स्वायाः रेयः यदिया	.22
५८.स्. १ ह्या.स.लुब.स.२याया.स. रेड्री	22
महिरामा दिश्व स्वास विवास या रेती	24
महिराम र् भूव वेत्त्ववाय रेषा महिरा	25
न्दःसः र् श्रुवः श्रेनः श्रूवः तुः वश्रुवः यः रेषः वादिशः	25
५८.स्. र् बर्ट्र-वश्चरायः रेवी	25
यहिशास क्रियाचन्त्र रेयायाश्चर्या	26
५८.स्. र् श्रुवः द्येर.क्.स्वायः यात्रावायः रेषः याद्वेशा	26
५८.स्. १ रव्येचकाक्री.स्वाकाक्षाक्षाक्षात्रात्र ने त्याचिक्षा	27
५८.मू. रिव्चेयमाविर.सर.वर.ब्रियोमाक्त्रामायाः रेप्ट्री	27
यद्भिर्भात्र रिच्चैत्रश्रास्त्रां रेश्या रेश्या रेश्या रेश्या रेश्या रेश्या रिक्षा	
५८.स्. र्याचेश्वर प्रेची	28
महिरामा दिश्व क्र कर विषय न रेवी	28

#### न्गर क्या

न्यूरुप्ता दिन्न सम्बद्ध द्रश्र ग्री व्यूक्ष सम्बद्ध द्रश्र ग्री विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष	29
ন্ত্রিমান্ত্রিমান্ত্র্লামান্ত্র্ল্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লামান্ত্র্লা	31
५८.सू. १ र्वेचकाकी.सू.सब्हराय.इसाकाकी.सू.स.स.स्याका.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.	31
माहेशमा र् इंडर वया ने ने	32
महिरामा दिशस्यामा उद्गायान्य प्यानियामा सः विद्या	32
माशुक्ष'मं रिकासुन परि देव रेवा	33
माद्रेश्वरा र् गुद्रक्षे क्षेत्रक्ष स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था	37
न्दःस्रें र् <sub>ह्याया कुराक्षे रुद्याय</sub> नेया व्रयान नर्गेन्या की	37
माहेशमा र्रम्य सहस्य सङ्ग्य रेडी	39
महिरान् विस्रमान्त्र महित्त्व महिरान् विस्रमान्य महित्त्व स्थान स्	
অ'বাইশা	
८८.स.स्.स.स.	42
५८.सू. विव.मधिव.कू.मध्ये.की. प्रायम् विव.मी.	44
महिराम क्रियानदेख्य रेही	

म्बुस्य र् गुव्यहोव द्या मुन्य रेवे।	45
गहिरामा द्वापायायवे प्रमान्यवे स्वर्थः क्षेत्र स्वरं क्षेत	
न्दःसः वियःसरःक्रीःक्ष्यःयवे त्यश्च न्यान्यः नेताः नार्यस्या	47
भ्रे.य.र्ब.ब्री	
५८.मू. र यश्यासंस्थ्य क्ष्यं यश्चर स्थाय बिरायः र राज्य स्थाय हिस्य	47
५८.सू. र्यायासीय.क्ष्यायासीय.क्ष्यायासीय.क्ष्यायासीय.क्ष्याया.	48
यहिराम दिसम्बन्धरम रेया परिषा	48
त्रःसॅं र्र् <sub>र्डिन्य</sub> रेवी	48
यहिशासा दिन्यामान नेयायहिशा	49
५८.५. १ में चरे अस्त्र श्री संस्थान स्थान	49
न्दःसः र् बर्ने र न क्ष्र्वः रेने ।	
गहिराम क्रिया प्रमान विष्या विष्या	50
न्दःस्रा क्रिं च क्रिंडि लूट सद्ध क्रिंडि स्वा क्रिया चित्र स्व क्रिया चित्र स्वा क्रिया चित्र स्वा चित्र स्वा चित्र स्व च चित्र स्व चित्र स्व चित्र स्व चित्र स्व चित्र	51
न्द्रस्रिं क्ष्याश्चर्यान्यः वेद्या	51

#### न्गर क्या

धेर् र्ह्जे हिंग य	54
महिश्राम दिःषाम् दिःषाञ्च द्वास्त्र ने स्थामहिश	56
<u> </u>	56
महिश्रासः देवाश्रासः द्रात्यायः वःश्रुदः वःदे।	56
महिराम भिर्मे या का ही स्त्रीय हो से स्वर्ध ही से स्वर्ध ही स्वर्ध हो से	58
८८.सूर्यः प्राचित्रं व्याप्ति ।	58
इट.स्. र् क्याश्रास्यात् वि	58
मिहेश्यः र् र्वेस्म्युवस् रेयः महिश्	59
५८.स्. १ रन्ने अन्य ने र्ने कि विष्य के राम्य के	59
मिहेश्या क्रिंद्र अप्यें द्राय देवा वा चा ने त्या मिहेश	61
५८.सू. विट.मी.श्रुच.मुंच.मुंच.मुंच.मुंच.मुंच.	61
महिराम दिवायायदे स्वायायदे स्वायाय स्वयाय स्याय स्वयाय	62
त्रःस्रा र् ह्वारुप्यःत्वावायः <b>रेदी</b>	62
मिंहेश्या हिंद्यक्ष्य वेदी	

म्रुस्पा दिवसातुः वृंगापते कुष्टिन्यमः उद्देशम् व्यवस्य रेदे	64
মান্ত্র মান্ত্র মান্ত্র মা	
न्नर्से रिश्वमः क्रेंदिः हेत् । ह्वन्यम् उत्याप्य न्यापायः नेया प्रतिया	66
५८.स. १ सम्मान्य में समान्य में सम्मान्य में सम्मान्य में समान्य समान्य में समान्य में समान्य में समान्य समान्य में समान्य समान्य समान्य समान्य समान्य सम	
त्रः से क्रिंग्ये व खेत् या निष्या के स्था व कि स्था	66
५८.स. १ क.स.	
५८.स्. १ वक्त प्रम्मू र्यः १ वि ।	67
महिराम दिवे वा नाम ने या महिरा	67
५८.स्. १ अर्थे थ.क.स.क्.स.क.स.च.त्राचात्त. र्रेस्	67
বাইশ্বান শ্রীব শ্রীশ বর্ত্ত শবর বিশ্বর বিশ্ব	69
५८.स्. १ वक्त.च.२क्. १३।	69
महिशासा दिवे व्यव द्याया या रेवी	70
माशुक्ष'मा हिन्दाचे सळव हिन्दान नित्रा रेपामहिना	
न्नःसिं रिक्रःखेवःश्चेः अळवःकेनः चेत्री	73

महिरामा दिख्यासेस्यासेन्य रेती	74
महिसारा र् रुक्षः अद्रवायाः नव्यायाः नेया सुद्या	75
८८.सू. १ रेश. अध्याक्ति होष. स्वाची. त. प्राची श्री श्री	75
न्द्रस्रिं क्रियान्त्र्त्त्र्या चेत्री	75
माहेश्यः रिवेश्यवः न्यायाः येती	
म्बार्यायाः र्वे सह्यःश्वायः नःश्वरः नः रेवे।	
महिरामा दिशस्याय उद्यायावद प्यम् विवाय यः विवाय ।	
নার্ম'ন' र् द्व'नसु'न' रेय'गार्समा	80
मिन्ने अप्या गुन ने व माव अपये हे व प्य प्रव ने व के प्य माय प्रव न व व व व व व व व व व व व व व व व व व	81
गशुस्रामा रदावी पदावी सामह्यासात्र हो से प्रवद्या सात्री	82
८८.मू. १ रचाचा य. रहे अ. ) त्य. या हे आ	82
ह्यश्र'न्वेर्प्र'चे	82
ব্যক্তিসামা চিত্রবাশ র্মান্ত্র বিষ্ণা ক্রিকার বিষ্ণা বিষ্ণ	84
५८.५१. १ क्यांशास्त्रां वांशास्त्रां वांशास्त्रां वांशास्त्रां के क्षेत्रां वांगाने के विष्	

याहेशमा रिवमायायायार्वे दासाञ्चर वा रेपायाश्वा	93
५८.सू. वि.र्ट्य.र्थश.क्रिश.क्रिश.क्ष.स्.स्याय.स्याय.स्राय. रेस्	93
यहिरामा दिशस्यामा उद्गायावदात्या विवासाया रेदी	95
ग्रुअप्रं प्रवासन्वन्द्रप्रं त्यानहेत्र संदे स्व न्त्र हो ज्ञान तुः न्त्राना सः रेया पहेरा	
५८:द्री रिनद्वेशःश्चेः अर्बेद्वानायाय्यवायाः उदाद्वानाववाद्वीशावाद्वात्वायाः विद्या	
गहिरामा दिन्या महेत्र प्रति महरू संभिर्म स्वामा में प्रामित्र मान्य प्रामित्र ।	
५८:द्रॅर्ग हिना व्याप्त के प्राप्त के प्राप	99
गहिरामार्वित्यम् र्वेत्यम् र्वेत्यम्	100
न्द्रस्ति क्षिष्ठान्द्रप्त्रम् व्यक्ष्यान्द्रम् व्यक्ष्यान्द्रम् व्यक्ष्यान्द्रम् विष्ट्रम् व्यक्ष्यान्द्रम् विष्ट्रम् विष्ट्र	100
गहिरामा दिया गुन व श्रुम च द्वार देव से द द विषय व श्रुम य देव या विषय ।	102
५८.सू. व्याचार्यात्र विषयात्र	
महिराम् र्वितास्यास्य स्थान रेषामहिरा	104
५८.सू. १ क्ष्मान्यः क्ष्मान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थानः स्था	104
माद्गेश्वासान्द्रित्र स्वासान्द्रितः स्वासान्द्रिते स्वासान्द्रितः	106
,	

यहिरामा रिक्य इत दे प्रेत्र य द्वावाय रे या विरुष्	108
महिरामा रिरेन्ट्र महत्त्रमा बुर्मा प्राप्त मिया प्राप्त किया	109
न्दःस्रा विवायान्त्र्तिन्या विद्या	109
यहिराम दिवेष्य द्वावाय ने त्यायहिरा	109
न्निम्भाक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षे	110
न्नर्रे र्विवाशस्वारायशस्त्रे न्ववायायः रेवे।	110
यहिरामा रिन्त्रवाराध्यका क्षेत्र चाराध्यका	112
५८:मू. १२२०४१२.स.५४.मी भाववीरावशाली र मूं. ५.५.मू.च.वमी.स. १५	112
বাইশ্বাস্ত্র বিশ্বর্থ বের্ডির বের্ডির বিশ্বর্ধীর বের্ডির বিশ্বর্ধীর বিশ্বর্ধীয় বিশ্বর্ধীর বিশ্বর্ধীয় বিশ্বর্ধীয	114
ग्रुसम् र्रम्यकेशमञ्चरमः रेवी	115
गहिरामा दिन्दार्थ । त्या विकास विकास के वा स्वर्म के अप्याद के के विकास के वा स्वर्म के विकास के वि	
वै	
यहिरामा रिक्के प्राप्त के के प्रमान के के में में में में में में में में में मे	ব'
অ'বাইশ্	

न्दःर्रोॱ <sub>क्र</sub> स्राध्यरः ध्रेः श्रेष्यवः यान्वः घः वि।	9
गहिरामा क्रिं श्रे अदे सुर्थ श्रे हेर ये दार्र श्राव तुर या ने त्या मार्थ मार्थ	0
55. च्र. े च्र. े च्रे	0
महिराम जिंद्र चेत् धर न नेते।	3
শৃষ্ট্যম'ম' বিশ্বান্ত্র নার্ল বিশ্বা বিশ্বা	4
ग्रुअ'रा र् भ्रे न कृष्टी सेन पदे श्रुन होन नगा पदे रेने न सुन र ने ।12	5
हेव'नहेव'न।	6
गहेशपः भ्रे नित्रस्ये अर्था अर्थन स्थित स्थान स्थित स्थान स्थान	
दमेयानाभे त्वन् पाञ्चनामा	6
५८ <sup>२</sup> र्से कें ५८ <sup>२</sup> कें विष्	6
गिहेशमायदाया रिग्रम रेसक्ट्रिंगमान्दरकृते हेंद्राया विद्रायर उदावी	
ह्रण्यास्त्रेत्रप्रत्रा	7
ব্দার্থী বিষ্ণ ক্ষান্ত্র ক্রিইন্থান্ত্র ব্যান্তর ক্রিক্সামার্থন ব্যাস্থার ব্যাস্থান্তর ক্রিক্সামার্থন ব্যাস্থান্তর ক্রিক্সামার্থন বিষ্ণান্তর ক্রিক্সামার্থন বিষ্ণান্ত বিষ্ণান্	7
५८.स्. १ हेबाबाकी किरायराह्य अपने स्थाय के बार के बार के हो है।	

#### न्गामःळग

गाँदेशमा विद्यस्ति । विद्यस्ति	128
বাইপ্রমান্ত্র ক্রাক্তর বিশ্ব ক্রাক্তর বিশ্ব বিশ্	129
५८.सू. १ अर्र् र.चक्रेब.स. ) ही	129
কুষ্মম্ম্বপ্দ্রা	130
गशुस्र म र् व न सु न से ।	131
गशुस्रामा दिःषा हिन्दा ह्या स्वराया रेया गहिला	131
५८.सू. क्रिय.सू.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स.स	131
महिराम हिरामेव देवा वायदा या वाय से प्रायम स्थाप के वाय के वाय से प्रायम से	133
र्श्वेर्न्यः स्वार्क्षिण्या	136
गिर्देशस्ति दिःवशर्श्वे स्त्यःस्त्र स्ट्वास्त्र म्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्	136
55. मूर् र प्रमें र प्रमें र प्रमें न प्रमें ने किया किया किया किया किया किया किया किया	
गहेशःस र् क्ष्यावन् रेयाग्रास्य	137
र्ट्रेस्ट्रिट्युःषाह्र्याश्चर्यते वर्षा रेत्री	137
महिराम भित्रेव सं त्य हैं वा सवे छ वर रेवी	

ग्रुस्य (दे व्हूर वह्रव्यय विद्या रेप प्राया रेस	140
५८:म् ( प्याः म्री: क्रीं व : प्यां	140
महिरामा ( धाया उदा हे या पाय वदा द्या प्रमाय वदा वया प्रमाय विष्य प्रमाय विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष	141
ग्रुस्राम् दिशः क्रियानाम्बदायशाद्यन् विम्यामा रेती	141
ग्रुसम् र्द्रन्त्र्युः नः रेदी	142
ন্র্মান্ত্রামান্ত্রা	143
ग्रुसम् दिन्तिक्षात्रकात्र्यम् तुन्तिक्षा ।	143
८८:मू र्ट्ट्र्व स्व क्ष्म रेय यि स्व स्व स्व	143
न्नःसं विन्यम्याश्याक्ष्याक्ष्यान्यनेयाक्ष्यात्रः नेया विक्षाः	143
८८:द्रा. १ अर्द्र र प्रकृतः वेदी	143
यहिराम र् क्षा सम्प्र वर्ष र पेत्री	144
यहिराम र् देनम्बर्स र् रेवी	
यहिरामा विवर्त्व स्वर्क्ष विष्य रेवी	
गहेशप्र में प्राम्याव यश्य कर्ष सम्यान प्राम्य ।	

गहिरान विवायक्षाना क्षेत्र व्याप्त क्ष्य हेन्स्य हेन्स्य के या हेन्य व्यापित विवाय हिर्मा	152
न्दःसः विदःक्ष्यः ने न्या श्राय्यया द्वी सायव्या नायवे द्वाया ने या निवि	152
८८:मू भूव प्रदे रूट विव वश्चुव य रे य पि रे य	
५८:द्रीं रिनदेव पावेवे पाव भारतिया भारता ने निर्देश पाय क्षेत्र पाय स्वाप्त प्रति ।	
गहिरामा विश्वन्य म्याम्बर्ग्य म्याम्बर्ग्य मित्र विश्वनिवाल विष्य विश्वनिवाल विष्य विश्वनिवाल विष्य विश्वनिवाल विष्य वि	153
	153
	153
यहिराम भित्राम्य रेवी	154
याश्वास र्वा वाले रेदी	156
	156
५८:स्र्रे र्विषाः ह्रेंबाः नड्ड नुवार्टेशः नड्ड र न रेते।	157
गहिरामा दिन्दरवायानानदेवासदे इसामान इन्त्वा देशान व्याप्त वि	157
	160
र्रः में क्रिया वर्ष या की वर्ष या के या या है या	161

५८.सू. विकायक्तायम्बर्धायम्बर्धायम्बर्धायस्य विष्यस्थितः विकायस्थितः विकायस्थिते विकायस्थिति विकायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस	161
५८.सू. विष्ट्र च.च.च.च्चा अ.स.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.च.	161
५८.सू. र् मैया.यर्था.स्थाया बराय. र्रेड्री	161
गहिराम दिलाईनासासेन्यम् नसून यदे मेन्याम देवा मान्य स्वा	162
५८.सू. व्रियाः अर्थतः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स	162
यिष्ठेश्यः (क्रुं से ५ ५ क्रुं से ५ ५ क्रुं न ५ क्ष्रां न ५ क्रिं	162
याश्वारा रिक्षे स्व बुद्दारावे कुं त्य श्रेष्टुं न द्वावारा रेया पदिशा	163
८८.मू. १ केट. भूचेश त्यव त्वेचा त्य भः श्रे. य. रचाचा त. रचा त्य. या हे श्रा	163
८८.सू. विकारा की अक्षर होट साम्यान ना अहर न में या यो हो या ।	163
५८.सू. र्वायायान्यूर्या रेड्री	
महिराम दिवःवन प्रमानाम रेवी	163
गहिशास क्रियास सम्पन्न नेता मुख्या	165
८८.सू. रिव्युज्यत्वीयःभ्रःभक्षेट्यायमः क्रिःव्ययःभ्रवःयः रेताः यक्षिमा	
५८.स्. १ हेवार्थ.रेब्र्.स. १३।	165

गहिराम क्रियम् वर्षे प्रति ।	166
गहिरामा क्षेत्रक्षक्षक वेति।	170
म्बंद्रायास्त्र र्या सर्वेद्रसायास्त्र ता चेत्री	170
महिरामा दिव्या प्रमाने विवास अक्षेत्र प्रमाने व्यामित के व्यामित विवास विवास अक्षेत्र विवास विवा	171
न्द्राः र् वल्राः वेद्रायाया श्रुप्ताः वेद्री	171
गहिरामा दिशासी समा की हेता हिरासर उत् सी दारा को निया नहीं नी सारा मानदा नमूदारा	
य'गहेर्या	172
न्दः दें रिकं निवाना न रेकी	172
याहेशमा र् द्वानाम रेवी	
বাইশ্বাস্ত্র্ব্র্ব্র্ব্র্ব্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ব্র	175
५८:द्रा रिवर्षेत्रः चःवः क्रिंवाः सः व्याद्याः चेतः स्वायः चेतः स्वायः चेताः चेताः चेताः चेताः च	
महिकार् विवायाध्यार्वे स्वायाध्यार्वे स्वायाध्यार्थः नेवायायः नेवायाद्वे स्वायाध्या	
न्द्रं र्रम्	
यहिशासा दिवे व्यव प्रवाया च रे व्या या शुरुषा	

55. हो र खेव प्रवृह्ण न अर्द्ध र अप्यान्द्र हों किया अपन्य की श्रेन् प्रदे क्रु अर्क्द न् से के	<sup>२</sup> १८ १८ १
वै।	178
মাষ্ট্রপামে বিশ্রিশকেনাশারান্য দুন্তির ক্রিমার্ম ক্রিমার্ম করে দুর্গারে ছামার্ম করে দুর্গারে ছামার্ম দুর্গারি	179
ग्रुअप्रं रिवेर्च र्यायाय रेषा मृद्धिया	181
5年、元子本、 )到	
মাষ্ট্ৰ শ'ম' চিক্ৰন্ম ভাষ্ট্ৰ শ্ৰেম্প্ৰ শ্ৰেম্প্ৰ শ্ৰেম্প্ৰ শ্ৰিম্প্ৰ শ্ৰিম্প্ৰ শ্ৰেম্প্ৰ শ্ৰেম্পৰ শ্ৰম্ম শ্ৰেম্পৰ শ্ৰম্মৰ শ্ৰম্মৰ শ্ৰম্মৰ শ্ৰম্মৰ শ্ৰম্মৰ শ্ৰমৰ শ্ৰ	183
याहेश्यः र्वा अळव हेर्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष	184
মাষ্ট্ৰ শাস্ত্ৰ প্ৰভূম কৰ্ ৰ কা ব্যাহ্য বিশ্বাহ্য বিশ্বা	185
८८.द्व.्र्र्य्य.क्ष.त्र. रेड्री	185
गहिरामा र्गुन प्रमुद्द स्थाय रेही	188
गशुस्रामः र्रमः हुवैः इस्यानः रेषा	188
५८.सू. र्यः श्रेष्ट्रस्यः रेड्री	188
याद्वेश्व.रा. र खर त्याव अर य रेड्री	189
বৰী'ম' বিশ্ৰী ক্ষাম বিশ্বাধ্যমা	

#### न्गार क्या

५८:सॅ र् श्रेर्याक्चेवर्र्यक्ष्वर्या रेते।	190
गहिरामा दिलाने मा चेदान में दी	190
ग्रुसर्गं र्स्ट्रिस्य संस्था रेही	191
यश्चार्यं वर्षान्यदे नदेव सः नेत्य	193
८८.स्. र वर्ग्यान्यदः मध्यः र राज्यानिका	194
न्दःसं दिन्यानदेवः श्रुवः पदेः ह्वाशः दर्गेन्यः नेयः वादेशा	194
५८:सॅ ्रिक्न र्नेब ्रेबे	194
यहिरामा र् अवतर्व वित्र प्राप्त रेया विश्वा	194
५८:स्र्रिन्द्रम् क्षुवासदे कुवा चेत्री	194
५८:द्रा. र् दे.कार्यायाः श्री क्षाया विष्टा	197
यहिरामा दिल्यों वा सदे देवारा च देवी	198
ग्रुसम् रिन्ना सेन्दि । सून १३ सम् १३ सेन् नित्र । सेन् ।	199
गहिरामा र् गुन्यहोन्सूनप्रदेख्या रेते।	199
ব্যষ্ট্রশ্ন স্থা	200

५८:सु विस्तान श्री स्थान श्री हो	200
महिराम विस्पर्देव महिराबी श्री प्रमान स्थान स्था	
সা্ধ্রসামে বিষ্ণার্ভ্রবারীর শ্রীর বেমাশ্লর্শ শ্রীর বার্ক্র শ্লেমাশ্লর কাল্যার	
यहिरास (वि यदे क्या रेप याश्या	203
न्नःस्रिं क्रियायायायायायायायायायायायायायायायायायाया	203
र्ट.स्.चर्या.के.स.झेटश.त.बज.च.ध्री	204
गहिरामायर्ने न क्याया उत्त न प्राच्या मार्थित या हिर्मा प्राची	205
गश्रम्भारम् क्रम्मान्यवाके स्ट्रान्ड प्रमान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य स्ट्रान्य स्ट्रा	205
गहिराना रिश्चन मार्था सम्बर्ध	206
মার্মেমে বিদ্যানইর শ্রিদ্রের কু ত্রির দানাত্রত হলের বাস্থ্র যা	
पवि'प' रिव्यक्ष'ग्री'पदेव'यः रेव्य'पिहेशा	213
५८:स्रि रिवर्वासेर्हिन्सामधेरेक्ष्रास्वासेर्पसम्स्रित्सामस्राक्षेत्रास्यसःक्षेत्रास्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस	
ম'ন্ট্ৰা	213
५८.सू. चूज्यक्षक्षक्ष्यविद्यः विद्या	214

गहिराम दिक्ष हैं दिक्ष है	214
न्दःसः र् श्रूर्यास्य स्वास्ति हिन्स् रेया प्रास्ता	214
न्दःसः रिश्वरमः सम्मास्त्रितः स्वासः स्वीतः स्वासः	214
५८.मू. र्याव्याश्चरत्त्रत्र्यं अध्ययायान्त्रेत्रात्त्रात्रम् नेत्रात्त्रात्त्रम् नेत्रात्त्रम् नेत्रात्त्रम् ने	215
万下光·广湖东西等有· 入奇	215
यहिश्रास क्रिंग व्यापिक विश्वा	215
र्रित्रः रेशेसश्ची स्रामित्र म्यान्या कुरामित्र ।	215
म्बुस्पः र्दिन्नमः रेवी	217
महिशासा चित्र ग्राम् अव १५ माव साम वि कु साम से नाम चे वि	218
महिरामा दिख्या प्रदेष्ट्र वा प्रदेश विष्	219
म्राज्यामा र्वित्वा से नहिंग्या संवे क्षेया स्वान्व न्या वहिंदा की माहेदार्श स्वान्त स्वान्त स्वान्त स्वान्त स	
অ'নাশ্বমা	219
५८.सू. र पहुंच स्ट्रेंट्या त्यां जा या व्या या या व्या या य	219
महिरामा हिंदा क्रिंद क्राइव मी क्राइव पा क्राया विद्या क्राया क्राया विद्या क्राया विद्या क्राया विद्या क्राया विद्या क्राया क्राया विद्या क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया विद्या क्राया क्राय क्राया क्राय क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया क्राय क्राया क्राया क्राय क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया क्राया	

प्रिस्ति वर्षाः भेर्दिष्णभारावे श्रीभारताके राष्ट्रित् स्ट्रिस्य वर्षायायवि स्त्रीं त्रभाषाके तर्वे स्तर्यस्त	الحاد ع
बै	223
यहिरामा दिः सर्बेग हिसे उत्पति हिंदी	224
	225
यहिरामा रिवन्या वहें वः श्रेन् प्रवेः स्वरः वश्चुवः वः रेषः यहिर्या	225
५८:स्रिन्वावह्रवाहेशायागुवाग्चीः इत्यरावधूवाया नेतायाहेशा	225
५८:स्. र्भूनानम्यागुदाकुः इत्तानमृदायः रेदी	226
गहिरामा हिंदास्य गुवा शे उर्ग नि	227
गहिराना दिवा पहेंद्र साञ्चर रायर व्यवसाय विदाय क्षेत्र साया विदाय क्षे	<u> </u>
অ'নাপ্রমা	228
न्निर्मे निन्नान्याञ्चरशत्रशन्नानी नाया बेदारा श्वेराना राया व्यानी याया विद्यारा श्वेराना राया विद्यारा विद्या	7
অ'সাস্থ্ৰা	228
५८:म् रिवर्वावहेवः सःश्वर्यः वर्वावीः वः वः कव्ययः से से दः ये या सुसा	228
५८:म्र्रे हिम्बर्ग्स्य वेदि	

#### न्गार क्या

यिष्ठेश्रासा र् देल्या ईदाया श्वराया रेखा या हैशा	229
५८:द्री रिन्ना क्रुँ दासे दाधे दाधार दे त्या बेदाया क्रेंदान क्रिया व्यस प्राप्त से त्यम दास	
অ'মাইশা	229
८८:मू र् इंश्वायं की शार्यायाया रेडी	229
यहिरामा रियव प्रवापाय रेडी	
	233
र्ट्रिस्ट्रिश्चनायदेखन्यायायः नेत्यायिष्ट्रेश	233
८८.स्. १ रम्बन्य प्रामिष्ट र्या स्थान	
५८:द्री र्राट्स्याम्यायन्गामी प्रात्याले द्रायाये द्रायाये क्षु सळे द्रायम् रेदी	
गहिरामा विवर्धनारायाच्याची नायावेदारायहें रानवे कु सळदासे प्रम्	
অ'মাইশা	` 235
५८:द्री रिद्र प्रदोष श्रीमशलेद सः श्लेष प्रदेश क्रू र शे प्रवर्ष प्रदेश के विष	235
गहिरामा दिवे त्यव द्याया या रेवी	237
ন্ট্ৰ'ন্গ্ৰ'ম' ব্ৰান্থ বাৰ্ষ্থ বা	238

५८.स. १ ६च.सह.श्रुंश.यंश.बेंच.यंबत.श्रुंश.यंश.श्रुंट.स. रेता.यंहेश	239
५८:द्रा. र् वर्वा. श.स्वा. वर्षः व. रेड्री	
गहिरामा दिन्या स्ति । ज्या सिन्दा विकास ते स्विकास ते स्व	
गहिरामा रिश्वानस्यानुः स्थानानस्यान् स्थान्यस्यान् स्थानस्यान् स्थानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्यानस्य	
न्दःस्रिं र् इंस्ट्रम्यायान्द्रस्यः वेत्री	
गहिरामा र्गावदायाळग्यायायी श्रीन्या रेदी	243
ম্রসংমা বিষদ র্ম্বাশ র্ম্বার স্থার্ম বিষদ রাজ্য সাহী সাহী আরী বাংলার্ম বাংলার	
सर्देव-शुस्राची-नर्ययानान्ध्रदाया रेपानिहरा	244
५८:द्री र् श्चित्रअर्धरायान्यानेवायार्थेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयायात्रेयाया	245
गिहेशामा रिन्दर्शेग्रायादे क्रूर्णेद्रपति क्रुंत्रवि क्रुंत्रवि क्रुंत्रवि क्रुंत्रवि क्रुंत्रवि क्रिंत्रवि क्रुंत्रवि क्रिंत्रवि क्रुंत्रवि क्रिंत्रवि क्रुंत्रवि क्रिंत्रवि क्	246
यिष्ट्रेश्वार्या र्वाटशास्त्र वित्राया राज्या राज्य	247
५८:में र्रा प्रतिविद्यान्त्र मुक्ति । प्रतिविद्यान्त प्रतिविद्यान प्रतिविद	247
याहे अ.स. र्रेंबे.वर्षेत्राचर्षताकी सैया.वर्षताकी भारत्येत्याकी भारत्याक्ष विष्या क्षेत्राच्या है है	.249
ग्रुस्यार् क्रियाश्च्रायाची स्टायति विद्यार्थ में के	250

#### न्गार :ळवा

याश्वासः विवानक्षः श्वेतानक्षः भवास्य विवासः न्याश्वरः न्यायः न्य	251
ग्रुस्र प्रत्वाप्यहें व्याश्चरकायर वर्षां वी वाया कवाका व्याया के श्वेर्पा रे	
र्नेव निष्ठ निष्ठ	253
गशुस्याः दिशनः यहेवाः क्षुर्श्वेदः द्वेषः यस्य स्वस्यः यस्त्रेवः यः विषे	255
गहिराम दिनम् द्वानी नगद खर हम में वावस मुंदा वस मुद्य वस मुंदा वस मुद्य वस मुंदा वस मुद्य वस मुंदा वस मुद्य	
<b>८८:५७</b> द्वरः ध्वा वी श्वरः श्रसः द्वरः वश्चरः विदेश्चे वा वीवा श्रस्ति स्वरं	
न्यायाः <b>वेद्या</b>	255
गहिरायं र गर्वे र छे र यहें र या रेया ग्रिया	257
५८:म् रिन्मदासुराङ्गाश्चीशायदाश्चिराश्ची स्वितः स्वीतः स्व	257
गहिराम दिवः विवास रेवी	258
गशुस्राम् विम्यायायायार्वे न्यास्य मेर्ने न्यास्य म	
५८:स्रिट्न मुर्ग्ने अप्येट्र क्वेंद्रे तु अप्यान हें अप्याभे प्रम् प्राप्त के विष्	
यहिकारा र् इंडर:बयाय रेवी	
गशुस्रामं रिवन्नाःह्नाःमः ब्रेन् सॅन्स्से स्वरःमः वेते ।	

ग्रुअ'रा विन्वासेन हिंवासायदे लेसार व क्षेत्रायसानु व सूत्राया हैते।26	4
নাধ্যমানান্যমান্দান্ত্রমামান্দ্রমান্ত্রমান্	
क्षे.य्र.य.क्ष	5
त्रायाः प्रम्याः प्रदेशः विष्	6
বান্ত্র শান্ত্র বান্ত্র বান্ত ব	
५८:द्री विषयः श्रेन्याहेशः गाय्ट्रिस्यायंत्रेत्राचेत्र्याहेत्यास्त्राचेत्र्यास्त्रेत्यास्त्रेत्यान्यायः विष्	6
বাইশ্বাম বিশ্বর শ্রীশ ব্যক্ষ শ্রী ব্রুশ বাবেইশ কীম বার মারী ব্যক্ষ বার বার বিশ্বর বার বার বিশ্বর বার বার বিশ্বর	8
म्बुस्पः रिवमः बेर्भ्यः व्यसः बेर्भ्यः व्यस्य व्यापायः रेते।	
महिकामा दिल्यमानदेगानेगामावश्चानामवेगहाम देता	
ग्रुअ'रा' रिःषमाक्रूँ वाराप्यमुनारावे रहेषा रेते।	
नवि'म रि'यमानहे न प्रमुन मदे हुंया रेते।	
गहिशायादे प्राम्याम् व्यक्षाळ प्राम्य स्वत् ।	
गहिरायाने वास्त्र अदे क्षेत्र माने क्षेत्र प्रति प्रति वास्त्र ॥ 27	6

कु नक्षा

क में राज्य क्षेत्र क्षेत्र

शेर-श्रूद्र-द्रस्य-व्रह्स-द्रम्य-व्रह्म-व्यह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्रह्म-व्यहम-व्यह्

ราฐาราธุรา marjamson618@gmail.com

AA

२०० । क्ष्म् स्थायम् स्थायम्यम् स्थायम् स्थाय

## श्चेविः देवा

द्योयःसहन्त्र्रात्र्यः क्ष्रियः व्यायः व्यायः व्यायः सहन्त्र्यः व्यायः सहन्त्रः स्वायः स्वयः स्

## क्रन्यामुनायाकुषानिवन्यभन्यम् ।

विशःश्वेंशाहै। यदिये पश्वेशायि देवा है। हो द्राश्चाशायां हैं द्रा ही यह द्रा ही यह द्रा है। यह द्रा ह

नस्रमान्त्री दर्जे नायास्रवयारेगा तुपस्य सम्मने ने प्रति सुगसः हे के दर्भे धिदाया र्श्वे रामदी मन्यासे न हें या सम्ये भी सामना यावदा ग्री-र्नेव-र्नोग्रम्भ-स्-नेर्न्यदे-क्र्रेव-सदे। । तन्नम-नु-त्य-प्य-। रट-र्नेव-८८। ग्वरिन्द्रिं सुद्रार्क्ष्यायायाद्वेयाही देखार्य रिन्यार्य देवी श्रूर्याय ५८० हैंग्रथं प्रदेश्वन्या हेन् क्षेत्र क्षेत्र विन्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्व न्द्रभ्वासन्द्र। जाववार्द्रवावे स्टाकेन् ग्रीयाजीवायायाया वाववाया नसूत्रपरे र्र्से त्रापर्रे न र्र्से न परे परे सक्त के न रहे । परे प्रमासू स्व <u> शुक्र कें नक मान्यक प्रचिक मुन्दिक निक्र सुक्र शुक्र कें नक माने महामाने हुर</u> ড়য়য়ৢ৽ড়৾ঀ৽য়য়৽য়য়ৢয়য়য়য়য়য়ৣয়৽য়ড়য়৽য়ড়য়৽য়য়য়৽ঢ়৾৽ वै क्टन सप्पर न्या हे सा हुदि। क्टन सा सुना सा वे साम दी। न्ये साम दे दे न धेवाया ने धराहेवा मो प्वास्ति स्वरास्ति स्वरासि सस्वराहे ना स्वरासि सम्बद्धा ने प्यासि स्वरासि स्वरासि सम्बद्धा हुः श्रुरः नथा वाद्रश्रास्यायाया विद्यासदे । वर्षे । ळे८.२.चल८.इश.श्री

त्रश्चान्त्रस्त्रश्चार्ष्ठवाश्चान्त्रः श्वेत्रः श्वेत्रः श्वेतः श्वेतः

गशुस्यार् दिन्नानी नर्ने द्रश्या वेदी

र्श्वानार्देन् निहेर्त्त श्री श्री श्री स्वानार्दे निष्टे नित्र श्री नित्र श

 निमानी शहन स्थान निमानी शहन स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

### यदःयगःमीः देवा

महिरामा ( ध्वर्यमामी र्नेवर ) त्यामहिरा श्वरामा क्ष्मामा के त्या क्षमा महिरामा के त्या क्ष्मा क्ष्मा निष्य क्षमा क्षमा

न्दः सं क्ष्यां क्ष्य

## ररःरेशः दरःग्ववरःरेश

न्तःसः ब्रियम्बर्धाः स्वास्त्र स्वस

५८.सू. १ व्य-अ.मुंचे अवस्त्र १३८. रेज.याधे श्रा अक्ष्य.कुट.मू.सू.मू.सू.सू.सू.

न्दः में क्ष्यं क्ष्यं

न्दर्सः क्रिक्षक्षेतः वेषायाश्चर्या हिनःकेशः भ्राञ्चर्या हिनःकेशः भ्राञ्चर्या

न्तःसि विश्वास्यान्यः नेता

सर्वित्यरः सर्वे नित्र वित्य देश्वा स्थान्य स

इन्य क्रम्याम्बर्धियम्

इन्न देवा हेन् सुरायरम्यावरायादी।

बे ह्य

नेशनुःर्केश्यत्व स्टानिःर्टःर्नेःश्चिट्यान्यःश्चित्रःश्चित्रः स्टानिःर्ट्नेन्न्यः स्टानिःर्ट्नेन्न्यः स्टान्नेन्यः स्टान्यः स्टान्नेन्यः स्टान्यः स्टान्नेन्यः स्टान्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्यः स्टान्यः स्टान्नेन्यः स्टान्नेन्यः स्टान्यः स

गहिसामा दिन्यमा वित्रमा केत्री यसाया स्थान केत्र केत्र स्थान स्थान केत्र केत्र स्थान स्थान केत्र केत्र स्थान स्था

सर्वायाय्येत्रास्त्री।

क्षे.चिंद्र्यः स्थान्त्रं स्यान्त्रं स्थान्त्रं स्थान्

इत्या श्चान्यः श्चान्यः श्वान्यः श्वायः श्वयः श्वयः

यश्व नर्ड भाषा श्री व्याप्त हिंदा वेदा की स्थापत हैं दें ने ने निर्मा की नाव कि स्थापत हैं की स्थापत हैं हैं स्थापत हैं हैं स्थापत हैं हैं स्थापत हैं हैं स्थापत हैं से स्थापत हैं हैं स्थापत हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं हैं से स्थापत हैं हैं से स्थापत हैं हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं है से स्थापत हैं हैं से स्थापत हैं से स्थापत हैं हैं से स्थापत हैं है से स्थापत हैं से स्थापत ह

गशुस्रामा वित्रकेशनश्चरमा विशेष नडन् भेराग्यरक्षन् स्वराति से शुर्म् नासे शिक्ष हो से शुर्म मेर्स शिक्ष हो से शुर्म मेर्स हो । इस्त्री ग्राह्म नासे नासे मेर्स से स्वर्ध मेरा हो । से प्योप के स्वर्ध मेरा हो से स्वर्ध मेरा हो ।

र्त्वा वित्राहितामा प्रवास प्रवास कर्म क्षेत्र क्षेत्

इना र्ने के किन्ता

रद्या स्वास्त्र स्वास्त्र

## वह्यायाने याई खेत्र धेर दरा।

> इन्य श्रुत्यः इसः उतः ते : वः न्द्रः यथा । र्ह्वे : श्रे : हिन्य थः यः वः न्द्रः श्रे नः । ने : श्रे नः वः वः ने : श्रे नः श्रे नः से ।

ने : विद्या अप्यादे : क्षेत्र : विद्या अप्यादे : क्षेत्र : विद्या : विद्या

याशुस्यमः बिन्धस्य मिन्यस्य किन्दे स्थाने ने प्यान प्यानि स्य स्थाने स्

इन्न रदायशरदानी देने हिन्या

## मसूर्यस्ते स्ट्रिंग

ळॅन्यागुव्यस्ययाचे अय्यययाचववाययाचे अय्ययाचित्ययाय भेवाने स्यायाचे अय्ययाचे वाववाययाचे अय्ययाचे स्थाययाचे स्थाय ने स्वया स्याधे स्थायाचे स्थायाचे वायये स्थायाचे स्थाययाचे स्थाय स्याये स्थायाचे स्थायाचे स्थायाचे स्थायाचे वायये स्थायाचे वाययाचे स्थाययाचे स्थाययाचे

यरम् र्स्निम्स्निम्स्निम्स्निम्स्निम्स्निम्स्निम्

सर्देव शुस्राक्षु तुवे के शामाधेंद उसातु स्टा ही टानवे स्टा सेवा सर्देव शुस्रा यशः हैं न्या ग्राम् दे प्रमानुन स्थान हे नाम हे नाम हे नाम है । हैंग्रस्यदेर्देशपासेन्यम् वया कन्सधिन्यदेरकनेन्स्राधिरासुरा र्देव हो द सूर उव हो न सूर पदे छंद स है द यस है वास द वे स स स है द नदे हिम् गया है। स्टारेश स्टायावन देश वेश मारे है। ध्रय वेश गहिश यमा ध्रयायान्दरः क्रेंनमा ग्रीमादेमा यदेन से पदेन ग्री द्वारायमा धेन वया देवाने पुषा उवायया पेवा न्यामें सूरावा देया हेन ही किन या ही अ.चरुट्र.चेश.श्र.बत्त.च.ट्र.। क्ट्र.श.र्घ.श्र.श्रश्च.ग्रट.प्ट.ची.तीता.ची.क.चीट. यापारास्टार्स्स्वराग्रीसादेशायासी पद्वेवावाने सेंसामुटाया उवात् प्रमूराया ने भ्रात्र ने नियामा द्वर वर्णा की पार्वेर मार्केर सम्भार की सुर निये ही सार्देश धुया उदाया पदा अळदा अळेंदा गादी गारु अर् र देश रायशा ळदा अदे अळव'गवि'र्शें'पद्देव'सु'तु'रूट'र्शेवश'ग्रेश'देश'व्रश'से'व्रश'गहेश'यश' वर्चेन्यायन्त्रीःनेष्यायाने। विस्तिन्वस्तिन्त्रियायार्थे वहिन्तुःन्तर्तेन ग्रीभावहवानाभे भेरामदे भ्रीस्तरा स्टार्थिन उसार् स्टार्श्वेर स्टारी ग

यत्त्वीत्राय्यत्ये। विक्रव्यं क्षेत्राय्ये क्ष्यं व्याप्त्ये विष्यं व्याप्त्ये विष्यं विषयं विषयं

सम्यविद्वान्याः व्यान्याः व्यान्यः व्याव्यः व्यावः व्याव

द्वान्त्र स्वान्त्र स्वान

# इन्न नष्ट्रवानर्डेशः सेन्यानः हिना होन्यिवा।

श्चरः अंभिश्वरः देव श्चीः वाश्वरः श्चेत्रः विश्वरः वि

यदःश्वास्त्रस्त्रस्तिः स्वादः स्वादः

हैन्-नसूत्र-पर-विर्यायेत-नर्गे यान्य स्थित स

र्त्त्वाक्च न्यावन स्थाने स्थ

इन्य ररःगेर्द्स्त्र्र्स्यश्र्याः हा। श्रुण्ये इसम्बर्धस्ये

र्श्वा स्टायक्ष्य श्री स्वाप्त स्वापत स्व

#### इना ररमी अळव हेर शेर भेराया।

ह्म हिंदा है ने स्वाप्त है ने

## इन्न नेयामन्धितःवेयन्वित्रः

त्वर्यात् देव गहेर्यायहर्यात् वर्ष्य प्राप्त प्रम्म प्रम्भ प्रम्म प्रम्भ प्रम्म प्रम्भ प्रम्म प्रम्भ प्रम्म प्रम्

# इन्य रदमी अर्बन्दिन्द्युन्धिरर्देषि

नेश्वार्षः विदेश्वेत् विद्वात् वाहेर् स्वादेश्वा स्वादेश्व स्वादेश स्वादे

दिन्याम् मियामा स्वाप्त स्वाप

महिरामा क्रियामा क्र

इन्स्निन्द्र क्ष्य क्ष्

त्र्वायावर्ष्ट्रसाध्याव्यक्षाक्ष्याच्या है स्थायाव्यक्ष्याच्याव्यक्ष्यव्यक्ष्याच्याव्यक्ष्याच्याव्यक्ष्याच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्याव्यक्षयाच्यक्षयच्यक्षयाच्यक्षयाच्यक्षयाच्यक्षयाच्यक्षयाच्यक्षयच्यक्षयाच्यक्यक्षयच्यक्यक्षयच्यक्यव्यक्षयच्यक्यव्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्यक्षयच्यक्षयच्यक्यव्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयचयव्यक्षयच्यक्षयच्यक्यव्यक्षयच्यक्यव्यक्षयच्यक्यव्यवस्यवयव्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्षयच्यक्यवयव्यक्षयच्यक्

स्रावा ने प्रविव विषान् भेराना श्रुम्य श्रुम्य श्रिम्य स्रावित स्रोत स्रावित स

निश्च नियानिश्वास्त्र विद्याम्य विश्वास्त्र विद्याम्य विश्वास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्य विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्य विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्य विद्यास्त व

श्चेत्र वर्षे अर्थे । अत्रित्त श्चेत्र श्चेत्

स्थायहोत् अन् देवा निर्मे क्षेत्र निर्मे क्षेत्र स्वा निर्मे क्षेत्र स्वा निर्मे क्षेत्र स्वा निर्मे क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्षेत्र स्वा क्षेत्र

र्तिः र्ते र वा निः स्ट्रिन् निः स्ट्रिन् स्ट्र

र्रें दे 'व'र्के अ'हेद'ग्रायर दुर्हेग्य अस्य हुर सेद'यर वया देवे कु हुँर यसमी:र्स्यक्रार्केसहिर्हेग्याचेदानेर्प्यसहस्रम्यराधेर्प्यदेधिरः डेशः ह्यूश्यात् यतः हे प्यात् केंश्या है न ह्या ही हिं ना राया न सर्ते हैं ना श धराग्चराभेराग्रम। केंशकिराभर्देवार् गुराधिके वासरार हें वास न्में अय्यक्षाळन्याधेवार्वे वे वा दें वा न्रें अये व्युन्वयुन्वयाया विवा अन् देयान्द्र से अन्त्रिया अन्तर्भ ने दे देन सुद्र हिन सुद्र देया यहि अन्तर यवःकर्र्न्यायम्र्र्न्त्र्वयायम् ग्रम्थिन्त्र्र्या । वर्ष्ययायम् वर्ष्यः वशुरक्षे श्रेर्प्य वशुरवशुर थेव व शुर नेव थेव प्रयाध्य हिन में विव दें त्र ह्य र से समा के सा के त्र वर्गेर.लुरे.सुर, शरश.भिश.बुरे.रं.बजा शरश.भि.वर्गेर.लुरे.सुर. मुन् भ्रेरप्रवृद्धरप्रकृरणेवय वृद्धर नेवरणेव प्रशास्त्र विदारे वार ना नेवे कुन्यने प्रवृत्यकुर प्रकृत प्रवृत्त प्रवृत्त वित्र प्रवृत्त वित्र प्रवृत्त वित्र प्रवृत्त वित्र व र्दे त्राम् र वमा ने ते क्रुन त्या सूर क्रुन स्था वेद पते क्रुन वेद से साथे निर्मा स नयाने वायायम् हैं वाया वित्रायम् वयुमाया इया यदित स्नून हेवा वाहेया या র্ষিনাপ্রির ক্রেন্ শ্রমশতর শ্রুনামানাশন, ব্রেন্ডার্নার শ্রুনামানাশন। र् :बर् :प्रेर् :क्रेर् :प्रायर :र् :हॅप्राय :र्वे या :प्राया प्रायर हेंप्राय :ग्री :कर् :या बेर्पानुस्रम् की । देशसर्कें दाद्रमान्वदायायर वेशस्य हुर्ने । विर्वेश वै। पित्ररात्र्रिम्यावयाद्देर्ययाययययाग्राम्। क्रम्यायाधेवायदेरग्व यद्वित दर्। कर्षायायायम् हैंग्यायीयस्य वित्रायायार्के स्री

महिश्यः (ब्यून्यविद्वायन्यः रेयः महिश्वा सुन्यः क्षेत्रं यापित्रं प्राप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप

> इन्न सःश्चेश्यः विन्त्र्र्तिन्तु। युरः यः हेन् नाश्चर्यः ने प्ये ग्रीत्रा। श्चनः ग्रेन् यः व्हें यः क्षनः प्येवः ने नाया।

## न्नरः धुवाःहवाः यः न्वावाः या

न्दःसँ क्रियान् व्याप्तः विष्णान्यः विष्णान

न्तःसं र्वायाःस्य व्यायाःस्य व्यायःस्य व

न्दः में क्ष्याय भेत्र प्रमान्य केष्ठ विष्ठ व्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ क्ष्याय केष्ठ केष

इन्य क्रियः ह्यायः हेन् ख्रियः सेता। निर्मा क्रियः हियायः स्वायः स्वितः स्वितः स्वा। निर्मा क्रियः सेन् स्वायः सेन् स्वेयः।

## ने ने भे महन ने न से मार्च

प्रमास्त्रियाः के साउव। विनास्त्रिन् सानि सामि स्वास्त्रितः सामि स्वास्त्रितः सामि स्वास्त्रितः सामि स्वास्त्र स्वस

श्रद्धा स्वाप्त स्वाप

श्रेवाश्चे वार्षे व्या स्वाहित्य स्

इन्न रेयन्त्रित्से न्यान्त्रित्। ह्नात्ययः क्रेन्न्याः यह्न स्थित्। नर्देश्यान्य से स्ट्रान्य स्थित्।

याहेश्यः ( श्रेम्यायः वेद्री । इत्या क्यायम्या विश्वायः वेद्री । इत्या क्यायम् व्याप्य व्याप्य व्याप्य विश्वायः विश्वाय

द्वर्ष्यादेक्षित्रः से स्वाध्याय भी स्वाध्याय भी स्वाध्याय स्वाध्

न्तरः धुनाः कें शंख्याः भ्रान्तः भ्रान्यः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्रायः भ्राय

गहिसामा द्वीयात्र ने स्वयात्र ने त्यामहिस्य स्वयानी माने माने स्वयायात्र माने स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायायात्र स्वयायात्र स्वयाया

यर्ने र प्रमुद्धाः प्

न्दःसँ किर्न्यक्ष्याः विदेश यहेगाःहेवःश्रीःगव्यायाःसँद्याः श्रींन्द्रस्य केंस्यः श्रींन्द्रस्य केंस्यः श्रींन्द्रस्य केंस्यः श्रींन्द्रस्य श्रींन्द्रस्य स्थितः श्रींन्द्रस्य स्थितः श्रींन्द्रस्य स्थितः श्रींन्द्रस्य स्थितः स्थिति स्थितः स्थितः स्थिति स्थितः स्थिति स्थितः स्थितः स्थिति स्थिते स्थिति स्थितः स्थितः स्थिति स्याति स्थिति स

> इन्य ह्निन्द्रमान्त्रीत्रश्राधितःसरःत्रा। देवाचेत्रसम्बन्धान्यम्य।

र्श्निः हिन् स्विन् हिन त्या स्वाप्त त्या स्वित् स

इन वर्नेन्याम्यवसन्धेयाम्य

शरशःक्रिशःपदेःपर्देद्रायःश्वरःशःब्रुवःश्वेदः षदःद्वाःशःधेदः

स्याना स्टाकु से स्थान स्वाप्त स्थान स्वाप्त स्थान स्वाप्त स्

## इन्य लट्यं में क्रियं मान प्रति।

धराबा होतासर्वे निव्यास्त्र मिल्यास्त्र स्वान्त स्वान स्वान्त स्वान स्वान्त स

निवासामा देसामुनामादेसान्ता वेसाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्त्र विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्त्र विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्त्र विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्ता विवासाम्यान्या विवासाम्यान्या विवासाम्यान्या विवासाम्यान्या विवासाम्यान्या विवासाम्यान्या विवासाम्या

त्रः में क्ष्या के देश हैं वा हमाया प्राया के या विश्व या के या विश्व या के या विश्व या या विश्व या य

ন্দ্ৰীন্ম শুৰ্ব দ্ৰাম শুৰ্ম ব্ৰহ্ম ব্ৰহম ব্ৰহ্ম ব্ৰহম ব্ৰহ্ম ব্ৰহম ব্ৰহ্ম ব্ৰহম ব্ৰহ্ম ব্ৰহম

न्तः स्रिन्द्रित्र स्वाधन्य स्वाधन्य स्वाधन्य विष्ठित स्वाधन्य स्

गिर्देशस्त्र क्षित्र स्वाया वेषा माश्रुया यादेशस्त्र देशे देशक्ष क्ष्य स्वयाना वेष्य साम्य स्वया स्वय त्रः सं क्षित्रं क्षित् क्षित्रं क्षि

त्यायि द्वीत्र स्ट्रित्त स्ट्रित्त

महिराया दिस्य कर कर मानव के म

याश्वारा दिवशासक्त्रा श्री भूगा केंद्र ५.२ वता त रेही

ह्नाश्चार्श्वानमें द्रावित्तं श्री न्याया विद्रान्त्र स्वाया श्री द्रावित्तं स्वाया श्री द्रावित्तं स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वाया स्वाया स्वया स्व

इत्य वश्चवान्त्रेत्रः हे अत्यर्गे हिरायन्त्रश्चा । श्चेशाम् श्चेराम् श्चेरामा । यन्त्रेयामा अत्रित्ता । श्चेत्रामा अत्रित्ता ।

वन्नर्भासर्द्धन्रभाग्री क्षूया र्केन् नुपर्देन सेया शाने। हेन् माने हिंदा सुर

मि श्रु भण्यत्त्र्त्त्त्र वित्र वित्र स्वर्म स्वरम्भ स्वर्म स्वर

यात्रवाक्षयात्राने मिट्या स्वाध्याय स्वाध्याय

त्वस्यस्त्रं स्याचे स्वाक्त्रं स्वाक्त्रं विस्ति विस्त्रं स्वाक्त्रं स्वाक्त

सर्द्धरूपः श्री क्ष्याः स्वर्धर्यः स्वर्धः स्वर्धर्यः स्वर्धर्यः स्वर्धर्यः स्वर्धर्यः स्वर्धर्यः स्वर्धः स्वर्धर्यः स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्धे स्वर्ये स्वये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर

प्राचित्र क्षेत्र क्ष

द्वीत्र स्टर्ष्ट्र स्वरं रेग्या स्थित्व स्वरं स्वाय स्वयः स

महिरामा कि स्वाप्त वितास के स्वाप्त वितास के स्वाप्त क

> यहिश्यः ( देशक्ष्यश्वर्यावद्यः प्रतिष्यः ) वि। इत्या यदेन्द्वे शेन्द्रभूत्यः श्रेयाश्रः श्रेषे श्रेत्रम् श्रेयाश्रः श्रेन्द्रभ्यः श्रेयश्रः श्रेप्ताश्रः हो। श्रेयाश्रद्धः पुद्दः प्रत्यत्वर्यः विव।। वि:श्रेन्द्रभ्यश्यव्यत्वर्यः विव।।

न्नरः धुनाः श्रुनः प्रते स्वार्थः स्वार्थः श्रुनः प्रते ने प्रते । स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्व

ह्यान्य हिंदि के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्य के स्वर्ध के स्वर्ध के स्वर्य के स्वर्ध क

महास्यान किन्न महान किन्न किन

इन्ता नर्देशःस्तिःस्तिःसःस्तिःसःस्ति। इत्यः यदेःस्त्राच्यःसःस्त्राचःसः। इतःसरःमार्वेदःश्चेदःसःधेदःह।। श्चःधेःदसःस्तिदःसःमहेदःनिवा।

 বৰিবা

बेटर्न्ट्रिं निष्ठेशयश्रिं निर्मित्रिं निर्मित्रे निष्ठिं निर्मा के साम के साम की ने हिंद नहेंद प्रते श्रुवे नहेंद हुर सा गुन गुन हिंद ग्रेश श्रु से ह्वा पर श्चनःपर्वः स्विन्यः कें या नुनःपरः वर्गुरः है। नुरेयः ये हिनः वेयः वर्देनः केंयः उत्रञ्चात्यावर्गेन् रहं वान्या श्रुवायमार्थेन् या हिन् न्या श्रुवाय विष्या नियम वा युवाययायायायाम्याम् याययायग्रह्मायविदे स्वाध्वरः स्वाध्वरा से स्वा है। खुराउदाधिदारिष्ठेम डेरायासूना हेरान्यन्यान विदा र्वेनारा नश्राक्षेत्रभार्यात्रवर्षायात्र व्याप्ते । त्रिषाक्षावर्षा व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप्ते व्याप् र्केषाधिराकेषामिष्ठभासम्बद्धार्युरास्त्री ग्रेज्यापालेशाग्रामस्र उदाक्षिमामी देव दुमा हु पद्राया सामा पदेव दे हो। इस पदर प्याव हो दूर र वे वर्ग यम दरत्र पर्दे इस या परा वसम उद्द्र सेंदा वा सीता यदे ह्यादी वर्ष्ट्राचावि दर्भाषी । वर्ष्या उर्जु स्वि ह्यादी 

ळॅन्दे कें मार्ने वर्ज्यामी वर्ष्व शार्थे वर्ष्व हे केंद्र स्यान्ते के व

द्वान्त्री क्ष्यान्त्रिक्ष्यान्तिक्ष्यान्

मल्रस्यमिश्यामिश्यामित्रम्यस्य म्यानिस्य म्या

र्मेन देश देश प्रश्राचित स्त्रीय प्राप्त स्त्रीय स्त्

द्वा त्र्रा निक्ष स्वा निक्ष स्व स्व स्व । । द्वा त्र्रा निक्ष स्व निक्ष स्व निक्ष स्व निक्ष । । स्व निक्ष स्व निक्ष स्व निक्ष स्व निक्ष ।

ययाः श्वरं विश्वर्यः विश्वरं विश्वरं

म्यानाक्तिराधाः विद्याः स्टाया स्टायास्य स्यानास्य स्याना स्टाया स्टायास्य स्याना स्टायास्य स्याना स्टाया स्टायास्य स्याना स्यान

इन्य अर्कें वर्ष्ट्र श्रुव सेंग्र रेव्येय प्रायस्य

व्यायि स्प्राप्त स्प्राप्त विष्या क्षेत्र स्प्राप्त स्था । विषय स्थित स्या स्थित स्

> इत्या स्टानिव श्वित्यस्थित्यस्थित्यस्थित्। हेन्यायार्थेन्यास्थित्यस्थित्। हेन्यायार्थेन्यास्थित्यस्थित्। हेन्यायार्थेन्यस्थित्यस्थित्। हेन्यायार्थेन्यस्थित्यस्थित्।

दे के भारत स्वास्त स्वास स्वा

क्र्वादेशयात्त्रस्ति।

देशेन् ग्रीष्ठित्रयायात्र्विन्यास्त्रस्ति।

इत्या यात्त्रपार्थिन्द्रयात्त्रश्रुत्रशेन्।।

देत्रपाय्यश्रावावदाने प्याः क्रुत्रा।

हेवायाये व्यवस्य स्त्रम्य ।

क्रित्रस्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य ।

क्रित्रस्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य ।

क्रित्रस्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य स्त्रम्य ।

महिमाना है स्टाया सह त्या स्थान है ।

क्ष प्राची ने स्टाया स्थान स्थान है ।

क्ष प्राची ने स्थान स्था

श्रामाश्रीम् । श्रीम् । विद्याने । विद्याने

इत्या यायाने हैं सूर खुयान्तर से । कें या यायाने से से से सुराधिया। ने सूर परे पीवा वे व

यायाहे हे ख्रूराध्याद्दाद्वराध्याद्वराध्यात्वर्धे कु ध्येत्राचे ख्रूराद्वराध्यायदे स्वर्धित कु स्वर्धित स्वर्धित कि स्वर्धित

हन्य क्ष्या क्षेत्र । दे त्ययम् श्विम् स्प्रम् स्थिम् स्थिम् स्थिम् । स्मानिक स्थिम् स्थम् । सम्मिक स्थम् ।

न्वरः वें र्श्वेषायायाष्ट्रन्यरः सेन्यायाधिवः यरः वया न्वरः वेयानेः

खदरम्बर्धा अर्क्षम् अर्थः स्वाधान्यः स्वाधान्यः स्वाधान्यः स्विधानः स्वाधानः स्विधानः स्वाधानः स्वाधानः स्वाधानः स्वाधानः स्विधानः स्वाधानः स्वधानः स्वाधानः स्वधानः

देशः श्रेन्। देशः श्रेन्।

#### ळ्ट्रास्त्रुं द्रसादम्या मी क्षिता ये तुरामुक्षायते द्रसाय भूरा मरायसाम् वारामी

गहिरान् क्रियान् क्रियान्य स्वापार हे व्यून पात्र या सम्बद्ध साम् स्वीपार स्व

#### ८८:सॅं.क्ट्रिंट्संत्री

इत्य क्रियः भूषि । क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः । विश्वा क्रियः क्रियः क्रियः क्रियः । विश्वा क्रियः क्रियः

ळन् सदे श्रे अप्ताधित त श्रे वा श्रू मा श्रू

ने नियाना संस्था

गुर्वास्त्रितः स्विपानितः स्वाप्ति स्विपानितः स्विपानि

न्तः सं (गुनः सहिनः सं विष्यः स्वा विष्यः स्व विषयः स्य

गहिराना क्रियान के स्वान के स

द्रा च्यायाराश्यायाराष्ट्रम् स्थायाराष्ट्रम् स्थायाराष्ट्रम् स्थायार्थे स्थाये स्याये स्थाये स्थाये

मशुस्य (गुन्महोन्द्रभःमह्दन ) वि। इत्य क्ष्मा क्ष्मा प्रमान क्ष्मा क्ष्

#### वस्रमाउद्देशम्य सहद्वासा

धुन्यः नर्डे अः श्व्रात्त्र अर्डे अः उत् । व्यात्यः देवः निष्ठे म् श्रीः अत्यात्र विष्यः न्यः विष्यः विषयः विष्यः व

इत्या देट सं अर्घेट प्रवस्थ से स्पर स्ट्रा। वर्षेट्र प्रवेदे हेट्र सर्घेट प्रवेद प्रवेद । व्याप हे सेट सर्घेट स्वेद प्रवेद । इत्य स्वा हित्स सेट्र स्वेद प्रवेद ।

दे निविद्य दे कि श्रास्त क्ष्य क्ष्

नेशन ग्वन्द्रमाम्बस्य उद्दर्भ में भ्राम्म गुरुष्ठित् मी देव द्

स्तिन्या नियम् विकास्य विकास्य विकास्य विकास वि

महिरामरा ही किया याति प्रमुता याति क्षेत्र प्रमा है या स्मित्र प्रमा है या प्रमित्र प्रमा है या प्रम है या प्रमा है या प्रम है या प्रमा है या प्रमा है या प्रम है या प्रम है या प्रमा है या प्रम है या प्

द्रास्त्र क्षित्र प्रस्था क्षेत्र प्रस्था क्षेत्र प्रस्था क्षेत्र स्था क्षेत्र स्य

# श्चे.य.र्ज.ही

न्दः में क्रियाया स्वरं क्ष्मिया स्वरं क्ष्मिय स्वरं क्ष्म

द्रा श्रुवाडीत् श्रुवाका हे शार्वी अशायश्यात रेते। इन्या श्रुवाडीत् श्रुवाका हे शार्वी अशायशाने।।

त्रवाशाहे के दार्भे ने किंदा स्वी श्री श्री श्री ता स्वी स्वार स्वी स्वार स्वी स्वार स्वी स्वार स्वी स्वार स्वी स्वार स्वार स्वी स्वार स्

मुट्ट स्वर्धः द्वार्धः स्वर्धः स्वर

निका शुक्षां विषा प्राप्त निका करा प्रति स्था स्था शुक्रा शुक्र शुक्रा शुक्र शुक्रा शुक्र शुक्रा शुक्र शुक्रा शुक

न्दः में क्रियन्त्य क्रियान्त्र क्रियान्त

देश्यत्देरःश्चे न्यस्थि क्रद्रास्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य द्याः व्याप्त स्थान्य स्था

सर्क्रित्राधिक्ष्यात्वे व्याप्त स्वाप्त स्वाप

यर्त्व सर्वेते हिन् स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति स्वर्ति सर्वेते हिन् स्वरंति स्वर्ति स्वरंति हिन् स्वरंति स्वरंति

महिराया क्रियाय क्रिय क्रियाय क्रियाय क्रियाय क्रियाय क्रियाय क्रियाय क्रियाय क्रियाय

न्तःसः क्रिः व्राच्या क्षेत्रः व्याच्या व्याच्या क्षेत्रः व्याच्या क्षेत्रः व्याच्या क्षेत्रः व्याच्या व्याच्य

न्दः र्रो हिन्न अप्तर्गित्यः वेति। इत्य श्लेष्ट्र अप्तर्भा श्लेष्ट्र अप्तर्भ श्लेष्ट्र अप्तर्य अप्तर्भ श्लेष्ट्र अप्तर्य अप्तर्भ श्लेष्ट्र अप्तर्य अ

वा ने क्षेत्रीय व क्षेत्र क्ष

इन्य ख्रम्धेर.....। इन्डर्म्य क्षेर्

 विगायशः श्रुः नदेः भ्रुम्

स्त्रा """अळ्ब्रशःश्च्री र त्रम् । वृश्यःथ्वर् सर्वेद र त्रम् र त्रम् । वृश्यःथ्वर् सर्वेद र त्रम् र त्रम् । वृश्यःथ्वर् सर्वेद र त्रम् । वृश्यःथ्वर् सर्वेद र त्रम् । वृश्यःथ्वर् सर्वेद र त्रम् ।

द्युर्ग्नात्रश्र्वाक्ष्माक्ष्माश्राभ्रात्र्याद्यविष्णः हैं व्याभ्राभ्याद्याद्यः विष्णः हैं व्याभ्राभ्याद्याद्यः विष्णः हैं व्याभ्राभ्याद्याद्यः विष्णः हैं व्याभ्राभ्याद्याद्यः विष्णः हैं व्याभ्राभ्याद्याद्यः हैं विष्णः हैं विष्णः

पविष्यः श्री।

यहिराना श्रम्भ अर्थन् अर्यन् अर्थन् अर्यम् अर्थन् अर्यम् अर्थन् अर्यम् अर्यम्

> राव देश्वर्त्वरःश्वर्त्वरःश्वर्त्वार्थः। द्वर्त्वाद्वर्त्वरःश्वर्त्वरःश्वर्त्वारः द्वर्त्वरःश्वरःश्वरःश्वरःश्वरः द्वर्त्वरःश्वरःश्वरःश्वरः त्वरःश्वरःश्वरःश्वरःश्वरः। त्वरःश्वरःश्वरःश्वरःश्वरः।

## धेन् र्ह्जे ह्या या

> इन्न न्नरः इस्य श्रेन्दे न्या मर्वितः वा । भेनः क्षें न्या मर्वितः भेन्दे । भेनः क्षें न्या मर्वितः भेन्दे । भेनः क्षें न्या मर्वितः स्वा । भेनः क्षें न्या मर्वितः स्व । भेनः क्षें न्या मर्वितः स्व ।

थेन हिंदि स्वास्त्र हिंदा स्वत्र स्वास्त्र स्

र्श्वनश्चित्रः हेत्। हिंद्रः हेत्। व्याप्तः हेत्। हिंद्रः हेत्रः वित्रः हेत्। वित्रः वित्र

इन्न ने श्वेम क्लेंग्न क्ला में भेता ने स्वा ने श्वेम क्लेंग्न क्ला में स्वा ने स्व ने स्

यहिरायायार्चेरायार्चेरायार्चेरायाचेरायां वेरायाहिरा सुरायायास्त्रायां देवार्यायात्रायायातास्त्रायां

न्दःस्राध्यायाश्चरःमञ्

विश्वास्त्रात्वर्थाः विश्वास्त्रत्वर्थाः विश्वस्त्रत्वर्थाः विश्वस्त्रत्वर्यस्त्रत्वस्त्रत्वर्यस्त्रत्वस्त्रत्वर्यस्त्रत्वस्त्रत्वरत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्रत्वस्त्

इन्त देखेलेशस्य स्वर्त्वायः धेन। धेन्देख्यायः नहेत्रस्य नित्।

खरायश्राधेन्। खुश्यायानहेत्यम्। यत्त्रिं व्यक्ष्यायम्। यत्रिं व्यक्षयम्। यत्त्रिं विष्यम्। यत्त्रिं विषयम्। यत्त्रिं विषयम्। यत्तिः विष्यम्। यत्तिः विषयम्। यत्तिः विषयमः विषयमः विषयमः विषयमः विषयमः विषयः विषयमः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः

याहेश्यः से याश्यः प्रदात्यात्यः याहेश्यः से यात्रायः हो । स्था यात्राहे प्रदार्थः से प्रदार्थः

म्याने न्यान्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

इन्य """ने खरने खेत्र कुर्ने के दाया।

### ने भ्रेरम्बन र्इन क्रुं उन भीना।

न्तर्सिन् । प्यर्थित् ह्रिं । प्रत्ति । प्रत्ति । प्रत्ति । प्रत्ति । क्ष्रि । प्रत्ति । क्ष्रि । प्रति । क्ष्रि । क्ष

इन्य रेम. इव. भेव. जर्म मान्य भेता।

ख्याळ्या हिंदाययाणेदार्त्ती सेतायत्वा हिंदाययाणेदार्थिया सेतायत्वा हिंदारीयायत्वा हिंदारीयायत्व हिंदारीयायत्वा हिंदारीयायत्व हिंदारीयायत्वा हिंदारीयायत्वा हिंदारीयायत्वा हिंदारीयायत्व हिंदारीयाय्व हिं

धेरः र्ह्वे श्रू अर्दे अरुव र्द्द रहीं व्यू अरुव रेट्ट स्थू अरुव रहें वि अरुव रहें

षी निर्मित के निर्मित

यहिराम क्रियाम क्रिया

न्दःसँ क्रिन्यन्त्रः वेषःमहिषा ह्याकाःसःदेकाःसःन्दा न्दोःसःग्रुवःसः वेषःमहिषा

५८.स्. १ हेवाश्वराद्याचा नेती

यादायक्षेत्र अध्ययाध्ययाद्वे स्वाक्ष्य स्वत्ते स्वाक्ष्य स्वत्ते स्वाक्ष्य स्वत्व स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्ष्य स्वाक्य स्वव्य स्वव्य स्वव्य स्वत

सदःसर्द्धरशःश्री विश्वः चेरःही दिः तर्दिः ह्वाशःदेः त्वावः विराद्धेवाशः

सक्त्रम् स्यायायाय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

न्नायात्रक्षः वित्रे सेस्रम् द्वी स्वार्थः व्यव्यक्ष्यः स्थ्यात्र स्वार्थः व्यव्यक्ष्यः स्थ्ये स्वार्थः वित्र स्वार्थः वित्रस्य स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स

महिसामा र्विस्य मुन्य रेवा महिसा न्दे सुन हो न्यो क्रिय स्थानित्य स्यानित्य स्थानित्य स्थानित्य

न्तः सं र्वा द्वा नर्वे सं श्रुव के दे के स्थान के स्थान

न्यानर्डस्य श्रायान्य से स्वायान्य से स्वयान्य से स्वयान्य से स्वयान्य से स्वयान्य से स्वयान्य से स्वयान्य स्वयाय स्वयाय्य स

द्रिः दः स्टाः सुग्राक्षाः या न्याः वर्षे स्राप्ताः स्वेतः स्राप्ताः स्वेतः द्रायः स्व येवा नदार्थे भूरावा वासयानायके पिये सेससार्के साउवा देगाया द्वीसा सळसमार्श्वेरिन्। रेगामधीत्रमिर्धिम् हेमामिरम्गमासारेमामर वशुराया धेः अभी रेग्रायाते। क्रिया इसायर रेया पराया या विश्व गश्रदशः सः ददः त्यायः वे त्वा क्रें वः से दः दे। ददः स्यायशः यः द्याः वर्षे सः है'स'झूर्यान्य यद्यामुर्यापदे'सुद'ळंद्र'स'धेद्र'द्र वायापदे दिहे शेसरारेग्रायन्द्रधेःसप्रसंसरार्श्वेर्यन्त्रायश्चेत्रप्रेत्रपा स्ट्रिं ळ्ट्रायाधेवावा ट्यायर्डेयात्रायदेश्येययाग्रह्यायुवाययाहे यत्रुवाद्येरा भे·रु८। द्यानर्डें अप्तः अवे अस्य स्टासुन्य अप्यावस्य भे खेदाराप्य स्था धेव है। इस देश यथा देव हो द व्या क्रेंट देश से द ही असंव है द द नव्यापाया न्यापर्टेमच्यासेरोसस्याचीसासारेसामार्टेन्पान् सेससः उदान् नम्मान्य के भून के मामान्य मी हो नाये वा सी मान सामान सामान सामान सामान सामान सामान सामान सामान सामान स वर्ष्यभातुः दुरः बदः ग्राटः से ग्रीट्रायायाये तात्रात्रे ग्रायायाया यव पर्देग्र मरायन्त्र पदे भी रास्त्र विस्तर्भ । से ससा उव र प्याप्त पदे से ससा ग्री हेर<sup>्</sup>षेत्रः भे ग्रेट्रप्रश्रः रेग्राश्चाद्यः श्रेष्ट्राश्चार्थः अस्त्राधः श्रेट्र्यात्रः प्रवेट्रप्रसः বাপন্য ন্থা

श्चितः न्यात्र क्षेत्र स्वाप्त स्था देन् ग्रीः ग्रुन्य स्वतः यश्चितः स्वी न्या नर्देशः श्चितः स्वेतः स्वतः स्व

स्रेयस्य प्रवित्ता स्वाप्त स्

क्रॅन् क्रो न हो स क्रुन्य स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वाया स्वया स्वय

यिष्ठभारा किन्यार्वेन्यमह्नेन्यन्यन्यन्य नेवायाया नेवायाविष्या स्वरंगि सुन होन्यो विषयायि सेवायायि सुन होन्यो विषया

# युन'सबदे'हे स'सु'दन्दर'दस'है। ।

अरमः क्रुमः प्रदेश्यानः सम्भे स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

याहेश्यः ( देवायावरे श्रुवावर्ताः ) त्यात्राश्चा श्रुवा प्रति श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रिवा प्रति श्रुवा श्रिवा प्रति श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रुवा श्रिवा श्रुवा श्

इन्स्रिंट्रिंड्ययः हिन्न्यायः रेही इन्स्रिंड्ययः हिन्द्रा

न्ता नर्डे अप्यक्ष । प्रति क्षेत्र अस्य क्षेत्र अस्य क्षेत्र क्षेत्र । प्रति क्षु प्रति क्षेत्र । प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र । प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र प्रति क्षेत्र । प्रति क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क्ष

#### इना ने हेन परी मही है आया महिना।

ने 'हेन' श्रम्या पादे 'पक्के' से सम्मास्त्र सम्मास्त्र म्या प्रमास्त्र सम्मास्त्र प्रमास्त्र सम्मास्त्र प्रमास्त्र सम्मास्त्र सम्त्र सम्मास्त्र सम्त्र सम्मास्त्र सम्त्र सम्मास्त्र सम्मास्त्र सम्मास्त्र सम्मास्त्र सम्मास्त्र सम्मास

हिना वर्नेन्त्रा ने संगुन्धर स्थ्रिं न्या है न व्येत स्थ्रिं के न वित्रा है न व्येत स्थ्रिं के न वित्र के न व

गुन्न ने हों निविद्य प्रम्म निव्य के प्रमा ने हों निव्य के प्रमा निव्य के प्रम निव्य के प्रमा निव्य के प्रम निव्य के

न्तरः में न्दः न्वरुषः स्वरे खुषः श्रीः न्वन्यः से न्वरः से से न्वरः से न्वरः से न्वरः से न्वरः से न्वरः से न्

इत्या स्रम्भास्त्र स्थित् स्या स्थित् स्या स्थित् स्थित्

श्रेव है।

ने पा हेर पोव से समा से दार हित ही से दिल

महिश्यः (हिंद्यः श्वरः पेदी दें त्रः श्वरः हेमा मात्र शर्मः हेः धेत्रः वे त्रा

इन्य कुम्बिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्य स्वाधिम्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्स्य स्वाधिम्य स्वाधिम्य

र्वेगश्रामान्नेमान्नेन्द्रम् श्रीत्र श्रीत्र म्ह्रीत्र श्रीत्र स्थान्ने स्थान्ने स्थान्ने स्थान्ने स्थाने स्थाने

इन्न द्वामी क्रिक्स विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास

यन्याः क्रेवः श्रीः क्षें वयाः भिनः त्युरः यः यः भिवः ने। देवः ने : न्याः नियायः भ्याः प्रायः न्याः क्षेयः श्रीः क्षें वयाः भाषाः व्याः स्थाः स्याः स्थाः स

म्ब्रुस्य क्ष्मान्य कुष्य प्रत्य क्ष्मान्य कुष्य प्रत्य क्ष्मान्य कुष्य प्रत्य क्ष्मान्य क्ष्मान्य कुष्य प्रत्य क्ष्मान्य क्ष

इन्त्रा ह्या. हने त्ये स्था स्था त्य स्था हिया। स्था हिया हिया हिन्दी स्था स्था स्था स्था स्था स्था स्था हिन्दी । स्था हिन्दी स्था हिन्द

> स्वाय्येयायायात्वेयाः के विश्वायायात्वेयाः । स्वाय्येयायाः विद्याः स्वायः स्वयः स्

#### ने रहा भी शही हिंग मा से दा

त्रायायवित्वित्रां । शुर्याते श्रेष्या श्रेष्य श्रेष्य

महिश्रायाकुश्रामित्रश्री सुश्रार्ह्हेद्राह्मित्रप्रस्डद्राधिद्रायात्रप्रम्याम्यात्र्या मर्हेद्रप्राञ्चरावर्षे।

प्राचेत्र क्षिण्ड्य क्षिण्ड्य क्ष्य क्ष्य

प्राधि । विकास के स्वास के स्

> र्ट्सिं क्ष्यान्त्र्वित्यः वेद्री इत्या शुर्वाने प्राच्यान्यः हेट्द्र्या शुर्वाने प्राच्यान्यः विद्यान्यः विद

महिसामा दिवे व्यवस्त्र ने व्यापा के स्वाया के स्वया के स्वया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स

न्दः में बिश्वन के वास्त्र निष्ण वास्त्र के वास्त्र के विष्ण वास्त्र विष्ण विष्

इन्न ने र्लिन् र्लिन् र्निन्द्रन्तर शुरुष्टिम्। ने र्ने क्षाप्त शुरु हुन ने स्थापित। कुन रिने क्षाप्त स्थापित।

#### वनर्र्हेषासेर्परम्गरायसाधित्।

यद्यात्र म्हिन्द्र स्वार्थ स्

र्वेश्वाहित्यां व्याप्तिः स्वाहित्यां वित्यां वित्यां

इन्त देन्त्वास्य जुद्द स्वीत स्था । स्य जुद्द स्वीत सं वित्र स्य स्वीत । देश जुद्द स्वीत सं वित्र स्वीत । इन्त्र देश देश स्वात स्व

 हेर खेत से सम प्राप्त पर दे है र ले ता

इन्य श्रेश्रश्च वित्व वित्र स्था स्था । यात्र श्राप्त से त्र से त् याद से त्र से त्र

शेश्रश्नी शेश्रश्नी विष्णित्र विषणित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विषणित्र विष्णित्र विष्णित्र विष्णित्र विषणित्र विष्णित्र विषणित्र विषणिति विषणित्र विषणित्र विषणिति विषणित्र विषणिति विषणिति विषणिति व

माने भारा किया में माने स्वाय में माने स्वाय स्वय स्वाय स्व

> इन्य निन्यश्रेश्यान्त्रस्थान्यः है। स्रम्यान्त्रहें नन्यान्त्रस्यूम्

न्ते में त्रे त्रे त्राचा क्ष्मा त्राचा क्ष्मा त्रे व्याचा क्षेत्र त्राच्या क्ष्मा त्राचा क्षमा त्राच क्षमा त्राचा क्षमा त्राचा क्षमा त्राचा क्षमा त्राचा क्षमा त्राच क्षमा त्राचा क्षमा त्राचा क्षमा त्राचा क्षमा त्राच क्षमा त्राच

गहिरामा दिवः व्यवः नगगः विशेष्ट्रमान प्राप्तः विशेष्ट्रमान प्याप्तः विशेष्ट्रमान प्राप्तः विशेष्ट्रमान प्राप्तः विशेष्ट्रमान प्राप्तः विशेष्ट्रमान प्राप्तः विशेष्ट्रमान विशेष्ट्यम विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्रमान विशेष्ट्यम विशेष्ट्रमान विशेष्ट्

यायाने से स्वाप्ताने स्वापताने स्वाप्ताने स

इत्या अल्लेब्याश्चित्रः श्चित्रः श्चित

त्र क्ष्या स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

इत्या दरःस्. ख्रां प्रतः क्ष्यां प्राधिवा । अरः क्ष्यां उत्तर्भ व्युत्तः व्यय्यः व्यत्तः व्ययः व्यत्यः व्ययः व यश्चीर्या पर्ट्राम् वार्श्वराधराष्ट्रियायात्रीम् अत्राह्म्या पर्याप्तार्था वित्राप्ताराम् वित्राप्ताराम् वित्राप्ताराम् वित्राप्ताराम् वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ताराम वित्राप्ता वित्र

हान। इट बन मार्थे ग्रु अव नहें न ना। वर्के अ ग्रेन हें न सम्प्राप्त श्री मार्से मार्थे मार्थ

इतः बत् गार्शे व्याधित सम् निर्देश्य वित् वित् गार्शे शे स्तरः वित् गार्शे शे स्तरः वित् गार्शे शे स्तरः वित् गार्थे शे स्तरः वित् गार्थे शे स्तरः वित् श्रिक्षे सम् स्तरः वित् श्रिक्षे स्तरे श्रिक्षे स्तरे श्रिक्षे स्तरे स्तरे श्रिक्षे स्तरे स्तरे श्रिक्षे स्तरे स्तरे स्तरे श्रिक्षे स्तरे स

इन्न ""हैश्वर्यत्विम । धेवर्वन्यश्रिम्श्वेत्र्यत्विम । भेर्नतेर्त्वाश्रिम्श्वेत्र्यश्वेत्र्याः नेर्धेर्श्वेत्र्यत्व्याः नेर्धेर्श्वेत्र्यत्व्याः नेर्धेर्श्वेत्र्यत्व्याः नेर्धेर्श्वेत्र्यत्व्याः नेर्धेर्श्वेत्रः नेर्धेर्श्वेत्रः नेर्धेर्येत्रः

#### रे के शःश्वरः धरः वर्षे के विश्वरा

सम्मान्य स्थान्य स्था

म्बार्याम् क्रिंड्या ने खुर्या सेस्याय सेन्या ने या महिर्या क्रिंड्या ने खुर्या सेस्याय सेन्या ने या महिर्या

> त्रःशं (क्रिंग्येव श्रेंग्यंव क्षेत्रः वेदी। इत्या क्रेंग्येव प्रयुग्धः या सेन्यं वेदी। क्रेंग्येव उव न्या प्रयुग्धः यग्ये । शेन्यं से स्वी प्रयुग्धः या सेन्यं से स्वी प्रयुग्धः या सेन्यं से स्वी प्रयुग्धः या सेन्यं से स्वी प्रयोग्धः या सेन्यं से

र्श्वेन से किंया उना हिंदा श्वेंन से दे पेंदर हो हो में प्राप्त के प्राप्त के

र्वे त्युर्य से प्राप्त होरा येव उदा ह्यें वा से पेट प्राप्त के प

गहिकामा (देख्याकेक्ष्याक्षेत्रमा ) दी।
इत्या दिक्षामा प्रसूत्र प्राची ।
दिक्षामा प्रसूत्र प्रस्ति।।
दिक्षामा प्रसूत्र प्रस्ति।।
देवि के राये दिक्षा स्थापसूत्र प्रमा।
देवि के राये दिक्षा से माका हो।।
यासूत्र प्रस्ति प्रस्ति प्रस्ति।।
से सक्ष्या प्रस्ति प्रस्ति।।

शेश्वश्राह्म । श्री व्याप्त विष्ठ । प्रत्याय विष्ठ । प्रत्य विष्ठ । प्रत्याय विष्ठ । प्रत्याय विष्ठ । प्रत्याय विष्ठ । प्रत्य विष्ठ । प्रत्याय विष्ठ । प्रत्य विष्ठ । प्र

क्रु-निवे त्र्युष्यः तुः भ्रुतः हेनाः निव्या

#### ये: इर बर्यायदे: वु: हेर्न विद्या

न्द्रिश्यः प्रम्यः वहन्यः वहन

न्दःसः र्वात्रः स्वाया अद्भःश्वात्त्रः रेषः याश्वया वयः नः नर्वोत् । नेवः याभः न्याया अद्भः श्वयः न्यायः नः श्वदः नर्वा।

न्दः र्से क्ष्यानः न्ते क्षित्रः हिन् । इत्या भेता क्षित्रः से क्ष्या व्या क्षेत्रः से क्ष्या । स्थितः से क्ष्या । स्थितः स्या स्थितः स्या स्थितः स्

याल्याम् स्थान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

यहिराया देवे व्यव प्रमान के विष्ट

हे धेव वे व

म्या व्याप्त स्थानिय स

ने के अंग्वत स्थायने हिंद्र शेष्ट्र श्री स्वायाय स्थाय है दे स्वायाय स्थाय स्थाय

इत्या गविवः भविवः स्परः ने कुः हिना। ने स्वीः निर्मा गविवः भविवः स्वीः निर्मा गविवः भविवः स्वीः निर्मा ।

ह्र या विषय भिवा के ति के कि ते भारती स्था ने सिंद के ति या विषय स्था ने सिंद के त्या विषय स्था ने सिंद के स्था ने सिंद के सिंद

इन्य वहेयायसेन्यर्घयायरवर्ष्या

ने के अपनि वित्य वित्य

इन्य यायाने ने तहिया कु त्यस वर्देन।

वाया हिन् युन वेद्या कु त्या स्वर्ध प्रस्ति । हिन् युन वेद्या कु त्या स्वर्ध व । हिन् युन वेद्या कु त्या क्षेत्र के त्या के त

म्या ने यद्र म्या न सक्षेत्र मा मित्र ।

> इन्या यायाने प्रह्मा कुः ख्रान्यः न्।। देशायावश्रामा

म्याने मार्य मार्थ से निष्ठ से

यान्यायते सुर्यात्र स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्था । यान्यायते स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्थात्र स्था । यान्यायते सुर्यात्र स्थात्र स्थात

वहिना यान्दिश सेवि के शित्र नु प्येत या वित्र वा निर्देश से ता सर

विश्वीम्। यहेगाः कुं प्रत्याः अप्याः विष्याः विषयः विष्याः विष्यः विष्याः विष्याः विष्यः व

माशुस्रामा विस्ति शुस्रम्म स्वासाम भूति। इस्य माला हे प्रसे स्वास्त्र स्वासाम भूति। हेव प्रविव ले व

ग्रीश्राकुः मुनः नेत्रात्व शः श्रीम्थाकुः श्रीम्थाः ग्रीम्थाः नेत्रा श्रीम्थाः स्त्री श्रीम्थाः स्त्री श्रीम्थाः स्त्री स्त्रा स्त्रा स्त्री स्त्रा स्त्रा

इन्या गण्यत्य स्थल्य स्थल्य । त्रिम्य स्थल्य स्थल स्थल्य स्य स्थल्य स्थ

दे श्वर पर्दे द पारदे प्ययद दें व प्याप्त में द प्रेस प्रेस के स्था क

क्ष्या ने क्ष्य क्षेत्र विष्या क्षेत्र क्षेत्र

ख्र-वर्देवाश्वाचे-क्षु-श्रेश्वन्त्व द्वान्त्वनःश्चि-हेन-द्वान्यःश्वाधिनः स्वान्त्राक्ष्यः विश्वन्त्रान्यः हेन-त्वन्यान्यः हेन-त्वनःश्चिनः । स्वान्त्राक्ष्यः विश्वन्तिः विवाद्याः हेन्। वर्षे न्याः वर्यः वर्षे न्याः वर्यः वर्षे न्याः वर्षे न्याः वर्षे न्याः वर्यः वर्षे न्याः वर्षे न्याः वर्यः वर्षे न्याः वर्यः वर्षे न्याः वर्यः व

सन् वर्गेन्य सेन्डन थेन्न हो।

र्थित 'हत 'दि । श्री 'दि । यश म्हमश के श रहता हिंद 'या देव 'या विव श्री । हेव 'हे 'देवें श से 'देवें श राम हाया अद 'हे या श्री 'या प्राप्त हो या से देवें 'या प्राप्त हो या प्राप्त हो या से देवें 'या प्राप्त हो या प्त हो या प्राप्त हो या प्त हो या प्राप्त हो या प्त हो या प्राप्त हो या प्त हो या प्राप्त हो या प्त हो या प्राप्त हो या प्राप्त हो या प्राप्त हो या प्राप्त हो या

मिल्रिक्षामा दिक्षम् निक्षम् विवाधना विवाधना

#### हेत्से पृष्टि रात्रायश्यायाधित्।

युनः चेत्रः पात्र्यः सेतः हेतः तर्वो वाः प्रतः सेवायः प्रतः यदि यः वे ः क्रें यात्रः प्रतः स्याप्तः सेतः प्रतः प्रतः प्रतः स्याप्तः स्यापतः स्याप

नाशुक्षाया (दिवानशुका) त्यानाशुका

र्ट्सिश्चर्या विष्ट्रिया क्रिया क्रिया विष्ट्रिया विष्ट्रिया

इन्य यायाने यावदायशान्त्र अपदियादा।

निःधिःगावसःक्षुत्रःक्षेःविगाःग्रा । नेःनविवःसेनःसरःयहिगाःवःष्परः।। गावसःसवेःक्षुःक्ससःवुत्रःसेनःधेव।।

द्रस्य में दिया मुस्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

गहिरामा शुना बेदा याद रायदे हेदा प्यान के प्यान विवास के प्राप्त होता हेदा प्रकार प्रदेश हेदा प्रदेश प्रदे

मशुस्राम् रहामी हिंदि में स्वाह्म स्वाहम स्वाहम

प्रस्ते ( न्य्याय प्रस्ते स्वाय प्रस्ति ) त्या क्ष्रिया क्ष्राय क्ष्रिय क्ष्र

ह्यायः चुनः यो नः सेनः सम्। इन्यायः चुनः यो नः सेनः सम्। र्मिन'रात्र'हिन्'राम्'ग्रेश। विश्वास्य स्वाक्ष्य स्वाध्य स्व

हेव'म'इसमायार्षिन्याधिवा।

यहनाशायदी हो स्वराशेये स्वराशेयाशाय हो राये स्वराय स्वराय

श्रमा ने सम्माग्यम् स्त्री । विष्यम् सम्मान्यम् सम्मान्यम्यम् सम्मान्यम् सम्मान्यम् सम्मान्यम् सम्मान्यम्यम् सम्मान्यम् सम्मान्यम्यम्यम्यम्यम्यम् सम्मान्यम्यम्यम्यम्यम्यस्यम्यम्यम्यस्यम्य

ख्याद्यन्तरम् च्यूर्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः व

र्शे स्ट्रिंग् प्रदेश्वे स्व प्रत्य प्रत्य

इत्या देल्परावस्थार्श्वस्था ।

र्द्धरायायदे सूर्या दे प्यार र्द्ध शास्त्र । सुर्या दे सिंद्र ग्री यद्या मुन्या

भिवाने। विस्त्राः श्रें स्वाप्ताः निवानितः स्वाप्ताः श्रें स्वाप्ताः श्रें स्वाप्ताः स्वापताः स्वापतः स्वापताः स्वापताः स्वापतः स्वापताः स्वापतः स्वापताः स्वापत

कुषायदी अति। यदु अप्यये देश अभाषा श्री वा भाषा प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

इत्या न्येर कुन्छन्यर यम्य विमाया । ह्या छेन् न्यं के श्रिक्ष विमाया श्री म्या । इस या न्यं के श्री हिमाया श्री म्या । इस या न्यं के श्री हिमाया श्री म्या । इस या न्यं के श्री हिमाया श्री म्या ।

न्येम् त्र्व कुन्य्यम् स्वित् प्रम्य प्रवाद विवाद स्वाद विवाद स्वाद स्व

प्रस्थानहेवामायाधेवाहे। वरामी र्क्षरायसेयायर गुर्यास्था वरामी र्क्षरायसेयायर गुर्यास्था

गहिरामा र् द्वामा ने विष्ट्रामा ने विष्ट्रा

गिहेशमा ( ख्यायेययह्याविवादवावाया ) वि। वाया हे प्रदेशस्य स्वे प्राया स्वे राष्ट्र स्वाया स्वे प्राया स्वे प्राया स्वे राया स

इन्य है सूर्से अअययान हेत गुरावया।

है 'क्षेत्र'त्रर'वी 'श्रेश्रश्याया नहेत 'यत्र' श्रुश्यात्र विष्ठेत वि

माशुस्रामा विक्रानिक क्ष्या माशुस्य क्ष्या माशुस्य विक्रानिक क्ष्या माशुस्य क्ष्या क्

व्यव्यायार्क्ष्राच्या वर्षे व्यव्यायार्थ्य व्यव्याय्यार्थ्य वर्षे व्यव्याय्य वर्षे वर्य वर्षे व

र्षित्राश्चायेत्राते नित्राश्चित्रायः श्वायायः स्वर्ध्यायः स्वर्ध्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्

इन्त श्रुवानश्याधिव हे ते वा क्षेत्र न्ता। श्रेत्र मात्र व्यापकेत्र विद्या । श्रे कु वात्र व्यापकेत्र विद्या । ते वे श्रे व्यापकेत्र श्रे ।

श्चेशःतुःगुत्रःत्रशःविद्याः विदःविद्याः श्चेतःविद्याः विदःविद्याः विद्याः विद्याः

गहिरामा दिलाईनम्बर्ग विश्वा इन्या ग्रायान्त्र पर्धि दिन्य अर्धिन विश्वा ग्रायान्त्र अर्थान्त्र प्रायान्त्र प्रायान्त्र विश्वा ने व्या

> इन्त न्तरर्धिः श्रेष्याश्रयः श्रेष्यः अर्घेतः।। न्येरः द्राक्षेत्राः श्रेष्यः व्यव्यानः श्रेष्यः।

#### र्'नःकुरःरु'शे'सर्वेरःनविवा।

कृटायम् ग्रीकारायम् स्वार्थित्। कृटायम् स्वार्थित्। कृटायम् स्वार्थित्। स्वार

इत्य श्रमः इत्ये स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः

वर्शेन्याश्वास्त्रास्त्र श्री स्वित्त्र वित्र श्री स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वि

महिश्यः (हिन हो न प्रेश्व स्थान स्य

र्ट्स् विश्वास्त्र के स्थान क

न्दः में बिकाल्यमा उदा के सो देश देश माना माना के सा क्रिया के साम के साम क्रिया के स

न्दःसः क्रियायः व्यायः व्यः व्यायः व

न्दः र्वे न्वा व्या श्रें वाश्वा वार्षे न्वा व्या श्रें वाश्वा वार्षे न्वा श्रें वाश्वा वार्षे न्वा श्रें वाश्वा वार्षे न्वा श्रें वाश्वा वार्षे न्वा वार्ये न्वा वार्षे न्वा वार्षे न्वा वार्षे न्वा वार्ये न्वा वार्ये न्वा वार्ये न्वा

म्या यश्चिम्याद्यायः स्ट्रास्त्रम्।

मार्थि से मार्थे त्यायान रुद्ध श्री त्याय दे का से द मार्थ मार्थ त्याय मार्थ स्वर

द्यीर्ययात्राच्या वाल्.श्राचाल्.दवाकायात्र्यं वाववर्यः १ क्षाच्यायात्रः विद्यायात्रः विद्यायात्रः विद्यायात्रः

श्चेश्वराविद्याद्वात्त्रात्त्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्

इ.या ......प्रीयश्ची। अर्ह्रट.प्रश्चिर.....

मशुश्रामा ध्रिन्तित्वायामहेन्यते त्यायाप्य त्र्री हिन्ता प्रिमा क्षित्र मित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र प्रिमा क्षित्र मित्र मित्र

मिर्देर्गिष्ठमा तुः श्र्वेत् सिरिः र्क्केत् स्त्री श्रामा म्ञ्री स्वाप्त म्याप्त स्त्री स्वाप्त म्याप्त स्वाप्त स्वाप

## इना ""अन्धुरह्नारुम्रर्व्या

# महिरास दिन्निन्य वेदी इन्या देश्विरः केवारासमानेवाः भेदी

मुन्न सदि प्यत्र त्या उत्र क्र के से निका के त्या प्राप्त क्र के निका के त्या क्ष स्था क्ष स

महिश्यः ( विम्नायः व्यव्यक्ति । या महिश्यः विश्व । वि

ग्रेशःह्रेयाश्वराद्यायायश्चरात्रया श्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्

इंस्त्राधित्रप्रदेश्चित्राकेष्त्र ह्वास्त्रात्राह्य स्वा इंस्त्र """" हित्रसेत्रप्रम् । स्वात्राह्यत्रप्रत्रक्षस्रक्षात्रे।। त्वराधुवातेश्चित्र """।।

द्या विश्वास्त्र स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

तुस्रायाकें साउत्। हुत्याय्यत् सेव्याय्यत् सेव्याय्य स्वयाः प्रतायाः सेव्याय्य स्वयाः स्वयः स्

 हैंन।

हेंन्यार:ब्रेगारव्याया पर्नेत्वा हुया:ब्रह्म सेंग्येन्य स्वायः व्यायः विष्यः व्यायः विष्यः व्यायः विष्यः व

यान्यां विश्वास्त्री।

यहिश्यः दिश्यः नेवश्यः विवश्यः विवश्य

 यान्याः ग्राम्याः व्याप्ताः भित्रः हो ने स्थेनः ग्राम्याः स्थाः स्

५८५६ हिन्द्रक्ष्यक्ष स्थान व्यक्त स्थान व्यक्त स्थान हिन्द्र स्थान हिन्

त्रुव्यः कुः चाश्चेरः श्वांश्वाद्यः विश्वाद्यः विश्वादः विश्

इन्न न्नरःश्रेष्यश्रःश्रेरःतुशःश्रेनःत्रश्य। । हिष्यश्रःन्याःतेःहेःसूरःधित्। ।

इन्य विष्यान्त्राच्यान्त्रा

इन्ना """देन्रवयः सर्द्रम् ।

व्यत्यामञ्जीत्या वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर्षेत्

इन्य गयाने मार्थर निर्मा ध्रम प्रमास्त्र प्रमासे स्वास्त्र स्वास

मायाके मार्था स्वास्त्र मार्था कुर स्वे सामाय स्वास्त्र स्वास्त्र

इत्य हेर्यस्य स्थान्य स्थान्य

इन्य र्नेयाञ्चारायार्श्याराष्ट्रवारम्य

ह्याने प्राथा विषय । स्वाप्त । स्वा

इत्य यायाहे हे नर नहमायायायाया ।

यायाने प्यताया रुदार्देत यावदा सेट्र ग्राट्या प्यदायायी रेट्र या सुत्र या केट्र या

### इन्य ""र्में बर्दिन्यर वर्ष्या

यत्ताः उत्रः श्रें या श्राः श्राः स्ट्रें श्राः स्ट्रें श्रें श्र

हे त्यूराओ हैं ना न क्कार्ट्य प्रदार प्रदेश हो राजा तथा हो राजा से रा

यह्र मादे श्रुप्त के अप्त विद्या विद

यहिरामा दिल्य महिन्य महिन्य महिरामा दे । या महिरामा के व्याप्त के

इन्य श्रुक्ष्यन्त्र्यार्ध्य व्याप्त व्यापत व

श्चान्दः हिंगा प्राये स्वेश्वार्थः विश्वार्थः विश्वर्थः विश्वर्ये विश्वर्यः विश्वर्थः विश्वर्यः विश्वर्थः विश्वर्थः विश्वर्यः विश्वर्ये विश्वर्यः विश्वर्ये विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वर्ये विश्वर्ये विश्वर्ये विश्वर्ये विश्वर्ये

हिना न्धेर्य धिव न्व त्यः श्री न्या या । विना न्द्र सः श्री श्रान्या त्यः नविव । ।

न्धेरःवा र्षेवःत्रवः र्थेवः र्थे वार्थः यायायः र्षेवः त्रवः वाहिर्यः याथेः

नहेत्रग्रम्ब्रित्रं पाठेगा ठेश्या स्थ्रित्रं पाठेगा ने स्था स्थ्रित्रं पाठेश स्थ्रित्रं स्थ्रित् स्थानित् स्थ्रित् स्थिते स्थित् स्थिते स्थिते

इन्य गयाने वर्ते र वे यहमाया वर्ते द वा।

यायाने प्रत्यायार्वे स्थाया यात्र्या यात्रा यात्रा

इन्म कुः अळवन्यादः यो अन्देन्या । देन्द्रेन्द्रेश्वः संस्थाय अन्देन्। । देन्द्रया यो कुः अळवन्य अन्देन्। ।

> इन्य वायाहे गुर्वायाहे स्वन्याया सेदा। इन्द्राह्यद्रायस्या हें से विया।

नायाहेगाुदायाधेराहेन्दरानहनायायाययायह्नायाधेदाहे। दर्श

श्रीट्रा श्रीट्रा स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्थापत

इन्य ब्रिन्यान्यया

ह्य हिंदा है स्व क्षित्र क्षेत्र क्षे

महिराम दियाम्य म् मान्त में मान्त मान मान्त मान

「新って、「新って、「新って、「新って、「新って、」」。 まっ、 「一新って、「一新って、「一新って、「一新って、」」。 まっ、 「一新って、「一新って、「一新って、」」。 まって、「一新って、「一新って、「一新って、」」。 まって、「一新って、「一新って、」」。

यहूर ग्रिये ह्रिक्ष म्याम्य स्थान्य स

इन्न र्नेन्यावन कुः अळं न उत्र भेता प्रमान क्ष्या क्ष्या म्यान का भेता भारा । वित्र स्वा क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या ।

न्गर-र्से त्यश्च र्न्त यावन प्रते ग्राह्म श्री क्षु अळन उन सेन प्रतः वित्र यावन प्रते ग्री क्षु अळन उन सेन प्रतः वित्र यावन प्रते श्री क्ष्य वित्र स्ते ग्री क्ष्य क्षेत्र प्रते श्री क्ष्य क्ष

गवानि प्राप्त स्थानित स्थानित

र्थे व प्रति म्ह अ वि । श्वित प्रत्य अ ते । प्रति प्रत्य । वि प्रति । वि प्र

स्या देवःयाववः श्रेवः प्यदः श्रेयाः यः प्री। न् होः नश्यः श्रः न् नः प्रेवः श्रेयः प्रेयः प्रेयः । स्थः स्थः श्रेवः प्रेवः श्रेयः विवः वे ।

श्रेशःश्रुम्याद्यात्रः भ्रित्रः भ्रिते भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्यः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः भ्रित्रः

यश्रम्भाभ्रम्भ

मिलेश्वारा र्विताश्चार्था विद्यान्य प्राचित्र स्वार्था विद्या स्वार्थी स्वार्थ

हत्य न्रेंशर्से नहेंन्यि क्षु ह्या न्रेंश्य क्ष्या न्रेंश्य क्ष्य क्ष्य

न्द्रभः सं भ्रे क्रंभः निह्न स्वे भ्रात्ते श्रु स्वर्थः श्रु स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्यः

इत्या दे द्याः ने श्राः स्वर्त्ताः स्वा । यात्ववः गुवः तस्य स्यः से दः स्वरः दे। । यात्य रः से रः से विः स्वरः सः ने श । यात्र रः से रः से विः स्वरः सः ने श । यात्र रः से सः से विः स्वरः से विश्व ।

भ्रवस्थायम् स्ट्रिंस्य स्थायः स्वर्धः स्थायः स्वर्धः स्थायः स्यायः स्थायः स्था

क्ष्या र्वेत्रमाठेमा महिन्ग्यार प्रस्था उत्ते। । यसेत् स्रेत्र स्रेत्र स्रेत्र स्र्वा प्रस्था । क्षेत्र रुव्य महिन्द्र स्राम्यम् स्रोत्र स्रोत्र ।

र्शेन्द्रश्चित्रः सन्द्रश्चन्त्रः विश्वास्त्रः श्चित्रः विश्वास्त्रः श्चित्रः विश्वास्त्रः श्चित्रः विश्वास्त्रः विश्वास्

इन ने सूरनहर ने गुराय धेता।

ने भूमा श्वना के स्वाप्त के स्वा

यहिश्यः दिन्न न्या स्ट्रा स्वापन स्ट्रा स्वापन स्ट्रा स्वापन स्ट्रा स्वापन स्ट्रा स्वापन स्ट्रा स्वापन स्व

स्या ग्रम्थः स्यायाः स्यायाः

तुस्रायिः हुषाह्या न्यात्वी न्यात्वी तुस्रायि विस्तायि कुः क्षेत्रायः विस्तायि कुः क्षेत्रायः विस्तायः विस्ताय

म्या नेश्वत्यस्य मञ्जास्य विश्वा

देशक्ष नुस्रमं लेश निहित्यते श्चाने नुस्रमं महित्य स्थाने निह्न निह्न स्थाने स

देशक्रिय्यास्त्र विष्ण्य विष्णे विष्णे

क्रमा नेशक्षक्षक्षेत्र स्वाधानम्ब्री। क्रमाश्रम्भवद्गान्यक्षित्।

देश'व्य देग्रश'विष्ठ्य देन्'श्चेश'देग्रश'देव'ग्ववद'द्द'। क्वेंग्रश'वहूद' शुःश्चर्या प्रवा क्व'ह्र श'ग्ववद'देश'यर'वहूद'श्चर'श्चेद'याय्वद'दह्द'। व्या कृत्रयादेव'राह्रद्र्याववद'देश'श्चर'वहूद'। क्वेंग्रश'यं क्व'वहूद'। च्यःश्चिर्यं देवायः वर्ष्ट्रेत्र्यं देवायः वर्ष्ट्रेत्र्यः वर्ष्ट्रेत्रः वर्ष्ट्रेत्र्यः वर्ष्ट्रेत्र्यः वर्ष्ट्रेत्र्यः वर्ष्ट्रेत्रः वर्षः वर्ष्ट्रेत्रः वर्षेत्रः वर्ष्ट्रेत्रेत्रः वर्षः वर्ष्ट्रेत्रः वर्षः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षः वर्ष्ट्रेत्रः वर्षः वरः

इत्या देश्वी प्यवस्ययाः तृश्वर्थः है। । तुस्र संभित्ते या त्या सः स्वासः स्वेस। । देशसः भित्रे प्यतः स्वेतः स्वरः होता।

यवः यनाः उवः र्हेवः नाववः सेटः ग्राटः नुसः सः धिः वे ना त्रावः विश्वः स्वावः स

इन्य हिंग्यायत्र्याव्यायद्याः महिंद्राय्या

यहिराया ( इयाया ने से स्वाप्त ने स्वाप्त ने

प्रायम्भिः हिन्द्वर्ण्यः स्वायः स्वयः स्वय

महिराम दिन्दे महत्त्वर मुन्य प्रति। वया महिराम दिने प्रति । मुन्य प्रति ।

> इन्सिं क्रियानम्बिंद्यः वेदी इन्ता रे रे जुरुष्य प्रतिन्धित ज्वादा। विवार करास्टिं प्रतृह प्रतर प्रतृहा

द्यान्य द्यान्य द्यान्य द्यान्य स्वान्य द्यान्य स्वान्य स्वान

द्रियायाः क्षेत्रः च्रियायाः क्षेत्रः क्षेत्रः च्यायायः च्यायायः क्षेत्रः च्यायायः च्यायः च्यायायः च्यायायः च्यायायः च्यायायः च्यायायः च्यायायः च्यायायः च्यायः च्या

त्रःसः र्वा त्रम्यः व्याप्तः व्याप्तः विद्यायः व्याप्तः विद्यायः व्याप्तः विद्यायः व्याप्तः विद्यायः विद्यायः

इन्य गडिगान्त्रेन्दाधर

८ १ व्या ४ १ ह्या २ १ व्या १ १ १ व्या १ १ १ व्या १ १ १ व्या १ व्या

ने कु हमा ए हे छिर र्ने।

याम्या पुरहे स्वरेश हो स्वर्थ । देवे कु म्या स्वर्थ । देवे कु म्या सम्बर्ध । देवे कु म्या

इन्य गयाहेर्रास्टर्स्य स्वा

नायाहेर् रायाहेना हु त्ये र क्रिंगाहेना किंत्र हैं प्येत्र क्रुं त्येत्र क्रुं

येत्रेत्रं लेत् न्त्रम्थः के शःउत्।

इन्य देश ग्रीश ग्राम् भेव विन् भेन भेना

रेश श्री श्राण्य प्रित्त स्त्री स्त्

इत्य द्व्याश्यावेषायायायः द्वा ।

न्त्रम्थान्त्रेष्ठ्यात्रम्था विन्यम्भी निन्यम्भी निन्यम

इन्न रुअर्ह्स्याडेगामीयःनेयान्।

> इन्म ने ते के मा कर हे न त्यूर है। । व्याय न से न ही र ....।

धिन ह्रें कें अंख्वा दें त शृश्चिन् अने हे है न उर हिन न ले अंधर

विश्वरःवरःत्रया देःस्वरःवेशःयःयःवनयःवःश्वेदःश्वेदा इःवा """देशःश्वेशःग्रदः॥। शेःवश्वरःश्वदःधरःशेदःश्वेरःर्दे।।

यर.श्रेट.सप्ट.ब्रीमा यर.श्रेट.सप्ट.ब्रीमा

न्त्रम्थः द्वम्यः भेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रिष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम् प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्रेष्ट्रम्यः प्र

इन्य म्र्यास्य स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः । ने प्रवासिकाः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः ।

इन रम्स्यायास्य स्वार्

रट्यो देयायाय स्थायत सुर्वेट यय सुर्वे या स्थायत सुर्वे या सुर्वे या

द्राधें अद्यान् नुष्ठी अव्यान् त्रुष्ठी अव्यान् त्रुष्ठी अव्यान् त्रुष्ठी अव्यान् त्रुष्ठी अव्यान् व्याक्ष्य विद्राक्ष विद्रा

इत्या न्य्याश्वर्त्तः श्रुत्तः । लून्यान्यः श्वर्तः श्रुतः । इत्या न्य्याश्वरः श्रुतः ।

महिराम क्रियाम किना कर प्रमुद्द प्रस्ते मुंच प्रमान के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम क्रियाम के मान क्रियाम के मान क्रियाम के मान क्रियाम के मान क्रिया

यायाने न्यायान् स्थाप्त स्थापत्त स्थापति स्था

याद्ययात्राक्ष्यं विद्यायात्राक्ष्यात्रात्रा

र्द् त्र न्त्र्वाश्रास्त्र क्ष्म् प्राप्त क्ष्म् क्ष्म क्ष्म् क्ष्म क्ष्

इन्व डे हे हे हम्पेर लें न कु जेवा।

डे हे स्रायानहे ज्या विदादे हे स्राया प्राया प्राय प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया

### य'र्र'भेव'हे'रे'यत्रश्रभेवा।

त्त्रवाश्वाचीः त्वतः वीश्वाचीः भीश्वाचाः व्याच्याः श्वाच्याः वित्राः वित्राः वित्रः व

गश्यामा र्रम्यक्ष्यम्य रेत्री धेरार्क्के स्टर्गि सेग्रस्ट्रायसाङ्गे स्वरायरेट्रासार्केट्रायी खुन्यासाया धरार्ज्ञास्त्र स्वर्णे स्वरायक्ष्यम्य स्वर्णे स्वराया

म्या इसलेश नुस्य में कु 'धेव'हे। ।

> इत्या इयस्वेयःर्देवःयाववः क्यायःयः धेया। व्यायेदःर्देवःयाववः सेःयःहेवः धेरा।

धेर्ग्गः इस्र लेश रें द्वावदाया बुवाशाया ख्रुवा सर कवाशाया धेश

इन्त गयाहे खुरायश्चिता हर हैं। क्रेशिय विद्या है स्टारेगा यथा। देश क

नायाने निर्मित्र स्वाप्त मुक्ते अध्यामना सुर्या स्वाप्त स्वाप

इन्य ""अश्चीर्यः स्वी। इन्ये मुस्त्रः स्वा

स्याद्वीयाद्वात्त्र्येत् स्वाद्वीया

श्ची स्थानित्व क्षित्र क्षेत्र क्षेत्

नद्याः क्रेंत्रः वर्गेयाः तः श्रेयाः यो 'द्यदः र्ये श्रः श्रेयाः वेश्वः यः यदः वर्देयाशः

स्ति स्वाया स्वर्धि स्वर्ये स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स

नःदी ने धिरःने अपरायानः हेन् शी विश्वास्य मित्र शी । यह सी से स्वास्य स्वास्य

देन्त्वाचीर्द्वन्यभूषात्व भ्रीकासायवाचीर्यिन् र्ह्वं र्ह्व्याचीर्त्वा स्वाया स्वया स्

महिश्रास क्रिंग्य के क्रिंग्य

वशुरानराष्ट्रया सुर्यासेसयाग्री हेत्रसेत्रपदे धेरावे त्

इना "म्यायः हे देवा।

कुःपह्याः वियः धेरः शेसशः ग्रेः कुत्।।

ग्रव्याकु प्यवाया से त्युर द्या

महिश्यः किः श्रेष्यः श्रेष्यः श्रेष्यः श्रेष्यः विश्वः वि

८८.सू. रिट्ट के एडटी हो अंडिस के प्रकार के प्

#### सुरामान्व भेरायते कु हेराधेव।

श्चेश्वान्तिः श्वान्तिः स्वानितः श्चेश्वान्ति । स्वानितः स्

न्द्रीयिन प्रमास्य हो वर्षे प्रमास्य क्षा विषय क्षा विष

र्तः त्रान् । व्यान् । विष्ट्र व्यान् । विष्ट्र व्यान् । विष्ट्र । ।

बेर्पशस्य विदा

दें त रूर की वर्दे द सदे द्वर में ना बुनाय उद व व स देया बुनाय बेद्दर्यादके।विदेश्येस्रयादेश्चेर्याची।वर्त्त्र्वर्त्त्रयादेश्चेर्याप्तर् र्यासहस्रात्रः स्वायात्रम् द्वीया ग्री स्वीत्रात्रे प्रवादि प्रवादि प्रवादि । र्रेन्द्रिंश्युःनक्रुन्द्रमा ग्राचुन्यायायेन्छीःसेस्यान्यानेतेन्यःर्रेयान् विषायां प्राची द्वाप्तर्भ क्षाप्तर्भ क्षाप्त क्षा क्षाप्त क्षाप्त क्षा वर्देन् पवे न्वर में वा बुवाय उद न्दर में ने केंया उदा सूर की वर्देन पवे <u> ५२८:सॅ.वाब्वाश.१४२,घर्ट,व्हिंट.कु.ट्रू.स्थ्र.कुर.लुव.स.लुव.स.स्या</u> हिंद्रभे निया अर्देव द्रेष्ट्रिया या पर्हिद्र स्टर्मी द्रिया ग्री ख़ूव के या होद्र सेवा भ्रेशमानेवेकेने वयायायायाये भ्रेम हिनमा सेन में वियायया ने के सेन B्र-र्देव यस सेवा वेस प्रेटेर्देव स हैं ग्रस्टेर हस प्रमुट र ग्रस्ट वि र्थराग्री:र्नरार्थे:पाञ्चपार्थारुद्धाः स्रोत्रात्री:र्नरार्थे:पाञ्चपार्थः उदान्दारीने भ्रीनाया अर्देदान् र्षेष्ठित्र या येता नुष्ठा या स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स र्ने लेवा

र्दे न तर्दे द न त्र मा ब्रामा अद्या में अद्या में अद्या में स्था मे स्था में स्था

नेश्वान्धीः स्रोते खुशाग्री हेराये दापार प्येदार र्त्रा हेरा है स्वान्या देश

बिन्ना ने निवानी नियः ने सेवाका क्षेत्र स्थान स्यान स्थान स

दे 'न बिद 'तु 'मा हे त् 'स श्रुम 'ए स 'स त् 'स सम् मा मो 'धे त 'से सम् मे 'हे त 'धे त 'से सम् सम 'मे दे 'मे हे त 'धे त 'से त

गहिरामा विक्तिन्त निर्मा विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्ता विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्रा विक्र वि

द्याः भे के स्वाभाग्याः दे स्वाभाभाग्याः दे स्वाभाभाग्याः स्वाभाग्याः स्वाभाग्यः स्वाभायः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभायः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभायः स्वाभायः स्वाभाग्यः स्वाभायः स्वाभाग्यः स्वाभाग्यः स्वाभायः स्वभ

मशुश्रामः क्षित्रचेत्त्रम्यः वेद्री इत्या न्यन्धेत्यस्य स्त्रम्यश्रम् । वृश्रामः न्यादेश्यक्तः न्यावद्या । वृश्रामः न्यादेश्यक्तः व्यावद्या । श्रीमः न्याद्यक्तः विद्या । श्रीमः न्याद्यक्तः विद्या ।

ग्वित यश्रुं न न्यामा संदी

इन्न गयने सुरायराने हुन्ता।

ग्याने के प्रति प्रति प्रति । देश श्री । देश श्री । स्वि । स्वि

### इन्य इस्यामिष्ट्रीयान्यस्य

हेश्यान्य स्थान विवाद । प्राप्त प्राप्त प्राप्त । स्थान स्य

इन्य अध्ययःययः वेद्याः । केरदेदेर्द्राच्याः अध्ययः अध्यः विद्याः

इना """अम्मित्र'पाद्य

वर्ने हिन त्यश्र है हो नम वश्चमा

गश्यामा भिन्न महिल्ले स्वास्त्र स्व

ने प्यत्ते सुन हो न सुन स्व पर्ने ना

ख्याधितः हितः हेराये वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते वात्रात्ते व यात्रे यात्रात्ता वायायात्तात्ता त्वात्तर्वे व्यायावायाधितः केष्याः व्यायाधितः विवायाः विवायः विव कुः त्रुवाश्वः वर्षः ह्रवः त्रः व्यायः वर्षः श्वेरः त्राः वर्षः श्वेरः श्वेरः

## हेव नहेव न

गहिरामा भी त्या के त्या विकास के त्या विकास

५८:सॅं क्ट्रंप्य दे।

महिरायायम्या विश्वस्था विश्वस्थाया विश्वस्थाय विश्वस्य स्थाय विश्वस्थाय विश्यस्य विश्वस्थाय विश्यस्य विश्वस्थाय विश्वस्य विश्वस्थाय विश्वस्यस्य विश्वस्यस्य विश

न्दः में क्ष्मिं क्ष्मिं क्ष्मिं व्यवस्थान स्थान स्था

वक्षेत्रद्रिक्ष्यः स्वर्ध्यः स्वर्ध्यः स्वर्ध्यः स्वर्ध्यः स्वर्ध्यः स्वर्धः स्वरं स्वर

इन्न ने नामन निष्यामन निष्याम

हिन्यरः धेः सन्यायः दे।।

श्चरायदे तुर्याया से दाष्ट्री राद्रा।

गहिशामा विद्यासम्मे विद्यासम्मे स्थित्त्र सम्मयस्थेत्त्तुः स्थेयः सम्मयः ने दे। सर्केत्र सम्माद्दाः कुरि देत्र के राज्य विद्यास्य स्थेत् प्रम्य स्थितः सम्मयः सम्मयः सम्मयः सम्मयः सम्भवः सम्य

नर्हेश्यम् अः त्र्युर्ग्य स्वायः द्वायः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषय

महिश्या क्रिश्या विश्वेष्य विश्वेष विश्वेष्य विश्वेष्य

प्राचित्र क्षित्र विश्व क्ष्य विश्व क्ष्य क्ष्य

वक्षेत्रत्र्वेश्वर्त्वाश्चर्याश्चरत्याश्चर्यस्यस्यर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्याश्चर्यस्यर्याश्चर

विष्यान्य विष्या विषया विषया

मुशासमामभूगाया

हेव नहेव मंदी

इन ने धिरने नगायश क्रेश न।

र्रे में हिन् क्रे अप्पेंब मुब प्येवा।

र्ग्वस्थान्ते प्रमाण्यस्थे स्री स्वापित्ते स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वापति स्वा

इन्न नेश्वर्ङ्ख्यनः श्चेत्रः सन्दा। श्चेत्रः सन्दर्शेन्द्रः स्थित्।

हिंद्र में अश्रास्ते हैं त्या ना ही साद्दा ही सामा वह ही हैं त्या ना से से सा ग्राम ने मा साद्दा है सामें दिन स्था में दिन हिंद्र स्था मा वह ही है स्थान से से साम स्था है दे स्था से स्था से स्था है दे स्था से स्था है से स्था से ग्रुअः गः देवः नशुः नः वे। इः न। ग्राः धेरः रेग्या अश्वः शृः अः प्ये।। अः वेदः यशः वे ः यशेषः नः उद्या। नहेः नः यः श्रें ग्राशः वें ः देगा। वें अशः यः शुरः दः ग्रादः यः ग्रादशा।

नक्षे नाद्यान्य भेषा स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वया

यश्यामा दिलाईद्याश्याम विश्वास्त्रम्य विश्वास्त्यम्य विश्वास्त्रम्य विश्वास्त्रम्य विश्वास्त्रम्य विश्वास्त्रम्य विश्वास्त्रम

८८:में क्रिंग्स्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं में स्वयं स्वयं क्रिंग्स्य स्वयं में स्वयं स्वय

इत्या ने क्ष्म अर्केट्र अंतिन व्या अर्केट्र अंति । ने कु क्षेत्र अत्य प्रत्य किया प्रत्य । न हे अर्या अर्थे क्ष्म अर्केट्र अर्थ केष्ट्र अर्थ केष्ट्र अर्थ अर्केट्र अर्थ अर्केट्र अर्थ अर्केट्र अर्थ अर्केट्र अर्थ अर्थे क्ष्म अर्केट्र अर्थ अर्थे क्ष्म अर्थे केष्ट्र अर्थ अर्थे केष्ट्र अर्थे केष्ट्र अर्थे केष्ट्र अर्थे अर्थे अर्थे केष्ट्र अर्थे अर्थे केष्ट्र अर्थे अर्थे अर्थे केष्ट्र अर्थे अर्थे अर्थे केष्ट्र अर्थे अर दान्धे स्वर्षेत्र प्रत्ये स्वर्षेत्र प्रत्ये स्वर्षेत्र स्वर्णेत्र स्वर्षेत्र स्वर्णेत्र स्वर्षेत्र स्वर्येत्र स्वर्येत्र स्वर्षेत्र स्वर्षेत्र स्वर्येत्र स्वयेत्र स्वर्येत्र स्वर्येत्र स्वर्येत्र स्वयः स्वर्येत्र स्वयः स्वर्येत्र स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः

इन। वुरायमेरायकिन्छी।

सर्केट्र संदेश मंदे निया हिन धीता।

देशन् सर्केट्र स्थान केन्द्र से स्थान विश्व स्थान केन्द्र स्थान स्यान स्थान स

इना ने ने निन्दर्भे श्री शरी नित्रा

सक्रियासेत्रास्य स्थान

द्रास्त्रसळेट्रमामाञ्चे द्राचित्रः श्राम्यामाने विक्रमास्त्रम् व्यास्त्रम् विस्त्रम् विस्तिम् विस्त्रम् विस्त्रम् विस्तिम् विस्तिम्यम् विस्तिम् विस्तिम्यम् विस्तिम् विस्तिम्यम् विस्तिम् विस्तिम्

इन्य क्रियानमार्ने माम्रीमासीमान

नश्यान्य स्टार्श्वेनशाहे दः दः वावशा

क्ष्यान्य से साम्ची या से स्वाप्त निष्ट्रमान निष्ट्रमान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्

श्चित्रात्रे कित्त्र क्वित्र वाव्य अवश्चित्र अर्केत्य अर्केत्य अर्केत्य अर्केत्य व्यक्षेत्र प्रते क्षेत्र क्षेत्र प्रते क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रते क्षेत्र क्ष

> इत्या यक्केर्यराश्चित्रं विश्वास्त्रं । यायाकेर्यराश्चित्रं यायाकेर्यं विश्वास्त्रं । यायाकेर्यं यायाकेर्यं यायाकेर्यं । यायाकेर्यं यायाकेर्यं यायाकेर्यं । यायाकेर्यं यायाकेर्यं यायाकेर्यं ।

स्राची देवा श्राच्य श्री श्राचित्र श्री त्र श्र

वाश्चेश्वान्यत्राम्यत्रेत्राम्यत्रेत्राम्यत्रेत्राम्यत्रम्यान्यस्यान्यत्रम्यान्यस्यान्यस्यान्यस्यान्यस्यान्यस्य

श्रेश्वा विष्णा विष्णा

समुद्र-मेत्र-में समाप्त-प्रान्य-सम्बद्धिन-त्र-प्रमेषानाने।

इत्य पर्ने स्ट्रम्स्य स्थान्य स्थान्य

यदी स्वार से स्वार श्री के स्वार से नाय से

# क्याश्चायःकयाशः नदः धिनः विवा ।

श्ची राजा निष्ठ राष्ट्र राष्ट

द्वानश्रुश्वा द्रान्द्र्यः इत्यावश्रान्द्र्यः व्याप्त्र्यः इत्यावश्रान्द्र्यः व्याप्त्रः इत्यावश्रान्द्र्यः व्याप्त्रः इत्यावश्रुद्रः व्याप्त्रः इत्यावश्रुद्रः व्याप्त्रः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः व्याप्तः इत्यावश्रुद्रः व्याप्तः व्यापतः व्यापतः

सक्रियायात्वे। स्थानियायात्वयः प्राचीत्रायि क्षित्रः स्थाने स्थ

## श्चें र न सुद र्से न र भी र ज़े

यहिराम् रिल्या हिराम्य हिराम्य स्थान स्था

न्दः में (बर्द्र्यक्षः ) है। इत्या नहें ख्वास्यान्यस्यानिस्

यक्के. क्षेत्र चिराश्रेश्वर श्री स्वाया स्व

महिश्यः क्रियः विश्वः विश्वः

न्दः सँ र्वा स्ट्रायः ह्रें न्या स्ट्रायः हें न्या स्ट्रायः हें न्या स्ट्रायः स्वायः स्वयः स्

र्श्वास्त्रस्त्राचित्रम् वित्रस्ति स्वर्धित्र स्वर्धित् स्वर्धित स्वर्ये स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स

इन्न इन्न इन्न हुन्द्रेन् हेन्। इन्न इन्न इन्न हुन्द्रेन् हेन्। याः श्री मान्य विष्यः स्त्रा विष्यः स्त्र स्त्र । विष्यः स्त्र विषयः स्त्र विष्यः स्त्र विष्यः स्त्र विष्यः स्त्र विष्यः स्त्र विषयः स्त्र विष्यः स्त्र विष्यः स्त्र विषयः स्त्र स्त्र विषयः स्त्र स्त्

देख्यान्य वित्तान्य वित्तान्य वित्ता वित्ता

यहिश्यः विक्रेन्सं व्यक्तियः विक्रेन्सं व्यक्तियः विक्रेन्सं व्यक्तियः विक्रियः विक

गुव वर्रुट देवे शे अ श्व स्थ्या विष्ठुट मी याहेव से प्र स्व स्य याहें स

निवेद्र प्रदेश्चिम् देश्वर निह्नम् मार्थाः या

इन्य कै.ल.ट्र.च्र.ह्याश्वराद्य हीरा।

ने से समुद्रम्य राग्य र रे राज्युम्।

गुत्रत्वुर्देश्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रुत्रः विष्याः स्त्रेत्रः विष्याः स्त्रेत्रः स्त्रः स्त्रः

इत्या यदयाद्यः यद्यायो सः यह व श्वर्या । यद्यः श्वर्यः श्वर्यः यद्यायः व । । इत्या यद्याद्यः यद्यायः व । ।

यद्गाः हुं त्रहें वा प्रदा वा यद्गां वी रायहें वा या या या यह स्वा यद्गां हुं त्र स्वा यह स्व यह स्वा यह स्व यह स्वा यह स्वा यह स्वा यह स्वा यह स्व यह स्

इन्य राष्ट्रियान्य प्रमुख्य स्थित । स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित स्थित ।

ग्राह्म प्राप्त क्ष्रिया व्याप्त विष्ट्र विष्

द्रास्ति ( ण्याक्वीः श्चितः व्याप्त्रायः न्याप्तः स्वर्णः स्वरः विद्याप्तः ने दे ।

 युट् 'ट्र्ट् 'ट्रे वा स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः द्विट् 'स्वरे 'ख्वं यः 'ट्रे 'क्ष्ट्र 'धिव 'व।

 यश्चित्रस्य स्वरं स्वरं प्रस्ति हैं या है 'क्षे 'त्रा 'वे 'व।

 यश्चित्रस्य स्वरं स्वरं प्रस्ति हैं 'त्रा 'वे 'व।

 यश्चित्रस्य स्वरं स्वर

इन्त इस्रायानुःस्य विस्थायान्यः । धुतःसे द्रायाः सुः वीस्थायाः स्था । देन्यः श्चेत्रात्रात्यं विस्थान्यः ।

रमः हुः वाश्रयः मं हे दः दुः वशुरा

त्रुवायावर्ष्ट्रसाथ्यावे यदेश्चित्राव्या हिंदायाश्चर हिंदाया हिंदाय हिंदाया हिंदाय हिंदाया हिंदाया हिंदाय हिंदाया हिंदाया हिंदाया हिंदाया हिंदाय हिंद

ब्रीर्याश्वरायाःश्रेष्यायाः ध्रुवः रेटार्यदेः तुयाशुः विषयाः ययाः दे द्वरः

मुहेश्यः ( अव्यव्यक्षेश्यः सम्मन्द्रमान्द्रः न्या ने स्वा ने स्व स्व सम्मन्द्रमान्द्रः ने स्व सम्मन्द्रमान्द्रः ने स्व सम्मन्द्रमान्द्रः स्व स्व सम्मन्द्रमान्द्रः स्व स्व सम्मन्द्रमान्द्रः स्व सम्मन्द्रमान्द्रः स्व सम्मन्द्रमान्द्रः स्व सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रमान्द्रस्य सम्मन्द्रस्य सम्मन्द्रस

नेश्व स्थान स्थान

मुन'मं के देश के से कि मान्य में मुन'मं के स्वाप्त में मान्य में मुन'मं के स्वाप्त में मान्य मे

गशुस्य (दिन्यम्य ) दी

यनशर्गीस्त्रश्रम् स्वाप्ति स्

इन्त देन्द्रितः श्रीतः वन्त्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्य

बन्धान्यन्ताः सेन्द्रित् स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयाः स्वयः स्वयः

इन्य युनायसन्दर्भे वर्षुद्रन्वते सुन्।

गहेशर्से वरे वे कु र न न ।

स्र-निन्दिन्यस्य सुर्दे निस्ति सुस्र स्रिम्स स्याप्ति स्याप्ति स्याप्ति स्याप्ति स्याप्ति स्याप्ति स्याप्ति स्

यश्चर्यते श्रुम् श्रुम् स्वाप्त्र स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्ते स्वाप्त स्वाप्त

### বর্ষান্ত্রধ্র ক্রিবামান্ত্রবা

न्दःसः र्र्यः इवः इवः इवः इवः विदःस्तरः विदः

न्तः म् व्यान्य स्वर्गा क्ष्या क्ष्य

८८.स्. १ म्ह्र १ वि। इ.या क्रि.संट्र अ.स्.सं. १ वि।

देशित् श्री अप्तान्य निया अत् । यहा या निया अत् । यहा विया अतः वि

यहिश्यः ( क्यायः व्यवन्यः ) है।

र्धा हिन प्यायः विषयः विषयः हिन स्रोतः स्री ।

रोगाश्यायः विषयः स्राप्तः स्री ।

रोगाश्यायः विषयः स्राप्तः स्री ।

स्राप्तः हे स्राप्तः हिन स्री ।

स्राप्तः हे स्राप्तः हे स्राप्तः स्रापतः स्राप्तः स्राप्तः स्रापतः स्रापतः

> इन्न """ने ने नन्या से न्या । सर्वे न्या स्था से न्या स्था से न्या ।

दे'ते'ळें अ'ठद्य व्यक्ष'येवाक्ष'संक्ष्य दुं दुं केंद्र हो। वादावा वी'यद्या क्षेत्र संक्ष्य क्षेत्र क्

श्रुं तः द्र्यं तः श्रुं त्वार्य त्युं तः ते व्यायाः ये व्यायः ये व्यायाः ये व्यायाः ये व्यायः ये व्यायाः ये व्यायः ये व

इन्य भ्रेन्ट्र माडे यात्र वित्र प्राप्त वित्र । अर्था भ्रेन्ट्र माडे यात्र वित्र प्राप्त वित्र ।

श्वरः भरः विष्यः वरः विष्यः हे शः वर्षः भ्रवः श्वरः श

गुन हु त्र हु द न द्या हु न भूद संदे ही स्

श्चर्या यन्याः श्वेदः रूप्ते व श्वेद्रः या यन्याः श्वेदः रूप्ते व श्वेदः रूप्ते व श्वेद्रः या यन्याः श्वेदः रूप्ते व श्वेदः रू

स्र त्यु स्र त्या स्र त्या के त्या क्षेत्र त्या के त्या क्षेत्र त्या के त्या क्षेत्र त्या के त्या क्षेत्र त्

इन्न नेननेवन्नन्नन्नकिन्र्येश।

इन्य स्थार्यास्थ्रस्य श्रीम्यम्य स्वर्येत्।

हें वर्धेन्या से नाम निष्या में विषय

ख्यान्या सेयया श्री यात्र्या यात्र यात्र त्येत ख्री या स्था वित्र स्था स्था वित्र स्था स

यद्भरत्य्र्यान्यस्य क्ष्यान्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान

ङ्गा में अश्वीर्यायुग्ध्याय्यायिक्ष्यायाः हिन्। स्रामी स्रम्भाने के अञ्चा सायुग्याये स्रम्याया हेन् यो वा हो। महेन् से में अरुप्यायम् से स्रम्याये स्रम्याया यो स्रम्याया स्रम्याया स्रम्याया स्रम्याया स्रम्याया स्रम्याया

महिराया (देश हैं द्रा श्वर माहिराया है) विश्व हैं द्रा प्राप्त के माह्य स्था माहिराया है स्वा है स्व है

मुयान्स्वारायाः स्वारापाः हेवाः तः से श्रुवः याः स्वाराण्डे याः स्वराण्डे याः स्वराण

ह्यायाने सारेयासराम्ब्रह्मायाने।

इ.श्रूचाया । इ.क्षूचाया ।

ह्याशायदी कें शास्त्र विवासिया तसिया ताली वाली कें या ताला है किं या

चन्ननिः श्रीम् कुश्चन् श्रीम् नियम् स्वार्णन् स्वार्णन्

रेग्रयाययायवरान्ध्रन्त्रयान्यायायाः दे।

हेश्रामा बद्दा व्यक्षान्त्र क्षुं अळव क्षुं व ळ्या श्रामा स्यक्ष क्षेत्र क्षे

स्या नेयाग्रह्मे त्यायान्त्र न्याहित्याहेर होत्या श्रीत्या श्रीत्या स्या नेया हित्याहेर श्रीत्या स्था नेया होत्या होत्या

इत्या कुःल्रेन्धिरः न्दः कुःलेखे।। महेन्दः संस्थित्र स्वा कुःले स्वा कुःले स्वा कुःले स्वा विकाले स्वा विकाले स्वा विकाल स्व विकाल

हेश्यास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थास्त्रम्थाः स्त्रम्थाः स्त्रम्याः स्त्रम्थाः स्त्रम्यः स्त्रम्थाः स्त्रम्यः स्त्रम्थाः स्त्रम्यः स्त्रम्थाः स्त्रम्थाः स्त्रम्थाः स्त्रम्यः स

महिराम हैन मन्तर्भेत्र स्वर्क्ष महा हैन स्वर्क्ष महा । इस्ता हैन स्वर्क्ष महास्वर्क्ष महास्वरंक्ष महास्वर्क्ष महास्वरंक्ष महास्वर्क्ष महास्वर्क्ष महास्वर्क्ष महास्वरंक्ष महास्वरंक्ष महास्वरंक्ष महास्वर्क्ष महास्वरंक्ष महास्वरंक्य स्वरंक्ष महास्वरंक्ष महास्व

मित्रे ख्राम्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्

हुन्यश्राह्वीः स्रासानुना हे ह्या विद्यान्त विद्यान स्वाद्यान स्व

इन्न वर्षास्त्रेर्धिर्वन्त्र्वस्त्राम्बर्धा

देशक्ष देशक्ष देशक्ष वरायशह्रवाशह्रवाशिक्षण्या श्रेष्ठा देशक्ष देशक्ष विकास स्वाधिक स

> इन्य व्यायन्त्रे ध्वाधितः हियागुवाधिता। याववः श्रीनेवः पुर्वे संदेशारी

मिहेश्याने निष्णित्या स्वाप्ता स्वीप्ता स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत स्वीपत

देख्यार्थ्य व्याप्तान्त्री व्याप्तान्त्रीयात्री

प्रासें क्रिक्ष्यने न्याय्य व्याप्त व्यापत व्यापत

न्तः में कित्वाविक्षे मावश्यावश्यानश्य स्वाप्तः सुर्वा स्वापतः स्वापतः सुर्वा स्वापतः स्व

५८.सॅ. ब्रिक्न्स रेयायही। यदेव यहेयायहरू से साम्यायही। ५८१ दे के देश में देश के साम्यायही।

न्दर्भः ( वनेत्रः विवेदः वाद्यः व विवेदः व विवेद

য়ुप्त्रश्याची प्रदेश प्राचित्र प्रा

महिरामा विक्रियम वि

स्याप्त्रेत्राप्त्रेत्राप्त्रेत्। स्याप्त्रेत्राप्त्रेत्राप्त्रेत्राप्त्रेत्र्याप्त्रेत्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्रेत्र्याप्त्रेत्रेत्र्याप्त्रेत्र्य्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्य्याप्त्रेत्र्य्याप्त्रेत्र्य्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त्रेत्र्याप्त

ने व्यान्यान्त्रियाम् गृत्यवृत्रः श्रूतः त्याः सुः स्वतः स्यास्य वित्रः नः

मशुस्राम् ( सक्तानिः ) है।

न्यूम्यान्यस्य स्वान्यस्य स्वान्यस्य

५८:द्रा विकार्ह्मान्य इन्त्रमार्द्र भाग बुट न ने

श्रुवा नश्र्याया विवास मान्य । विवास स्वास्त्र विवास स्वास्त्र । विवास स्वास्त्र विवास स्वास स्वा

गुव्यवहरण्यां वास्य विषया स्वाप्त स्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

त्र्वीवाःसःत्रविवाः विवाशः वि

यश्रायार्थिवाश्वत्राश्चित्राश्चित्रायश्चित्रायश्चित्रायः विद्याः विद्

मित्रेश्वा क्रियान्य क्रियां क्रियान्य क्रियां क्रियान्य क्रियाय्य क्रियाय्

यदे: श्रेम वन्याः भेनः प्राप्त क्षेत्रः प्राप्त क्षेत्र क्षेत्रः प्राप्त क्षेत्रः प्राप्त

त्रित्र केत्र भी केत्र केत्र केत्र क्षेत्र क्

यथाग्री इसामाधी नन्यासेन सम्बाद सुसान हैं नासामित से स्वाद स्वाद

मुन्यायाः मुनायाः व्याप्ताः व्यापतः व्य

सर्देन्द्र। हॅन्न्थ्रत्रह्नायिः ध्वाप्तिं स्वाप्तिं स्वापतिं स्वापतिं

येग्रथं स्थान्य त्यात्र व्याप्त व्याप्त

ने भूम ज्ञान वस्त्र वर्षे साल र्षे सावस्त्र ज्ञान स्त्र साल द्वा स्त्र स्त्र

वर्षः स्वार्षः श्री । वर्षः स्वार्षः स्वर्षः स्वार्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्यः स

न्दः स्राप्त क्ष्या क्

पर्मित्रायः स्वायम्य विषयः स्वायम्य विषयः स्वायः स्वयः स्वयः

> इन्स्रिं क्ष्यान्य्याद्यान्यः हेते। इन्त्रिं क्ष्यान्य्याद्यान्यः हेते।

हेर्ये व की खेर में के के प्रत्ने का प्रकर्ण में की प्रत्ने का की की प्रत्ने का की की प्रत्ने का की

जुदेःगर्डें में धेद दें॥

गहिराम दिलाईनासासेनासाम नेतासाम नेताम स्थाप क्रियाम क्रियाम क्रियाम स्थाप क्रियाम स्थाप क्रियाम क्रिय

८८.सू. व्यायाय प्रायत स्वायाय स्थाय प्रायत स्थाय प्रायत स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्य

वर्देन् क्रम्भान्त्र ले स्ट्रिंग्स्य स्ट्रि

महिरामा क्षेत्र मा प्रियाय हिरासी । क्षेत्र से प्रियाय हिरासी । क्षेत्र से प्रियाय हिरासी । क्षेत्र से प्रियाय हिरासी ।

ने के अंति के

मुं स्वायाया क्रियाया क्षेत्राया क्षेत्राय क्षेत्राया क्षेत्राय क्षेत्र कष्ण क्षेत्र क्षेत

ন্দ্র্য ব্রহার্থ প্রত্তর বিশ্বর বিশ্

न्दः से क्रियन स्वापा स्वाप्त स्वाप्त

न्दःसीं क्रियान्तिंद्यः वेदी नदःग्रादःयश्यदेद्दःक्षणश्यद्यः अधिश्यःयःयशः वेश्वदःद्दः। द्वुदः यशःगितेःस्याःश्चेदेःवेदा

ङ्गा पहायाधेम् सुरार्धेनायायायाः क्रिंग्यायायाः विष्याः विष्य

महिश्यम (दिवः व्यवः प्रमाणः ) है। इस्मा मायः हे स्टर्स विवः व्यद्देशः स्वये : ध्वेसा । क्रिंव : से प्रचे : व यायाने ने दे के निर्मात्मेयान यो ने म्यानियान के ने मित्र के निर्मातियान के निर्मातिया के निर्मातियान के निर्मातिया के नि

इन्न र्जे क्षि के मा

ने प्यश्याव्य प्यतः हेशासासर्वेता।

र्दे त्यार व्या है त्या सिक्ष स्था है त्या सिक्ष सिक्ष

वन्याश्रुं अत्यान्ते के अत्यान्ते के अत्यान्त्र के स्वान्त्र के अत्यान्त्र के अत्यान्

इत्य ग्रा व्यायः स्वायः त्रितः श्रीतः स्वतः । कुत्वुद्रः यः द्रसः ययः श्रीयः यद्रः स्वरः यादः श्रीयः यद्विः या त्रवायः केः कुटः स्वायः से सक्दर्यः यः यत्वितः पुः यदि रः यदः यदः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स्वरः स इन्न गयानेनेन्याह्यन्यस्ट्रम्। यश्च्यश्चर्यास्यस्यस्य । नेरायम्हेन्यास्ट्रम्

महिरामा क्षियामा क्ष्याम क्षियामा क्ष्यामा क्ष्यामा क्ष्याम क्ष्

न्तर्मे दिवेषावर्षेत्र अस्त्र मार्था क्षु व्यवस्था निवास के स्वास्त्र मार्थित क्षिया वर्षेत्र स्वास क्षु व्यवस्था क्षु स्वास क्ष्या वर्षेत्र स्वास क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या वर्षेत्र स्वास क्ष्या क्य

त्रः र्रे (क्ष्मश्य वर्षेत्यः ) वि। इत्य क्षमश्राभ्य स्प्रत्य विव स्वस्थ स्वर्णः श्री । क्ष्मा क्ष्मश्री स्वर्णः स्प्रत्य स्वर्णः । वृष्णः से द्राप्त स्वर्णः स्वरं श्चितः इस्रश्राध्य स्थानः स्थानः । श्चितः सम्प्रस्थानः सम्प्राधानः सम्प्रमा

हेश्रामाळवाश्राश्चित्राचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्रचेश्वेत्येत्रचेश्वेत्य

यहिरामा क्रियाम क्रिय

दश्र भी प्राप्त का भी निवस्त की । अप्रीय मुस्य प्राप्त का भी निवस्त की । अप्रीय मुस्य प्राप्त की ।

इ.यो क्रे.यु.यसुज्य वर्धी वियः यः पश्चीयः यसुष् यत्रश्रात्र्येन'यर'से'त्र्रः हे। । कं'न'र्शेग्रथ'नविद्याणणा

श्रूम् । विष्ठ दे । विष्ठ दे प्रत्या विष्ठ विष्ठ । विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ विष्ठ । विष्ठ व

द्युर्ग्ना """ क्याया श्रीयाया थी।

क्रम्भःश्रम्भः

मायाने पर्दे दाळग्रमा भे मान्य प्राचीया। मायाने पर्दे दाळग्रमा भे भे दाना मुखा मी

वायाने वद्गान्त स्वाध्या क्षा स्वाध्या स्वाध्य स

हात्रेया हेरा श्रेत्र श्रेत्र श्रेत्य श्रेत्य श्रेत्र । हात्रेया हेरा श्रेत्र श्रेत्र श्रेत्र श्रेत्र श्रेत्र । क्रम्थाः क्रम्थाः व्याधाः क्रथाः व्याधाः विष्याधाः विष्याः व्याधाः व्याधाः विष्याः व्याधाः विषयः विषयः

इन्य क्र.श्र.श्रह्मायाः क्यायाः उदः सर्हेटः । यावदः देः सः सहस्र दः प्यटः सेद्याः यावदः देः स्ट स्वाः स्ट याः स्ट याः स्ट याः

यविष्ठित्र वित्राच्यायहणायहणायहण्यव्हर्म् क्षेप्त्र वित्र क्षेप्त्र क्षेप्ते क्षेप्ते क्षेप्त्र क

इन्य यर्भरमञ्जालम्बर्भरम्।

ने मिडेमान्य कमार्थ द्या से त्या मा

ळग्रारुव्दे के अरुव्या युद्धे युद्धे

 ह्यायायम्भेत्रप्रेत्रप्रवायायाय्येत्रहे। ते हित्यम् उत्ययाय्यायायः हित्यम् उत्तर्भेत्रप्रवेष्यम् वित्यम् ते वित्यम् उत्तर्भक्ष्यायायः

इन्य अल्लेब्ग्यून्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्यानः स्थान्यः स्थानः स्य

इन्य गयाने खेंब न्व वहेंब ने धरा।

यव या येव व

स्या ""म्बस्य उर् ख्रीया ।

कुःवः। हार् स्यरः सेरः धेरः र्रे।

महिरामा विकास माना वि

मशुस्रमः र्वा यह मी प्रदेश क्ष्य स्था स्था विष्य स्था विषय स्था स्था विषय स्या विषय स्था विषय स्या विषय स्था विषय स

देगशस्त्रम्य वित्र वित्

देवाश्वासङ्ग्रानायाद्यो। श्वासाने त्याक्षेत्र स्वासान स्वास्त्र स्वासान स्वास्त्र स्वासान स्वास्त्र स्वासान स्वास्त्र स्वासान स्वास्त्र स्वासान स्वास

महिश्रासः बिद्धाः न्यव्यवः विवायश्रः श्रेष्ठः मानितः विवायश्रः विवायश्रः श्रेष्ठः मानितः विवायश्रः श्रेष्ठः मानितः विवायश्रः स्वायः विवायश्रः स्वायः स्वयः स्वय

न्दः सँ र्वा विश्व विश्

न्दः में (दिश्चनायः ) ही ।

हिन् ग्री प्रसूद्धार प्रसूद्धार प्रस्ति ।

हिन् ग्री प्रसूद्धार प्रसूद्धार प्रस्ति ।

हिन् ग्री प्रसूद्धार प्रसूद्धार प्रस्ति ।

हिन् ग्री प्रस्ति ।

हिन ग्री प्रस्ति ।

हिन् ग्री प्रस्ति ।

हिन ग्री प्रस्ति ।

हिन ग्री प्रस्ति ।

हिन ग्री प्रस्ति ।

इन्त नगरसंख्यस्य स्थान्य । नहेन्द्रसंहिन्दे संधिन्दे ।

न्गर्सं त्यः श्रेषाश्राप्ते त्युर्द्द्र त्युर्द्द्र श्रेष्ट्र त्या हिंद्र श्रेष्ट्र त्या विद्र त्य

इत्या ने हेन श्च थर शुः नें व्या । धर व र र यो हेन र या र र । । र शेर से र य र वे या व का य ये शेरा । हेन धिन या वन र ये ये हैं र या र के या व

> इन्य मयाहे श्रिम्भ स्मायानुयामानित्। इत्रेम प्रिन्डे क्राप्तामानित्।

याया है । क्षत्य प्राप्त विश्व विश्

इत्या """द्रिश्या याव्या प्रमानिक क्षेत्र स्था । वृत्रा संभित्र याव्या स्थित । वृत्रा संभित्र याव्या संभित्र । याव्या याव्या संभित्र ।

ळ्टा कटा में 'ट्रॉर्स से 'त्यस 'ट्रेस क्षुस स 'ट्रेस मान्य हित हो स स्वर्थ हो स स्वर्थ हो स्वर्

इन्य यायाहे में सक्दंरसाने मणा । यायाहे करादर हीं सामदे तुसामान विद्यात् स्थासादे दरा हुसा इद्दर्श सक्दंरसार्से वे द्या

> इन्न व्या स्था । सूर्या स्था । सूर्या स्था । सुर्या स्था ।

सर्ह्यम्याधित्राचरात्रया विद्यूद्रासेस्याः विद्यूद्रासेस्याः विद्यूद्राचाः विद्यूद्राचः वि

महिश्यः (र्नेवः न्वानः ) दी।
इस्त हे श्रेन् खुश्यं ने प्रशुस्त्र न्यु स्त्र स्त्र न्यु स्त्र न्यु स्त्र न्यु स्त्र न्यु स्त्र स्त्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्य स्त्र स्त्र स्त्र स्त्य स्त्र स्त्य स्त्र स्त्य स्त्

हे श्रेन खुश्यावित नु प्रश्चा ने हिंगान वान विवा ने खानना क्रेत छन्। सर्द्ध न्यान ने हिंगान वान विवा ने खानना क्रेत छन्। सम् उत् श्री क्षे त्र या नहेत् । या श्री या श

क्यायरहें वा पाने के क्या वा निवासी वा निवासी के क्यायरहें वा पाने के पाने के प्राप्त के प्राप्त के पाने के प्राप्त के प्राप

यहिरामा भित्रामा वित्राचित्र वित्र मित्र स्वार्थ । वित्र स्वार्थ स्वर

न्यायाःसा व्यावः वितः न्रियायः सवेः ह्यायः ग्रीयः न्यायाः सर्वे।

५८.स्. रिवर्ष्ट्रस्य कार्स्वा सार्वे र साधिय श्री र सार्थ्य स्वास स्वास श्री सार्थिय स्वास स्वास श्री सार्थिय स्वास स्वास श्री सार्थिय स्वास स्व

इन्या इयानेयायेयाम्यानेयाग्री।

हेर येव सेव परे में र पर वश्वा ।

ह्वाश्वावदाश्चिश्वायदार्वेर्यत्वे श्वीया अधित्वत्वे श्वीया अधित्व श्वीया अधित्व श्वीया अधित्व श्वीया अधित्व श्वीया अधित श्वीया श्वीय श्वीया श्वीय श्वीय

इन्य गयानेन्द्र्यास्य वस्य विष्

इसालेशात्राष्ट्रवाधिरायर्नेना

माया हे 'दिर्देश'र्से 'श्रुस्य 'ठद' है 'इस 'ये स्राप्ते स्राप्ते हे दा ये ते स्राप्ते स्रापते स्राप्ते स्रापते स्रापते स्रापते स्राप्ते स्रापते स्रापते स्रापते स्रापते स्राप

इन्य इस्यामाङ्ग्यम् छेत्नम्॥

र्श्व के सामर्थे में के सामर्थे में के सामर्थे में के सामर्थे में किया है

रे अर्ग्यरमाउव धुम्रामायमानवा।

र्रे सळर नडराम सुन्हें न हें या

कुःषायत्रमातुःष्रमभाउद्गतुमायदेःहःस्तरःस्तरःहा । विभाग्नद्रभः कुःषायत्रमात्रम् । विभाग्नद्रभः म्रिम स्वाकार्त्र वित्र में स्वाकार्त्र स्वाकार्य स्वाकार्त्र स्वाकार स्वाकार्त्र स्वाकार्त्र स्वाकार्त्र स्वाकार्त्र स्वाकार्त्र स्वाकार स्वाकार्य स्वाकार स्वाकार स्वाकार्त्र स्वाकार स्वाक

इत्या कुं वे त्यव नकुर क्या कुं लिया। दे ते निष्ट क्या कुं वे त्यव नकुर मुद्दा । दे ते ने वे क्या के त्या कुं ते। दे ते ने वे ते त्या कुं ते।

हे ख़र जार विज्ञ श्रा दे दे है ते है ते हैं ते र जिर जिर पर प्रा र प्रा

महिश्यः दिवायः विवादश्चेषायविः ह्वायः ग्रीयः निवे त्या प्रदेश स्टः कुट् त्येव स्वे प्रवे प्रवायः विवादश्चेषायविः ह्वायः ग्रीयः प्रवे स्वायः निवे स्वायः प्रवे स्वायः विवादि स

न्दः में ( रदः क्रुनः विवेषः विवेषः

वित्रः प्रति से ने अत्यव्यव्यायः वित्रा व्यायः वित्रः प्रति स्वायः वित्रः प्रते स्वयः वित्रः स्वयः वित्रः स्वयः वित्रः स्वयः वित्रः स्वयः वित्रः स्वयः वित्रः स्वयः स्

द्राया पर्वटायास्त्र स्थाया प्रमाया स्थाया स्याया स्थाया स्याया स्थाया स्थाया

नायाने गुरु कवारा र्शेनाया थ्रदादा।

यायाने क्षे में गुर्वा कु प्रत्यू प्रति प्रति प्रति विष्ठ प्रति । विष्र प्रति । विष्ठ प्रति । विष्र

हान। वस्रयान्तर्दिन् क्रम्यायान्तर्द्धन्यायान्तर्म् । वस्रयान्तर्दिन् क्रम्यायाके कुन्यकुन्यायम् त्युम् निर्वः हेम् स्वेन त्युन्यायकुन्यायाने स्वेम्

म्या न्या न्या क्षेत्र क्षेत्

रु:वशुरःनःधेनःर्वे लेना

इन्य वर्ष्ट्रास्यमाञ्च्याक्यामान्त्राम् ।

र्ये। विद्राप्तरार्थे द्वा यद्द्वा यद्द्वा यद्द्वा यद्वा या विष्ठ व्या विष्ठ व्या विष्ठ व्या विष्ठ विद्वा यद्वा विष्ठ विद्वा विद्या विद्वा विद्वा विद्वा विद्या वि

इत्य विराधरायते हेवा विराधराय विद्या । देखे स्वया विराधराय विद्या । देखें राध्या विराध स्वयं ।

महिश्यः द्विश्वः क्ष्याश्चायः पुर्वेष्ट्वः श्वेष्ट्वः श्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेष्ट्वः स्वेष्टः स्वेषः स्वेष्टः स्वेषः स्वेष

भेवन

यायाहे से समा उदाया कवा सार्थ वा सार्थ के स्कूर मार्थ स्वा सार्थ सा

म्या """न्याक्ष्रित्त्वः कुत्रः श्रीत्रा ।

> इत्या अर्द्ध्यायन्यात्यश्चित्रः यात्रात्यात्रः वी । श्वाः कवाश्चाः देत्रः श्वाः श्वाः श्वाः । श्वाः कवाशः देत्रः श्वाः श्वाः श्वाः । स्वाः व्याः श्वाः श्वाः श्वाः ।

खेबाश्चार्यम् अस्त्र मान्यस्त्र मान्यस्त्र

নাধ্যমান বিষ্ণান্দ বিষ্ণা

प्रति क्ष्या क्

र्त्रायाके कुरावी से सामित हिनाम स्थित व्यवस्ति व्यवस्ति व्यवस्ति स्थित स्थित

इन् वा विकास

र्टे.जश्राम्यविष्यम्याम्यः हिःर्ट्रा

द्ये देव अस्त्र स्था भी क्षेत्र स्था क्षेत

इन्य यदःवियाःयाववःधिनःधिवःत्रवःवि।। इनःयरःस्यायःन्दःथ्वःय।।

## ने'नग'ने'भी'हिन'सम'ने।।

यायम्कदावश्चरम्यामःस्वासामिता।

यादाविया खुराया स्वान्त्र व्याप्त स्वान्त्र व्याप्त स्वान्त्र स्व

इन्य ग्राञ्चयश्चित्राय्य वित्रः देशः भ्रेतः है। । देन्याय व्याप्तः प्राचीत्रः भ्रेतः भ्रेतः ।

सर्द्धरश्यास्त्रस्य ने क्षित्र क्यास्त्रस्य । सर्द्धरस्य स्त्रस्य ने क्षित्र क्यास्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स् वर्षिया केश्वर्षिया क्षेत्र केषा भ्री प्रमाण केराये विष्ट्र प्रमाण केराये हिंदा केश्वर्ष के स्वर्ष के स्वर्ण के स्व

स्या इस्राध्यान्यम्याक्षात्राध्याध्याध्याध्या । ध्याध्याध्याप्य स्थान्य स्थान

क्रवाश्वाश्वर्ष्ट्रेश्वर्य

क्याश्रास्य विश्वास्थ्य क्ष्या विश्वास्थ्य विश्वस्थ्य विश्वस्थय विश्वस्थ्य विश्वस्थ्य विश्वस्थ्य विश्वस्थ्य विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्य विश्वस्थय विश्वस्य विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्थय विश्वस्थय विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्यस्य विश्वस्य व

वःसयः पः इस्या अत्यः स्वाधः स

वस्था के. धु. धुराष्ट्री स्थाया गीय।।

तर्देन् क्रम् राया अन्य विक्रम् विक्रम्

र्षेर्प्रये:धुरा

महिरामा मिळवहिर्मा विषा इ.या ट्रे.चे.चेरान्यायः दक्षमार्थः हीमा । श्राह्माहेर्श्वायं हेत् हीराद्या

मु: न्यर: भ्रेत्रा: यश्या: भ्रेता: भ्र

> इन्य प्रचास्त्र स्थित स्थित स्थित । इस्य प्रचासित स्थित स्थित ।

इन्य स्यान्यस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्य

रुषान्द्राधराष्ट्रीः भे विद्यारा

ह्याया ह्याया क्रुं से द्वाया क्रुं से द्वाया है या स्वाया ह्याया है या स्वाया है या स्वया स्वाया है या स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स

इत्य कुःयाववः द्यावे क्रियाश्वः अप्या स्त्रश्चा कुःयाववः हे शःशः द्वेयाः दश्चरः व। इत्वे ह्याः इश्रशः द्वेयाः दश्चरः व। इत्वे ह्याः इश्रशः वः व्याव्यक्षरः व।

गहिरामा गुनायग्वरामो स्वाक्षेत्रामा म्याक्षेत्रामा क्रेनाग्री स्वामा क्रेनाग्री स्वामा स्वाक्षेत्रामा क्रेनाग्री स्वामा स्वाक्षेत्रामा क्रेनाग्री स्वामा स्वाक्षेत्रामा स्वामा क्रेनाग्री स्वामा स्वा

र्ट्सिं र्र्डिवेस्यायः रेवे। इन्या देशायवायः नाते राधेवायश्वा। स्वान्त्र्याः हिन् स्वान्त्राः स्वान्त्रा । स्वान्त्राः स्वान्त्राः स्वान्त्राः स्वान्त्राः । स्वान्त्राः स्वान्त्राः स्वान्त्राः स्वान्त्राः ।

स्वाप्तस्य में स्वाप्त स्वाप्

हत्य हे स्ट्रिंग्स्टेंग्स्य स्थान्य स्था । हे स्ट्रिंग्स्य स्थान्य स्थान । हे स्ट्रिंग्स्य स्थान स्थान । हे स्ट्रिंग्स्य स्थान स्थान । हे स्ट्रिंग्स्य स्थान स्थान ।

हे ख्रिम् क्षेम् स्वाद्य स्वा

म्ना मार प्रेंन् हेन् वत्र मार भ्रे नव्या। मार त्युर व प्यार ह्या व्युर मा।

## うさらきまれるでは近り うさらきまれるでいれて近り」

इन्य र्यायाय्याय्याराक्त्रित्र्योत्रिय्

त्तुर निर्देश से वा प्राप्त के स्वा क्ष्य क्ष्य

इन्य अर्बर्यायान्य मुख्य अर्वर भिवा।

म्री मु : धे स्व : प्रति : प्

इन्य स्याद्यस्य यात्राचा हिन्न्य स्था । स्यास्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य ।

## तुषासे ५ छि र दें

माने सामा रिगुनाय मुद्दाराम वे ने

द्वर्र्यक्ष्यायः अवाश्वर्यः क्रुं वाहिवाय्यश्यादे स्वाय्यः स्वायः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्वर्यः विद्यर्थः विद्वर्यः विद्वर्यः

म्याञ्चीतः स्त्राच्यायाञ्च स्वर्षेत्रः स्वर्षा

इन्स्निन्द्रम् विष्ट्रम्

श्चेन्द्रन्कुः धेन्यान् मी श्चेन्।

श्चित्रस्य अः धुत्यः ग्रीः वितः सरः दे।।

ल्ट्रियायह्रेष्ट्राचे हिनानस्यान्य न्या

कुं सेट्रह्मानायस्सुं निः सेट्रिं भी सेट्रिं स्थित्त्र सेट्रिं सेट्रि

प्रश्निम् प्रमायहेन्द्रम् प्रमायहेन्द्रम् । प्रमायहेन्द्रम्

महिरामा विस्ववायाश्वरमा वेदी

र्दे त्यादे त्या भूगा स्वाप्त त्याय त्याय प्रस्ता स्वे त्या विष्ट त्याय क्ष्य क्ष्य

इन्ना ने ने श्रेन पर्नेन नाम श्रेन प्या । श्रेन क्षेन क्षेन स्या श्रेन प्रा नि स्या क्षेन प्या ने प्रा नि स्या श्रेन प्या ने प्रा ने

निवं मार् केत् के स्वामित्र में निवं के स्वामित्र में स्वामित्र म

त्रंतें (श्वेत्यक्तित्यक्तियः) वि। इत्या न्या हिक्क्याश्वायः श्वेत्रंत्रेत्रं श्वेत्यशा । न्ये श्वेत्यते न्यः प्रत्येश्वयः । गुव्यः स्वा हिक्यायक्त्या । ने श्वेत्रंश्वेत्यं श्वेत्रं श्वेत्यं श्वेत्यं

श्रेन्यः क्रॅंश्यः क्रवा क्रेवः क्रीः क्रयः याधेवः हो। स्टाय्वश्यः प्रदेशः श्रेन्यः क्रियः क

महिरामा दियाने महिरामा है।
श्रेत्रामा दियाने स्थित स्थाने स्थान स

स्ययःग्रीयाय्येत्यायदेःश्चित्रा वियःश्चितःग्चितः वियःश्चितःग्चितः वियःश्चितःग्चितः

यश्याया विकासम्बद्धाः विकासम्

र्ते त्यु श्वाय श्राण्य र तर्दे द्रा क्या श्वाय हु । यु श्वाय श्वीय क्या श्वाय श्वीय व्याय श्वीय श्वी

इन्य के अक्षर विश्व विश्व विश्व के विश्व

इत्य हेर्ये हेर्ने न्यून हेर्य हेय हेर्य हेर्य

इन्य द्वारायद्वा हेरास्य वर्षे निवासी

### रम्भेन्यम् ।

सुरायदायदायदाय्यायाया अद्यास्त्री, यास्त्री, यास्त्री, यास्त्राच्या याद्वित्त्रा, यास्त्री, यास्त्रा, यास्त्री, यास्त्रा, यास्त्री, यास्त्रा, यास्त्री, यास्त्रा, यास्त्री, यास्त्रा, यास्त्री, यास

इन्य यायाने क्षेप्या क्याया सर्वेदा हो न क्षेप्या यायाने क्षेप्या क्याया सर्वेदा हो न

यायाने खुर्याश्चे सामाया कवा सामाय विदाया या सर्वे हिना खुर्या खुर्याश्चे प्राप्त कवा सामाय विदाय सामाय स्थान स्यान स्थान स्थ

इन भूयासहसाक्षेत्र भुं भुं म्यून गुना पीता ॥

यहें न् श्रु अया व्या नि वहें न क्ष्या श्री श्रू र वहें ने क्ष्या अप स्था ने श्रूया अप अप श्री विष्ठ र विष्ठ

इन्य श्रेष्ट्रेश्चर्यदे कुः धेव प्यटा ।

अःमेह्न् न्याः संक्रिंश्वाः संक्रिंश्वाः स्थितः स्याः स्थितः स्याः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः स्थितः स्यतः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः स्थितः

इन्न """शेन्निन्निन्न।।

कुन्ने प्रमेन्न स्त्रिन्निन्न।

कुन्ने प्रमेन्न स्त्रिन्निन्न।

कुन्ने प्रमेन्न स्त्रिन्न स्त्रिन्न

श्रेन्याः हेन्याः हिन्याः श्रेन्याः श्रेन्यः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेयः श्रेवे श्रेवे

हन। .....भेता।

ने व्यन्त व्यन् सेन ही मन्हें।

म्ब्रुस्यः दिन्न्यः नेत्यः नेत्यः नेत्यः नेत्यः नेत्यः नित्यः नि

न्ता वह्नामान्वेनान्वेभावळन्त्रभाभावभावन्त्रम् स्थान्यम् स्थान्यम्

दर्सि (वर्ग्नामानि इस्पान नेपानि अ। वर्ग्नामानि सम्बद्धान नेपानि अप

द्रास्त्रिं दिन्ना सम्बद्ध म्या स्वर्ग म्या मिल्या के स्व

८५:म्युट्ट क्रियार्च ने है। इस्मा ने देखान्त्र न्या के स्वान्त्र क्षेत्र है।

कुःवानेग्राश्चित्रःश्चित्रःर्भे।

इस्सं मुन्यस्य स्वास्त्र स्वयः वि

वारास्टानी कुति सेवार्यायार्वे दाने देन सेवार्यायार्वे दाने सेवार्यायार्थे वारास्टानी कुति सेवार्यायार्थे वारास्टानी कुति सेवार्यायार्थे वारास्टानी कुता सेवार्ये वारास्टानी कितार्थे कित

द्येर्य्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य हेन्यात्रात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य हेन्यात्रात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

स्वित्राश्चित्रः स्वित्रः स्वतिः स्वत्रः स्वतिः स्वति

यान्यत्वानि स्वत्वादि विष्यावि द्वित्यव दिन्य स्वान्य स्वान्य

नश्याभ्री नासर्ति शुस्राक्षेत्रास्य गुनामये भ्री रास्य

कें त्रिते भूगा नश्य प्राप्त न्या विश्व क्षेत्र क्षेत

देवाराद्रभाष्ट्रेत्रभाष्ट्रेत्रभाष्ट्रेत्रभाष्ट्य

यशः हॅं द्रा ची शायत् शाय ची श्रा व्या ची श्रे द्रा ची श्रे ची ची श्रे ची ची श्रे ची श्रे ची ची श्रे ची ची श्रे ची ची श्रे ची

ने यान्याया चुर्ने अया बुद्राचा दे यर्वीया प्रवे सेया अया द्रा

नन्गासेन्दिः स्ट्रम् १३समासुः सेन्दिः स्ट्रं या विष्

५८.स्. रि.क.रवावा शहरू अवा बरावा ने ही

र्वनावश्वर्श्वराधित्राचित्रं दिन्तु नाहेर् छिराहरा विश्वाश्वर्शयः विद्वाश्वर्श्वराधित्रं छिराहर्षित्रं छिराहर् । विद्वाश्वर्षे श्वर्षे श्वर्ये श्वर्षे श्वर्षे श्वर्षे श्वर्ये श्वर्षे श्वर्ये श्वर्षे श्वर्ये श्वर्य

नेशाधीन ग्री: भेशायार इसाया पार वा कि वार प्राप्त प्राप्त स्वा कि वार कि व

त्रभूत्रः श्रीः श्रीः भाषायाय प्रत्राप्त्रः स्थितः श्रीः भ्रीः भ्

ने अन्तःसुरः रेविः क्रें वा अन्यः न्दः षा शुव्यः वादः व्यवदः न न वा अन्यः रहे अः

महिरामा दिल्यों नामके देना माना ने दी

यार वया के अरुवा हिंद् सुर से त्या वह या अर्थ स्था से देश से देश

हिन्न संदेश सुन्य हिन्न संदेश हिन्न संदेश

गशुस्रामा विन्वासेन हे स्ट्रम हस्य सार्थ से वाये हिला ने

देश्वराद्यायाः चुःर्येवाश्वराद्याः चित्रः चित्रः चित्रः विद्याः चुःर्यः विद्याः चित्रः विद्याः चुःर्यः विद्याः चुःर्यः विद्याः चित्रः चत्रः च

ने 'क्ष्र-'अर्ने न निष्ठ में वि 'क्ष्रेन अ' श्री मान क्ष्य श्री सुन मान क्ष्य श्री सुन मान क्ष्य श्री सुन अ' त्री मान क्ष्य सुन ' स्व क्ष्य श्री मान क्ष्य सुन ' स्व क्ष्य सुन ' सुन क्ष्य सुन '

गहिरामा रिगुन सिहेन श्रुन मिते स्था नेती

स्यायत्रत्याः वीयः प्रचेतः प्राप्तः स्थितः प्रचेतः प्रवेतः प्र

### गहेशमः हिंदाश्वराया

बर्या शेत्र व्याप्त व्याप्त श्रम्य व्याप्त श्रम्य व्याप्त श्रीत व्याप्त श्रम्य व्याप्त श्रम्य व्याप्त श्रम्य व्याप्त श्रम्य श्रम्य व्याप्त श्रम्य श्रम्य व्याप्त श्रम व्यापत व्यापत श्रम व्यापत व्याप

५८.स्. र वरायाक्षाक्ष्य प्रमानका नि

यायाने प्यूर्विस्यान्दर्श्यान्द्र प्यूर्यात्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थ

### इना वर्षेत्रधेरावरायायेत्रकेता।

श्र्माश्राचमानाध्वी शाचमानाश्री मामानाभागिने हिन्दि निर्मानिका के शास्त्र प्रिया प्रमानिका के स्वार्थ प्रमानिका क

### इन्य भेर्यस्त्रिर्द्राय्यम्

त्रिं र निर्देश्च र त्र्युर्श्य स्वर्धित्र। स्वार्था व्याद्य स्वर्धित्र स्वर्धित्य स्वर्धित्र स्वर्धित्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्धित्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर्येष्य स्वर

मिलेश्वा विकास क्षित्र माने स्था में स्था मे स्था में स्

रे शेर स्वाप्यस्य श्रें प्रम्यायास्य।

र्ट्टा विवादित्र द्वी यावश्य स्था से द्वी । विवादित्र के से द्वी यावश्य स्थादित्र स्थित । विवादित्र क्वी यावश्य यावित्र सित्र सित्र सित्र ।

र्शे श्री के के श्री हे श्री द्वा का श्री श्री का श्री श्री का श्री श्री का श

ग्रुस्यः विद्याः विद्

इन्त वर्देन् क्याश्चायान्य वर्षः याद्वशः याद्

বিষশ্যবাধীশ্বনের্থ হিন্দ্রবাধান্দর বিষশ্যবিধান্ত্র শার্ম বিশ্বর বিশ্বর

यदः द्वरः वीश्राध्यत्र प्रदेश प्रत्या प्रदान स्वाधित स्वाधित

इन्न श्रेन्यते श्रेन्य स्थानम्य निष्ठ । । यथा पाल्य प्रसेया त्या स्था स्था स्था । । स्था श्रेन्य श्रेन्य स्था स्था स्था ।

श्चेन् प्रते श्चेन्य प्रश्चेन्य प्रत्य प्रते प्रत्य प्रते प्रते श्चेन्य श्चेन्य प्रते श्चेन्य श्चेन्य प्रते श्चेन्य श्चेन्य

महिश्यः (वित्ववे क्ष्यः वे या महिष्यः वित्ववे क्ष्यः वे वित्ववे क्ष्यः वे वित्ववे क्ष्यः वित्ववे क्षयः वित्ववे क्ष्यः वित्ववे क्षयः वित्ववे कष्यः वित्ववे क्षयः वित्ववे वित्ववे क्षयः वित्ववे वित्वव

 क्याशाज्यावे सूर उदातु मया वा सूर पर्दे।

८८.स्.य८वी.के.अ.झ८४.स.सक.य.य.सी

र्याः नर्डे अः प्रश्नः नर्याः श्वेर्यः स्ट्रायः स्ट्रायः श्वेर्यः न्याः स्ट्रायः स्

इत्य इत्यान्यस्य भी श्राप्त स्वाप्त स

श्रेस्रशास्त्र हेशायत्रेया उत्रास्थित्।

सर्रेर्न्य, योट. चयो. यो. यट्यो. ये. यहू ये. ता सबय. ट्यो. श्रेट्स. ता सा रहे स

र्याया श्रेमशा उत्तान् । यह मार्थाया प्राया प्रमाया प्रमाया प्रमाया स्थाप स्था

यहिश्यायदें न् क्रम्यायदें न क्रम्यदें न

इत्या दे.यद्याःश्चेद्रः स्ट्रेंश्च्यः स्ट्रेंश्च्यः स्ट्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्च्यः स्ट्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्चेत्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्चेत्रः स्ट्रेंश्च

मुद्दः त्रादेश्याम्यादेशः त्रद्याः भिद्दः त्राधेतः त्रितः त्रितः विद्वः त्राधेतः त्रितः त्रिः त्रितः तिः त्रितः त

याशुस्रायाळयात्रायात्वे सूराउदानु प्रयापायात्वे प्रायायायात्वे प्रायायायायाय्यायायायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्या

इन्या गिरे खुगारे अन्यदे इन्य है।।

ने भार से सका उत्तरहें ताम भीता। ने से ना हे का कु लका वि से ता। ने का ता के का हो का से ना वि

न्यानर्डे स्राया के स्राया के स्राया है स्राय है स्राया है स्राया

इन्न म्बार्यायम्यायम्बर्यस्य

बदःवयःगविवःसळस्ययःसेःश्चेरःधिरा।

म्ब्राचि त्या के त्या

म्या श्रुट हे न्यव य के न हि र य न ।

कृतःस्टः न्यां नर्डे अप्तः रें अप्तः अप्तः अप्तः अप्तः याद्यः अप्तः अप्तः याद्यः अप्तः याद्यः याद्य

म्या यादःद्याः यहः यः क्षेत्रः संस्था ।

माशुस्रामा विद्यायहेत श्री ना विद्यायहेत स्थायहेत स्थायहेत स्थायहेत स्थायहेत स्थायहेत स्थायहेत स्यायहेत स्थायहेत स्थायहे

यात्राकृति । क्रुवाल्यायात्राकृतायात्राकृत्यायात्राकृत्याः क्ष्याः क्ष्यः क्ष्याः क्षयः क्ष्यः क्षयः क्य

यहेगान्नुः ब्रुवः डेगाः क्रुवः वित्रायः श्रम्यः श्रम्यः वित्रायः श्रम्यः वित्रायः श्रम्यः वित्रायः श्रम्यः वित्रयः । यद्यायः यद्यायः यद्यायः वित्रयः । यद्यायः यद्यायः वित्रयः वित्रयः । यद्यायः यद्यायः वित्रयः वित्

हैं। देने मान्न श्री अपे मान्य श्री द्राया श्री द्राया श्री अपे श

विया धिव रम्या सुन्य स्था सुन्य सुन्

इत्या यट्रेत्यरः श्रुत्रः स्वयः श्रुत्याः वश्रुत्यः यद्या । स्वर्त्यः श्रुत्रः स्वर्ते स्वर्ते । स्वर्तः श्रुत्रः स्वर्ते : स्वर्ते । स्वर्ते : स

ने त्यान ते स्त्रुयान स्

ने स्थान्त के व्यान्य स्थान्त व्यान्य स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

राध्यत्। शुःत्र त्यमायत्याये रहेषायायम्भ्रत्यये में त्रित्र त्रिया यववा में । र्भे वामायाम् शुर्मायम् स्ट्रिंग्स्य स्वित्र या स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र

देशन्तर्देगार्स्वाशायान्यः नित्रान्ति स्टार्सितः स्वाशास्त्र प्राप्तः प्रमानित्र स्वाधानित्र स्वाधानित्य स्वाधानित्र स्वाधानित्र स्वाधानित्र स्वाधानि

देखः अव न्यान्त्रं वि न्यान्त्रं अव न्यान्त्रं वि न्यान्त्यान्त्रं वि न्यान्त्रं वि न्यान्यान्यान्त्यान्त्यान्यान्त्रं वि न्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्य

देशक्षात्राची विद्यात्र विद्यात्य विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्र विद्यात्य व

गुनःसरः लेवः यादे । यादः वयाः योः याद्याः स्त्रे व्याः स

मशुश्रामानु र्वेश्वामित्र स्थामाने। मायाने मित्र प्रिमानित्र स्थामित्र स्था

इन्य इयान्य श्री नित्र कुरिन्दी। विक्रम्भी स्वान्य स्वा

र्वेत्र्यूर्याः क्र्यां योटाय्य्याः योटाय्याः येत्रः वित्रायाः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्र वित्रः वित्रः वित्रायां वित्रः वित नवेःभ्रेम

बर्जा र्वान्यस्य से ज्ञान्यस्य ।

इत्य श्रेन्याकित्त्र्यहित्येत्यात्।।
तेति त्याव्याव्याव्याव्याव्याः स्वाव्याव्याव्याः स्वाव्याः स्वाव्याः

बरायवराहे हु तुरायराधे द्वाराय व्यवसात ह्वा के ह्वा विद्या विद्य

चर्हेन् श्रु अन्यते श्रु म् ह्या मण्डेन् स्या चर्डेन्स श्रु माले यान स्या चर्डेन्स स्या चरेन्स स्या चर्डेन्स स्या चरेन्स स्या चर्डेन्स स्या चर्टेन्स स्या चर्डेन्स स्या चर्डेन्स स्या चर्डेन्स स्या च

इन्य नेश्वर्ट्स्वित्यः वन्ति।

यात्रश्रास्त्रास्त्रेश्चर्याः प्राचित्रात्रेश्चर्याः प्राचित्रात्रेश्चर्याः प्राचित्रात्रेश्चर्याः प्राचित्रात्रेश्चर्याः प्राचित्रः विद्याः विद्

निवासी विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विष्यक्तियां रेषायिष्ट्रम् विषयक्तियां रेषायिष्ट्रम् विषयक्तियां रेषायिष्ट्रम् विषयक्तियां रेषायिष्ट्रम् विषयक्तियां रेषायिष्ट्रम् विषयक्तियां विषयक्ति

त्रःसः र्वाच्याः वेश्वान्तः वेश्वान्यः वेश्वान्यः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्वान्तः विश्व

५८:१८ क्ष्यायस्यम् समात्त्र रेषे। इ.या यन्द्र व्ययः दे ग्रीस्थायः प्रशा

श्रमः निष्ठः विष्ठः प्रतिः निष्ठाः स्त्रिः स्त्राः स्त्रिः स्तिः स्त्रिः स्तिः स्

वाहेश्यः दियाईन्यक्ष्य नेयावाश्या श्रम्याम् श्रम्भ्या देवा स्टिन्ध्या देवा स्टिन्ध्या इन्चन र्थ्या ग्रम्या स्टिन्ध्या देवा स्टिन्ध्या हिन्स्य स्टिन्ध्या

इत्या क्षित्र क्षित्र व्या क्षेत्र क्

इट्सी क्षिर्याय स्थान स्थित स्थान स्यान स्थान स

यर्म्यक्षेत्र भिष्यत्वे स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्धः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्यः स्वर्य

५८:स्र्रिं र् बर्न्स्वस्य वि

इना ""म्बर्भिम्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्ग्यूर्

यस्य निव र्र्भे व वे प्रचुट वे वा

इत्य अधिव वुश्याय सेत् श्विर में।।

यवश शुर स्वर श्विर प्रवे सेस्र सेस्य रहेन हिंद त्य हे स्वर स्वर स्वर सेस्य स्वर सेस्य स्वर सेस्य स्वर सेस्य स्वर सेस्य सेस्य

यहिश्यः ( क्यायन् ) त्यायहिशा

र् निर्म रेशेस्य ग्री स्ट नित्र स्थान्य किया । इन्य इसम्वेश पुरायदित स्थान्य किया ।

हे क्षर पें र ने कहे व मर र ।।

ग्राच्याराष्ट्रित प्राप्त स्वित्र स्वाप्त स्वेरा स्व राज्य ग्राच्यारा देवे

यावश्वाश्वाश्वाश्वाश्वराधित्यवि देवाते । स्वर्धित्यवि स्वर्धित्य । स्वर्यत्य । स्

इन्य र्षेट्रम्थि विष्ट्रम्थित्। । यदे स्थि क्रिट्रम्य हो द्रम्य स्थित। । स्ट्रम्थित्र यदे स्थित स्ट्रम्थित। ।

देश्वित्राद्वेश्वर्ते। यात्र्यास्य विष्यं स्थान्य विष्यं स्थान्य स्था

महिमाना दे सार्त्ते न्यान्य निष्य निष्य महिमाना निष्य निष्य

इन्य क्रेयमवरक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्य

श्रेश्रश्ची प्रत्या प्रति । विष्या प्रति । विषय ।

## इन्य ह्यायायायात्री क्रियायाहिया। भारतहराञ्चयायी क्रियायहेया।

ने 'क्ष्मां पाया ते 'क्रें ते प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्र प्त प्र प्र प्र प्र प्त प्र प्र प्र प्र प्र प्त प्र प्र प्र प्र प्त

# गशुस्रामा र्वित्र वित्र म्या स्था है। इस्मा सेस्रामी स्टर्मिन स्था है।

> इन्न द्वेस्यम्यम् विश्वेस्यम्। देन्धेस्यस्यम् वुरुष्मेन्द्रम्यम्।

### ने नन्या शुराया श्रेशात्रा सेन्।।

क्रम्थार्थन्थान्त्रः स्वास्त्रः स्वस्त्रः स्वस्तः स्वस्त्रः स्वस्त्र

माहिकामा जिल्लामा स्थान स्थान

ध्रेम् भ्रे वित्र हैं भारत् । श्रेश्र भारत् श्रेश्र भारत् श्रेश्य भारत् । व्यापा के प्राप्त के श्रेष्ट के श्र

मिलेशना रिक्ष्णमिलेश्वनश्या भेती।
इस्मा पळे ना से निस्मा प्रिता प्रता निस्मा ।
स्मा पळे ना से निस्मा प्रता निस्मा ।
सम्मा ने निस्मा स्मा निस्मा ।
सम्मा ने निस्मा स्मा निस्मा ।
सम्मा ने निस्मा सम्मा ने निस्मा ।
सिन्द निस्मा सम्मा निस्मा निस्मा ।
सिन्द निस्मा सम्मा निस्मा निस्मा निस्मा ।
सिन्द निस्मा सम्मा निस्मा निस्मा निस्मा निस्मा निस्मा ।
सिन्द निस्मा सम्मा निस्मा निस

हुमा नेवि क्षेत्रान्ते क्ष्मा क्ष्मा हे स्वान्त क्ष्मा क्

यश्चार्यः विद्याश्चरः ह्वायः विद्याः विद्याः

वशुर-र्रे वे वा

इत्या यद्यातहित् कुः याठेया उत्र हित्ता। कुः त्रा यद्यायावित्र हिं याठेया उत्र हित्ता। वर्तेत्र क्यायावित्र हिं यत्र कुंत्र तु।। वर्तेत्र क्यायावित्र व्याधेता।

पर्ने न क्रम् भाषा विद्या विद्या विद्या क्षेत्र न क्षेत्र क्ष

इत्या श्रम्भार्थयाम् इत्याद्यायाम् स्ट्रिया । विवाहित्रमार्क्ष्यायाक्ष्याम् इत्याद्यायाम् । विवाहित्रमार्क्ष्यायाक्ष्याम् । विवाहित्रमार्क्ष्यामार्क्षयामार्थे । । विवाहित्रमार्क्षयामार्थे यामार्थे । ।

श्रम्भार्थन्य क्ष्र्या विष्णा क्ष्र्या क्ष्या क्ष्या क्ष्र्या क्ष्र्या क्ष्र्या क्ष्या क्

यर वहिनार्केन्य राज्य नक्षु नवे स्ट नविन पीन सवे छिन्।

मित्रेश्वर्भा क्रिक्स विकास क्रिक्स क

स्या रेगायदे से सम्बद्धिया राष्ट्रे स्था ।

> इन्य क्यान्यस्य स्थ्यायः हिन्यः स्यान्यस्य । याश्यम्यः स्थितः याव्यक्षः स्यायः स्थान्यः ।

यन्वान्दरः यद्वान्यास्य स्वतः स्व स्वतः स्व स्वतः स्व स्वतः स्व ने निवेत्त्र न्यान्य व्याप्त व्यापत व

स्वाधित्राचे स्वाधित्राच स्वाधित्राचे स्वाधित्राच स्वाधित्राचे स्वाधित्राच स्वाधित्राचे स्वाधित्राच स्वाधित्राचे स्वाधित्राच स्वाधित्र

वनायानरावश्रुरार्दे लेखा

यहेनाःश्रुः सर्मान्यरावशः स्वरः स्व

म्बुस्य क्रियास क्रिय

र्हेन स्ट्रिंग रहेन स्ट्रिंग स्ट्रिंग

वित्रः स्वर्षः स्वर्धः स्वायः स्वरं श्री स्वरं स्व स्वरं त्रा त्रे स्वरं स्वर

र्श्वेदःहेदःहेवाश्वायदेश्वेशः र्याः क्षेत्रः र्वाः स्वायः देवः स्वायः विदः स्वायः विदः स्वायः विदः स्वायः विदः यार्वेदः स्वायः यार्वेदः स्वयः स्वयः यार्वेदः स्वयः स्वयः

हेशमान्त्रवान्यस्थित्। श्रिमाळम्थाः श्रेस्थित्। स्थित्। स्थित

क्र्यास्त्रम् यात्र्यक्त्रम् । याहेत्रस्त्रम् स्त्रम् याद्यस्य स्त्रम् । स्त्रम् याद्यस्य स्त्रम् ।

हेश्याया वाहेत् सं प्रत्या यह स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वाया वाहेत् सं प्रत्या के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वया वाहेत् सं स्वया के स्वया वाहेत् सं स्वया के स

इन्त हेश्यास्य स्थान्य स्थान्

हेश्रामानहेत् संदेश्वेन्या श्री श्री स्थान्य स्थान्य

इन्य वयन्यन्वित्रः स्थानेशः हिम्। भेर्यम् ग्रम्ययम्बितः दुः भेर्यम्यम्बितः दुः स्थानेशः स्थितः

यिष्ठेश्वर्या विद्यायद्देश श्रीत्यवे स्वयः स्वयः स्वयः विद्यायिष्ठेश विद्यायदे स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः विद्यायदे स्वयः स्वयः विद्यायदे स्वयः स्वयः स्वयः विद्यायदे स्वयः स्वय

न्तः में क्ष्यः में क्षयः में क्ष्यः में क्षयः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्षयः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्ष्यः में क्षयः में क

নৰ্ব্যা

प्राचित्र विवासम्य मुन्य मुन्य विवासम्य मुन्य विवा

> इन्या र धि लेश देवे श्रुव श्रुव श्रुव । देश व नव वा व्यास्त्र स्वव श्रुव । देश द ने वे व्यो स्व स्व स्व स्व ।

नेश्वान्तिः बेशानन्तानितः श्रुना होना येत्रात्यात्र स्वान्ति । यन्ताः विश्वान्ति । यन्त्राः विश्वानि । यन्ति । यत्ति ।

यःक्रम्थःयः उत्त्रिः श्रीः श्रीः वित्रः यः देशः वित्रः यः वित्रः

देः वः यदि सः गाविषः श्रेः इस्र सः यागु वः व सः हें वः से द्र सः द्र स्याः ग्रहः वः यदे वः यदे सः यदे स्याः यदे वा यदे स्याः यदे वः यद

द्रमाग्रहेत्रप्रेत्रप्रेत्यायायत् वि स्वाप्ते प्रमाण्ये स्वाप्ते प्रमाण्ये स्वाप्ते प्रमाणि स्वाप्ते प्रमाणि स्वाप्ते प्रमाणि स्वाप्ते स्

मिलेश्वार् क्रिंग्स्य ग्राम्य में स्वार्थ स्वार्थ विश्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स

देश्वा क्यां अर्था क्यां अर्था अर्थ

पित्रभावः विद्यान्त्रभावः स्वर्यान्त्रभावः स्वर्यः स्वर्यान्त्रभावः स्वर्यान्त्रभावः स्वर्यान्त्रभावः स्वर्यान्त्यः स्वर्यः स्वयः

द्राश्चर्मित्रम् देश्यः व्यास्त्रम् विष्यः हित्रम् विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषय

इन्स्रिं क्ष्यश्वर्म्य क्ष्यश्वर्म्य क्ष्यं क्ष्यं

नन्गामी याः कमाश्रासी यन्य विना।

इन्य हेशसेन्यन्यायः क्याश्यः न्ता

चलानिते कुष्पराधित्र अधिवा।

यद्याः यद्याः स्ट्रिंस्य प्रति स्थाः वर्षः स्थाः स्था

यहिश्यः (देवाईन्याध्यः विश्वाक्ष्या विश्वाक्ष्यः विश्वाक्ष्यः विश्वाक्ष्यः विश्वाक्ष्यः विश्वाक्ष्यः विश्वाक्षयः विश्वाकष्यः विश्वाकष्यः

न्तः में क्रियाना क्षेत्र स्वापा निष्या क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्

५८.सू. र् इंश.जय.मीश.२योग.य. रेड्री

इन्या यायाने क्यायास श्रीवायक्या वा

यायाने प्रमाप्तर्याया यो पा क्षेत्रं से दाधित । धाराने । या बेता ता वित्र ता वित्र

## इन्य देन्यम् हेर्प्यक्रम् देन्य

ने त्यून निवास्त्र ने त्यून के ने त्यून के ने त्यून के त

इत्या पर्ने खुष्य श्रुव श्रुट सेट पार्च । वित्र क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व क्षेत्र प्र स्व क्षेत्र स्व स्व व व क्षेत्र स्व क्षेत्र स्व स्व क्षेत्र स्व स्व व व क्षेत्र स्व क

हिंद्रिः लेव खुव्या नद्वा दे देवा श्रायश्य श्रुव खुद्दा न सेद्रा स्था स्था हिंद्र श्रुव सेद्दा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्रा हिंद्र सेद्र सेद्र

इन्य क्याश्रास्य माश्रास्य माश्रास माश्रास्य माश्रास्य माश्रास्य माश्रास्य माश्रास्य माश्रास्य

ळणश्रामार्श्वित्तात्त्र प्रमाण्येत्र प्रमाण्येत्य प्रमाण्येत्र प्रमाण

व्यक्षः यः व्यक्षः स्त्रेत् । व्यक्षः यः व्यक्षः यः व्यक्षः स्त्रेत् ।

यन्याम्बर्धात्रेत्रं श्रे अप्तुः र्के अप्तत्रं श्रे अप्तत्रं व्याप्तात्रं या व्याप्तात्रं विष्टा व्याप्तात्रं विष्टा व्याप्तात्रं विष्टा विष्

महिरामा क्या राजा क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप सःच। क्ष्या राजा क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप

यर्वात्यःकविष्यः व्यक्तित्विष्यः विष्यः विषयः वि

नश्याग्री हेत ग्रेन प्रेन श्रेम हे त्

इन ने स्वर ति वा क्या का का का का की । वन्या यो मा का की मा का की मा की मा

वन्ताः व्यव्यायः वन्ते । यद्याः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विषयः विषयः

इन्य गयन्तेन्त्रेत्राच्या । इस्य

म्यानि स्वास्त्र स्वास्त्र

**इ**न्या .....नुःषरःनुःन्रःषद्य।

ने सूर गहेरा गवर क्रिंव से पाय

ने मिन्याहेशया कवाश न्या भेता।

यन्यात्यः बेदः क्या यहरः क्यां या बेदः यह या स्थाः वेदः यह । यह या स्थाः यह । यह या स्थाः यह । यह या स्थाः यह य

स्वानस्य में स्वान प्रत्य स्वान स्व

न्दः स्रीति । विष्यान्य विषया । नेवा याहि । निवान्य विषया । निवान्य विषय । निवान्य विषया । निवान्य विषया । निवान्य विषया । निवान्य विषय । निवाय्य । निव

८८.मू.म्यायायः रेषात्रम्यायः रेषात्रम्यः स्टास्यायः र्यात्रम्यायः रेषाः विष्ठाः स्टास्य स्टास

र्याःश्रुवाशःत्र्वात्रोःत्रात्रः यद्याः यः स्वाशः श्रुवाः वर्ष्यः श्रीः श्रुवः वर्षेत्रः श्रीः वर्षेत्रः श्रीः श्

नर्झ्स्रम्य स्थान् व्याप्त स्वाप्त स्

इन्न नन्नानिनः र्ह्वे नर्डे अन्यश्वि ।

त्याःश्रुयःश्रीःश्रेश्वाः विदःयदेश्ये स्थिःश्रेष्ठ्यः विदःयः यद्याः विदःयः यद्याः विदःयः यद्याः विदःयः यद्याः विदःयः यद्याः यद्

हन निर्मेश्यास्य स्था । हेन हेन निर्मेश्य स्था ।

ररः र्ह्वे वारः वीशः नर्ह्हेवा व्यूरः है।

श्रेवानी न्वर में त्या श्रेवाश्वर में श्रेश्वर विश्वर में स्व श्रेत्र में स्व स्व श्रेत्र में स्व स्व श्रेत्र में स्व स्व स्व स्व स्व स्व स्व

इन्य देखःक्याश्चर्यादेखारः

देशक्ष्म विद्याल्य विद्यालय व

म्या स्थायश्चित्राचित्रः श्वीत्रः स्था । याव्यायः वेयः यय्याः स्थाः स्य

यहिराम क्रियास क्षिया राज्य विद्या में प्राप्त क्षिया क्ष्या क्षिया क्ष्या क्षिया क्षया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिय क्षिय क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिया क्षिय क्षिया क्षिय क्षय क्षिय क्षय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षिय क्षेय क्षिय क्षेय क्षेय

प्रति । विद्वायम् विद्वाय

## सर्वेट.री.विष.कीट.र्शेट.श.प्रकीटा

त्रवाची न श्रुवा नश्रूवा न्या श्रूवा प्रवित् प्रवित्

धुःर्रवः ग्रीः त्र्यः भ्रीः व्यान्यः व्याव्यः व

गिरुश्यः दिवे त्यव द्यामायः विश्व इत्य स्वानस्य नश्चे दश्चे स्थ्यः स्थानित्। स्ट में श्चे से त्यु स्वा।

इत्या याडेया. हे. ते. सूया तस्या सेता । नगर स्वास ने ते स्वास उता याडेया हिस्या तस्या मिं तते सुः सेतः सम त्रया मेस प्रयाप यमे प्रते सुः होन् प्रवे सुम्

इन्य ययः केर्न्यान्यस्थः वर्षा

> द्वे त्यायान्य क्यायान्य । दे त्यायान्य त्याक्यायान्य ।

ह्यायाय्यक्रम्याय्यक्रम्याय्यक्रम्याय्यक्रम्याय्यक्रम्याय्यक्ष्याय्यक्ष्यम् व्यव्याय्यक्ष्यम् वित्रम्यव्यायक्षयम् वित्रम्यवयायक्षयम् वित्रम्यवयः वित्यम्यवयः वित्रम्यवयः वि

इत्य छिट्रस्य उव्यन्ते त्यः श्रेट्रस्य । ।

शुन्यम् उत्रः शुन्य निष्ठ । या निष्ठ या निष

र्शें श्रें में श्रें श

यिष्ठेश्वः र् र्वः र्वावाः रेयविश्वा

न्द्रभः क्ष्रियः स्वाध्यः भ्रुष्यः व्यव्यः भ्रुष्यः व्यव्यः भ्रुष्यः व्यव्यः भ्रुष्यः व्यव्यः भ्रुष्यः व्यव्यः भ्रुष्यः व्यव्यः व्यव्

त्रः सं ( वन्याः से क्याः वर्षातः ) वि। इत्या वन्याः वे त्यम् न्याः व्यानः धोवः ने।। हे सुरुने वे त्यम् यान्याः वे ति।।

यार वया मी निर्वा ने पर्ट्र प्राचार धेन प्रते क्षेत्र यह के अप का कि स्र क्ष्या निर्वा ने के प्रते प्रते प्रते क्षेत्र क्षेत्र

इन्त श्रीत्राच्यान्य विश्व श्रीत्राच्या । धिव हिन्द्र गुव श्री हेव थिया या । दिन्द्र स्वेव प्राधिव पर्दे दिन्दे । वेव परि स्टर्ग विव हे प्रदासिवा ।

श्री या निर्मा के स्वार्थ निर्मा विष्य स्वार्थ निर्मा श्री स्वार्थ निर्मा श्री स्वार्थ स्वार्

यदेः धुरा

महिराम दिनार्थित विवासी महित्र मिन स्वास स्वास त्या से त्या में देशी स्वास मिन स्वास स्वास स्वास त्या से त्या स्वास स्व

र्थेयानिक्षाने के क्ष्या विवास क्ष्या क्ष्या विवास क्ष्या क्ष्या विवास क्ष्या क्ष्या विवास क्षया विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्षया विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्षया विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्ष्या विवास क्षया विवास क्ष्या विवास क्षया विवास क्षया विवास क्षया विवास क्षया क्ष्या विवास क्षया विवास क्षय क्षया विवास क्षया विवास

इत्या चर्डेन प्यट प्येन प्रमुख कर हेन निया। वह या श्वर प्यट या यो प्या या थी। क्या या यो या या यो प्रमुख प्या यो या या थी। टे प्ये श्रिन प्यट प्यश्ची प्रमुख या प्या यो या या थी।

इन्ता निक्षः क्ष्मान्य विष्णः विष्णः

प्रति वर्षे स्वरं प्रवे पावस्य स्वरं स्वर

निष्ठेशःमः र्ष्यान्यम्यः नुर्द्धयः यात्रव्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्वात्यः स्व

ने ने स्रम्य प्यास्य स्वर्धिय हो । ने स्रम्य प्यास स्वर्धिय स्वर्धिय ।

द्यादर्वेर् सन् नित्वा क्ष्यात्र स्वादेश्य स्वाद्यात्र स्वाद्यात्र स्वाद्य स्

इत्य धर्म्य स्थान्य स्थान्य स्था । व्यवस्थान्य स्थान्य स्थान्

शुत्यावाद्याः प्यद्याः स्वाव्याः व्याव्याः व्याव्यः व्याव्याः व्य

इन्य श्रुविस्त्रेन्ध्ययः उत्रः कवाश्यः प्रदा

श्चन हो न स्थान स्

इत्या तर्वे न्यदरने उत्यक्ति न्या वर्षे न्यदर ने ज्ञान वर्षे न्यदर ने ज्ञान वर्षे न्यदर ने ज्ञान वर्षे न्यदर ने ज्ञान वर्षे न्यद्य ने प्रति ने निक्ष क्षेत्र निक्ष क्षेत्

न्दे हो न्या संकेश क्या वाराय प्या प्रत्य क्या स्वा वाराय प्या प्रत्य क्या वाराय वारा

इन्न न्दे न्नि न्नि न्या व्यवस्थ क्षेत्र । देर-नेवे क्षेत्र व्यव्यक्ष न्या व्यव्यक्षेत् ।

म्रुअ'रा दिनदः श्वां शः श्रुवः उवः दुः सर्वेदः नः उसः श्री शःदेः त्यः बेवः यः श्वेवाः यः त्यः सर्देवः श्रुसः श्रीः नश्यः नः

नश्रवःयः रेयः पहिना

भूत्र अर्घर नार्ध्य वित्र पार्थ्य वित्र पार्य वित्र पार्थ्य वित्र पार्य वित्र पार्थ्य वित्र पार्थ्य वित्र पार्य वित्र वित्र पार्य वित्य

करायाकम्यासर्केशाउद्या करायास्रवरम् विमानुःहेशासासर्वर नशाहित्यहेम् विरादित्यत्यास्य करायास्य करायास्य विमानुःहेशासर्थित्य यथा हित्यत्ये विद्यास्य स्थित्य स्थित्य स्थित्य

ने स्वराद्या के त्या स्वराय के त्या के त्या स्वराय के त्या के

नन्गामी नर वेद सं भेर सं हेर

महिरामा क्रियामा प्रमान क्रियामा प्रमान क्रियामा क्रयामा क्रियामा क्रयाम क्रियामा क

इन्न ग्विन्धर्धिन्धेन्धिन्दिन्। र्श्वे प्रक्रियाश्राक्ष्यश्याश्रीत्रः प्रक्रित्। । ग्विन्ध्यारित्रः प्रक्षित्। प्रक्षि

इना नेशवने कुमर्वेन सेन उना

## नश्चनश्राम्याने त्याहे सूराम्बित्।

यद्याः यो निष्ट्रमाः त्र स्थाः यो स्थाः त्र स्थाः स्थाः त्र स्थाः स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः स्थाः त्र स्थाः स्थाः स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः त्र स्थाः स्थाः स्थाः स्थाः

पित्रमा क्षित्रामा क्षित्रमा क्षित्

त्रासी ( क्राचित्र क्र मुक्ष म्याम क्राच्य क्

इत्या अर्क्ष्यामान्दर्भेद्रान्त्रमा ।

श्री त्रिमार्श्वे रुद्धिमा ।

श्री त्रिमार्श्वे रुद्धिमा ।

श्री त्रिमार्श्वे रुद्धिमा ।

क्याश्रास्त्रीत्राचियाःक्षेत्रस्य स्वाधाःयः । । क्याश्रास्त्री ।

इत्य रक्षम्यत्यस्य स्थान्य । इत्य रक्षम्य स्थान्य ।

क्रम्या म्यान्त्रिम् भूम्याम्य विष्यः स्थ्रिम् भूम्याः म्यान्य विष्यः स्थ्रिम् भूम्याः म्यान्य विष्यः स्थ्रिम् भूम्य स्था विष्यः स्थ्रिम् स्थ्रिम स्थ्रिम् स्थिम् स्थ्रिम् स्थिम् स्थिम् स्थ्रिम् स्थ्रिम् स्थ्रिम् स्थ्रिम् स्थ्यम् स्थ्रिम् स्थिम् स्थ्रिम् स्थ्रिम् स्थ्रिम् स्थिम् स्थ्रिम् स्

क्याश्चर्यात्रीयः द्वीयः त्वीयः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चर्याः स्वर्याश्चरः स्वर्याशः स्वरं स्वरं

इत्य विश्वर्श्वयात्रस्य कुष्ठ अधिया । देवे दे अद्याद्य स्वाप्य स्वाप्

बेन्द्रम् हेन्द्रे क्षेत्रं क

माशुस्राया किन्न्या के स्टान्न्य के स्थान क्रिया किन्न्य के स्थान क्रिया के स्थान क्रिया के स्थान क्रिया क्रया क्रिया क्

यालश्चाल्य व्यान्त क्ष्य क्ष्

याश्वस्यः र्ष्यान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः र्याश्वस्यः र्याश्वस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्वान्यस्यः स्

इत्या पर् छेर स्वानस्य प्राप्त । स्वानस्य निस्त्र स्वानस्य प्राप्त स्वानस्य प्राप्त स्वानस्य प्राप्त स्वानस्य प्राप्त स्वानस्य स

श्चेत्रा स्वाप्त्य स्वाप्त्र स्वाप्त्य स्वाप्त्र स्वाप्त्य स्वाप्

इन्या ने वे नियम्या से निष्ठा है ने प्रेस क्षा से निष्य से साम के साम के से निष्य से साम के सिष्य से सिष्य से साम के सिष्य से साम के सिष्य से सिष्य सिष्य से सिष्य सिष्य सिष्य सिष्य सिष्य सिष्य सिष्य

र्श्वां व्याप्त विष्य स्थान विषय स्थान स्

इन्त हैंदिहेद्धान्य में यान्य प्रमा । इन्त हैंदिहेद्धान्य में किया

क्र्या ने श्री र श्री ह्या यश क्र्या नक्ष्य ।

देश्वान्त्रविद्धान्त्यविद्धान्तिवद्धान्त्वयत्ववद्धान्त्वयत्ववद्धान्त्वयत्त्वयत्ववद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्त्वविद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्यविद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्यविद्धान्तिवद्यान्तिवद्धान्तिवद्धान्तिवद्धान्तिविद्धान्यविद्धान्तिवद्यान्तिवद्धान्तिवद्धान्यत

स्त्री विश्वाश्यक्षा

श्र-ग्रम्भी निर्म्य विकास स्था निर्म्य स्थान स्

यश्चान्दः हें त्र सिन्धान्य वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र प्राप्तः स्वर् । वित्र प्रा

हैं स्थायात्र्वायात्रहेवायात्री । हें दार्से द्यायायात्रायात्राची यायायीत् । दे त्यत्राय्ये स्थायात्रायात्रायात्रायात्रायात्रायाः

> इन्न नन्नानिः हेन्दिः शेष्ट्रा । ने प्येष्ट्रा न्यानिः हेन्द्रा । ज्ञान्द्रा प्येष्ट्रा श्री न्यान्या । ने के ने प्येष्ट्रा प्याप्ट्रा शेन्। ।

म्शुस्यः दिश्वत्वेषः श्वाद्याः विश्वत्यः विश्

बर्या क्रिया स्ट्रिया स्ट्रिय

मिलेश्वानी स्वान्ध्य स्वान्य स्वान्ध्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वान्य स्वत

५८.सू. १ रवट विधान्त्र अस्तर वर वश्चर वर क्षेत्र वर क्

श्च-य्याम्य व्यास्य व

इन्य इरक्षित्रन्यास्थ्रियापरस्थित्।

स्वायान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वयान्य स्वया । स्वयान्य स्वयाय स्यय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय

निः निवितः नुः श्चे वाश्चे नाः से सार्था स्थानि से सार्था से वाश्चे स्थानि से सार्था से वाश्चे सार्थी से वाश्चे से वा

यहिश्यः प्रित्ति पर्वेत् सेत्यः प्रेयः प्रेयः प्रेयः प्रेयः प्रेयः सेत्यः प्रेयः सेत्यः सेत्

न्तः में क्षित्र व्याचिक्य प्रत्ये के स्थान के क्ष्य के स्थान के कि स्थान के

श्वाप्तश्वाप्यायने प्रमादित्य विष्यापि । वेष्य श्वाप्ति । वेष्य श्वापति । विषय । विष

वर्षा न्यान्त्री क्ष्या क्ष्य

इन्न ने रंग केन क्षा क्षेत्र क्षेत्र । क्षेत्र ने निया केन क्षा क्षेत्र विकास

सन् अस्तर्भः कुः द्वस्य स्टा देन ।

गहिरामा दिवः व्यवः नगमानः वेदी।
इस्ता वर्ते प्रमानिकः हित् होत् प्राधिता।
देवे सामिकः विकास सम्मानाः विदेश

## यः अर्बेट विवा श्रेर वर्षे न ये ।

हीरा प्राप्त स्त्रीर हिंग राष्ट्र क्षेत्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्री स्त्र स्त्

इन्न नेशवन्द्र होत्र सेससम्बद्धा

त्री त्राप्त स्वत्र स्वा स्वत्र स्वा स्वत्र स्वा स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत् स्

र्षेर्पर सदे श्रेम

गशुस्रामः (विमानायाम् विद्यास्त्र ) त्यामशुस्रा नगरमञ्जूमः श्रीसः प्षेतः र्ह्विति तुस्रामा वर्षे स्वास्त्र विद्यास्त्र स्वास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र स्वास्त्र विद्यास्त्र स्वास्त्र विद्यास्त्र स्वास्त्र स्वास्

५८.सू. ( र्वट्वश्चरक्तिम्ब्राच्छेश्वर्वित्वश्वर्वा ) है।
इ.या यायाहे हे त्या व्या क्ष्या श्वर्वा यायाहे स्वा यायाहे स्वा यायाहे हे त्या यायाहे त्या यायाहे स्वा यायाहे स्व यायाहे स्व

इत्य द्वरःश्रिष्यः श्रुष्यः श्राच्याः देः द्वा । श्रेष्यश्चादेः द्वरः वीशः वहें वः द्वः वह्वा । वाधेरः द्वः वर्षे वाः श्रेष्यः श्रुष्यः ।

द्वर्वित्रास्तर्भे स्ट्वित्रास्तर्भे अत्यादे द्वा वाल्या वाल्या व्याद्व स्वर्वित्र स्वर्वे व्याद्व स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वर्वे स्वरं स्

ठे से भे ने न ने ते के ते से न प्रते के प्रति म नि म न से प्रति के प्रति म न से प्रति के प्र

इन्य राज्यस्ययाग्रीक्षि।

मळ्ममार्श्वे र .....

न्वर्ग्नुर्विन्यः विक्रियः विक्रि

इना """दे द्वस्य तुय से द्वा

ने 'क्राया में प्राया प्राया सक्या में प्राया प्राय प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राय प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया प्राया

इत्या याश्चर्यः श्वर्यः व्याप्तः श्वर्या । याद्येयः वत्याचान्यः स्त्राचाः श्वर्याः व्याप्तः स्त्रीयः प्रत्येयः प्रत्येयः प्रत्येयः प्रत्येयः स्त्रीयः । द्याः स्त्राच्याः व्याप्तः स्त्रीयः प्रत्येयः स्त्रीयः । व्याप्तः स्त्रीयः प्रत्येयः स्त्रीयः । प्रत्यः स्त्रीयः प्रत्येयः स्त्रीयः । प्तरावश्चरः विवास वार्श्वर प्राप्त से निर्मा क्षेत्र प्राप्त से निर्मा क्षेत्र प्राप्त से निर्मा क्षेत्र से निर्मा क्षे

माशुस्याम् विन्यास्यामधेन विन्यास्यामधेन विन्यास्यामधेन विन्यास्यामधेन विन्यास्यामधेन विन्यास्यास्य विन्यास्यास्य विन्यास्यास्य विन्यास्य विव्यास्य वित्य विव्यास्य विव्यास्य विव्यास्य विव्यास्य विव्यास्य विव्यास्य व

इत्य ह्यायाक्ष्यायायेत्यविष्ठित्। देशा श्री अप्रभेत्यायः श्रीत्यायः वित्यायः श्रीत्यायः श्रीत्यायः वित्यायः वि

कुं न्दरवाश्यानुवर वादेवा धरावकुर।

प्राच्या प्राच्या क्ष्या स्वर्ध स्वर्य स्वर

इन्न नेन्नानेन्यसम्बन्तन्त्र।

इत्य म्बर्ग्येश्वर्त्तर्भात्र्य म्बर्ग्यं म्बर्यं म्बर्ग्यं म्बर्ग्यं म्बर्यं म्बर्ग्यं म्बर्यं म्वयं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्बर्यं म्वयं म

याशुस्रामा दिन्नासेन्ह्निसम्बद्धिसम्मर्वस्थिसम्मर्वस्थिसम्मर्वस्थिसम्मर्वस्थिसम्मर्वस्थितसम्भवस्यः वेद्वी

इत्य यहेवत्यत्वित्यत्यहेवत्यत्ता । यहेत्त्रत्त्रत्यत्येवत्यत्वेत्यत्यत्या । यहत्यात्येवत्यत्वेत्यत्यत्यत्वेत्या । र्श्वेत्त्रय्याय्येत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्याः

> इन्न ने हेन त्यं है से त्याय ने ह्या । ने हेन इस महें से हैं नास उदा।

येग्रथः नर्श्वस्थयः प्यतः न्याः भः नः धेरा । सेन्यः हे अय्याद्याः चरुषः वहें स्रयः हेन्।

यदेवायायविः संदिक्ष्यायाध्येवाधे विष्णाने प्रत्यायायाय दे दिवा शे ह्या स्वाया स्वया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वय

इत्या स्थान्त्रश्यान्याम्ययः व्याप्ता । याद्याः योद्याः योद्याः याद्याः याद्य

न्यानर्डे अप्तार्क्ष अरु । या अरु निर्माणित अरु निर्माणित अरु । या उत्ति स्वार्म । या उत

८८.सू. १५०० व्ययः १५४ व्ययः १५५ व्ययः १५ व्यय श्रेन्यायशर्मेवायम्यक्रम्हे। श्रेम्यास्यायायम्यस्य नेशन यश्या सुरायन विवा वी वाहेन में निष्ट्रेन पर सेवारा र्शे विन्ता

> इन्य वर्षान्यः स्थान्यः श्रीतः भ्रीतः नि गहेन में नगने से न है मन्न। व्यायेन्धिरार्रेश्चेन्यावै।। ल्रिन्त्रः श्रूरः यदः वर्त्वदः श्रीरः देशि

श्रेद्रायासास्य सम्यास्य सम्यास्य स्वास्य स्वा यशस्त्रश्रम्हरमञ्जूरायदेगाहेवार्रात्वाये प्राप्ते स्वीत्राप्ता सेताया श्रूरमायराने प्रवास्त्र स्थार श्रूरायदे त्याया से प्रायति श्रीया ने सामया से प्र मर्पित्वाक्षरायदायमात्रात्रे त्यमासुमाद्युदानवे स्रीत्र

मिंदेशमा हिंदा में या मिंद्रा यशःश्रेन्यिक्षामायद्विष्यायियाक्षेत्रः संभिन्यस्त्रः स्थानश्रेतः सः न्वावार्यं न्द्रा न्यादः श्रुवः ग्रीश्रात्यश्राग्रीः त्रुश्रायः वर्देशः विदः बन् स्य स्त्रीनः रान्वावाया यश्चेन् श्चर ग्चर सक्र रशरान्वावा सर्वे।

५८.स. १ त्यश्रास्त्रीट्री व्यक्षास्त्रीट्री व्यक्षास्त्रीत्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्री विश्वस्त्रास्त्री विश्वस्त्री विश्वस्ति वि इन्य गहेश्वराद्वर्त्त्र्राद्वर्त्वराष्टा।

ने १ सु व स्वर्था श्रेन्य प्रिक्ष मा श्रे श्रेन्य व स्वर्थ है न स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

इन्य हें वर्से द्रान्ट्रिय महिमानी स्रासे सहि।

भ्रात्वत्यावात्याः श्रीत्राधात्यात्र प्रात्तात्र प्रात्तात्र प्रात्तात्र प्रात्तात्र प्रात्ते प्रात्तात्र प्रात्ते प्राते प्रात्ते प्रात्ते प्रात्ते प्रात्ते प्रात्ते प्रात्ते प्राते

शुरुवाश्वायश्वाय हो । स्वाय हो त्राय हो त्राय हो त्राय हो त्र व्याय हो त्याय हो त्र व्याय हो त्याय हो त्याय

स्य इस त्या स्थ त्या स्य स्थ त्या स्य स्थ त्या स्थ त्या स्थ त्या स्य स्थ त्या स्थ त्या स्थ त्या स्थ त्या स्थ त्या स्थ त्या स्थ त

न्यादः श्रुम्।

प्रथा न्यादः श्रुम् अर्थः श्रुम अर्यः श्रुम अर्यः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्यः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्यः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्थः श्रुम अर्यः श्रु

न्ति अस्ति क्षित्व क्षेत्र व्याप्त व्याप्त क्षेत्र व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत्य व्यापत्त व्यापत्त व्यापत्त व्यापत्त व्यापत्त व्यापत्त व्यापत्य व्यापत्य व

বা

यायाने द्राया श्रुवा ने शासुका या द्राया नि स्तुवा नि स्तुवा स्त

यियान् स्वाकान्त्र विश्व विश्

इत्य श्रुट्य अत्य व्याप्त स्था । याट प्यट श्रुव इसस्य प्रत्ये या श्रुव स्था । इस्य श्रुव स्था प्रत्ये या श्रुव स्था ।

यहरते। सर्द्रमान् स्रीत्राचन स्रीत्राचन स्राचित्र स्राचन स्रीत्र स्रीत्र स्राचन स्रीत्र स

इन हे क्षेत्र विश्वास क्षेत्र श्रास्तर वर्षीत्।

षर से द दें।

णरावाण्विराश्चाय्याः व्याप्ताः व्यापतः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्यापतः व्याप्ताः व्यापतः व्यापतः

म्बिट्ट म्हा स्वास्त्र स्वाह स्वाह

म्राज्यामा क्रियामा क्रियामा स्थान स्थान

इन्य यमायमाहेमामामाधेदाहे॥

श्चित्रः स्वाचित्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः वर्षेत्रः ।

श्री नर्ज्ञित्रास्त्रेत्रायस्य स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

यश्यश्चर् न्या विक्रम् । यह विक्रम्या । यह विक्रम् । यह

इन्य व्यान्त्रिः इसः ह्रियाः सेन्यः स्त्री। यने यात्रास्त्रेत्यः सेन्यः स्त्री।

त्वा नर्डे अ या के अ उठ्या निर्माण अ व्या निर्माण अ विष्म मे निर्माण

र्देन् नश्रुश्वा देन्याश्चित्रायश्चार्यायश्चित्रायश्चार्याः श्चित्रायश्चित्रयश्चयः स्वत्यस्यस्यत्रयश्चित्रयश्चित्रयश्चयः स्वत्य

यहिराम्यान्ते मिन्याम्य प्रेत्। इत्य श्रीताम्य प्रेति प्रमान्य प्रेति ।

## यानेवार्याः ह्वार्यायात्रे वित्राधितः व्यान्या

मुन्नः नर्डे अप्युक्तः त्रम् के स्था के स्था

ख्वाश्रः व्यानि अन्य प्यत्ते स्वतः व्यानि व्यान्य प्रतः श्रुक्ति व्यान्य प्रतः श्रुक्ता व्यान्य स्वयः स

왕지 국명·원조·원·주의·기 [ ]

माशुस्रामा दिल्यसः हें द्वान्यत्व विद्याः विद

> निवं मि दिःयमानहे निव्यम्य प्रेती इन्ति दे समानहे स्थेत ....

यहे न श्रेट हे के त्रें श्रें त नु श्रेट न श्रें द न श्

न्त्रेंश्या के प्या के प्या के प्या के प्रा के प्र के प्

इना "णवनर्नेनर्नेन।

र्नेन शुन सहन प्रासि पर्ने र धिरा।

श्रुट्ट ग्रीस्थायास्य स्टित प्रियः प्रत्य प्रत्य स्टित ग्री स्टित

यद्वितः परिः भेषाः र्क्षिणः रहेषाः वर्षः यद्वितः यद्वतः यद्वितः यद्वतः यद्वितः यद्वतः यद्

धेरा

म्या ने मश्चर्यस्य अर्देन श्चित्र म्या ।

गहिरायां ने त्या के न्या के न

त्र्वाः संविध्यः विश्वः विषयः विश्वः विश्वः

नश्रुवःर्ने॥

> इत्य हेश्यः श्रुत्यवाः यायः यक्ति । इतः वतः क्षे प्रति यत्वा कितः वत्रा । विश्वा श्री प्रति यत्वा वाः कित्रः वत् । विश्वा श्री प्रति यत्वा वाः कित्रः विश्वा । विश्वा श्री प्रति यत्वा याः विश्वा । विश्वा श्री प्रति यत्वा याः विश्वा । विश्वा श्री प्रति यत्वा याः याः विश्वा ।

## सेन्द्र से प्रमुद्ध सक्त हैन् उत्। । ह्या अ दे हे अ न्या हेत धेत दें। ।

## इत्य नश्चनः च्यान्यः व्यान्यः व्यायः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः वयः

नश्चनः न्यातः क्ष्यात्र न्यातः स्त्रीत् । ये अन्यः स्त्रीत् न्यात्र स्त्रीत् न्यात्र स्त्रीत् । ये अन्यः स्त्रीतः स्

स्तिः र्क्ष अप्याप्ता ने स्वाप्ति स्वा

स्वान्त्र स्वान

यान्त्रत्वेद्देश्यम् विन्यान्त्र्याक्ष्यात् स्थान्त्र्याः स्वान्त्रः स्थान्त्रः स्थान्तः स्थान्यः स्थान्तः स्थान्तः

क्रम् स्थाप्योषायी। क्रम् यायाप्य स्थाप्य स्य स्थाप्य स्थाप स्थाप्य स

दिशाग्रद्धान्यत्वे त्रम्भूष्यः स्त्रे स्त्र

धेगार्वे र-५८:ळ५ खूगार्थे ५ के प्रचेषायाग्वर व ५ ग्वापः श्वेंदे ८८ व साम है सातु केंग

ราฐาราธุรา marjamson618@gmail.com